दुनिया के सर्वहारा तथा तमाम
मेहनतकश जनता और उत्पीड़ित
राष्ट्रीयताओं की जनता एक हो!

लाल चिनगारी

वर्ष–13 शहादत विशेषांक, 2017

अमर शहीद
कामरेड चारू मजुमदार

अमर शहीद
कामरेड कन्हाई चटर्जी

मुखपत्र

बिहार–झारखण्ड
स्पेशल एरिया कमेटी
भाकपा (माओवादी)

ओ मेरे प्यारे वीर शहीदों

ओ मेरे प्यारे शहीदों
ओ मेरे वीर शहीदों
आज फिर तुझे याद कर
भर आयी है मेरी आंखें
सिहर उठा है पूरा शरीर
कांप रही है कलम चलाती हाथ
फिर भी,
लिख रहा हूं तेरी याद में कविता।

याद आता है तेरा
हंसता-मुस्कराता चेहरा
दुश्मनों के खिलाफ
नफरत भरा तेरा चेहरा
अपने लक्ष्य के प्रति
दृढ़ता से भरा तेरा चेहरा
गद्दारों के प्रति
घोर घृणा से भरा तेरा चेहरा
अपने साथियों व जनता के प्रति
प्रेम व सम्मान से भरा तेरा चेहरा
जनता पर हो रहे जुल्म के खिलाफ
गुस्से से तमतमाया हुआ तेरा चेहरा
साथियों के शहादत के बाद
दुश्मन से बदला लेने को संकल्पित तेरा चेहरा।

तेरा चेहरा कभी भी मेरी याद से
मिटाया नहीं जा सकता
और सिर्फ मेरी याद से ही नहीं
करोड़ों-करोड़ जनता की याद से भी
कभी नहीं मिटेगा तेरा चेहरा
क्योंकि तेरी यादें
जुड़ी है जनता की जिन्दगी से
एक तरफ जब आज पूरी दुनिया में
लोगों को बनाया जा रहा है
लोभी, आत्मकेन्द्रित व स्वार्थी
उन्हें सिखाया जा रहा है
व्यक्तिगत पूंजी की जरूरतें
उन्हें बताया जा रहा है
बेच दो अपनी जमीर
और बिताओ सुखमय जीवन।

ठीक ऐसे ही समय में
मेरे प्यारे वीर शहीदों
तूने मार दी थी ठोकर
व्यक्तिगत स्वार्थ व चमकदार कैरियर को
तूने छोड़ दिया था
अपना घर-परिवार, माता-पिता
भाई-बहन, पत्नी व बच्चे को
तूने नहीं कबूला
दुश्मनों का तोहफा
तूने तो की थी बात
एक शोषणरहित समाज की
व्यक्तिगत पूंजी के खात्मे की
आम जनता के
इज्जत, अधिकार व सच्ची आजादी की
तुम खड़े रहे आम जनता के पक्ष में
अटल, अडिग, निःस्वार्थ व दृढ़
तुमने सहे दुश्मनों के बर्बर टॉर्चर
तुमने खायी दुश्मनों की गोलियां
और बन गए महान शहीद
बस गए जनता व साथियों के दिलों में
उनके दिलों से तुझे कोई
नहीं कर सकता है जुदा।

आज जब तेरे साथी
लड़ रहे हैं दीर्घकालीन लोकयुद्ध
तेरे अधूरे सपने को पूरा करने के खातिर
आम जनता की मुक्ति के खातिर
तब तेरी शहादत
कर रही है उनका पथ आलोकित
तेरी शहादत कर रही है उनको संकल्पित
तेरी शहादत बढ़ा रही है उनका हौसला
और तेरे साथी बढ़े हुए हौसलों के साथ
टकरा रहे हैं दुश्मनों की हत्यारी ताकतों से।

ओ मेरे प्यारे वीर शहीदों
तेरे शरीर से बहे
एक-एक बूंद खून की कसम
तेरे साथी करेंगे तेरा अनुसरण
तेरे साथी भी नहीं हटेंगे पीछे
वे देते रहेंगे शहादत तब तक
जब तक जमींदोज ना हो जाए
ये शोषणदायी व क्रूर व्यवस्था
और बन ना जाए
एक शोषणरहित व खुशहाल व्यवस्था।।

लाल चिनगारी

वर्ष- 13
शहादत विशेषांक, 2017

विषय सूचीः

1. संपादकीय ... 1
2. शहीदों को श्रद्धांजलि ... 6
3. ऐ लाल फरेरे तेरी कसम 11
4. ऐसी है हमारी गुरिल्ला (कविता) ... 33
5. शहादत दिवस पर इआरबी का आह्वान ... 34
6. शहादत दिवस के अवसर पर बीजे सैक द्वारा जारी पर्चा ... 38
7. शहीद कामरेडों की तस्वीरें ... 40
8. बीजे सैक में शहीद हुए कामरेडों की सुची ... 42

सहयोग राशि - 20 रूपये

सम्पादकीय

शहीदी सप्ताह का आह्वानः

शहीदों के आत्मत्याग की उज्ज्वल मिसाल को कभी न भूलें, शहीदों के दिखाए हुए मार्ग कभी न त्यागें, हजारों बाधा व कठिनाइयों को पार करते हुए अंतिम विजय तक क्रांति के पथ पर अडिग रहें!

(शहीदी दिवस व शहीदी सप्ताह के अवसर पर पूर्वी रीजनल ब्यूरो द्वारा प्रकाशित व प्रचारित इस लेख के महत्व को देखते हुए इसे 28 जुलाई शहादत विशेषांक का सम्पादकीय लेख के बतौर प्रकाशित किया जा रहा है। -सम्पादकमण्डल, लाल चिनगारी)

देखते-देखते आ गयी 2017 की 28 जुलाई। सीपीआई (माओवादी) द्वारा मनाए जानेवाला शहादत दिवस। पिछले कई वर्षों से इस शहीदी दिवस को 28 जुलाई से 3 अगस्त तक यानी एक सप्ताह भर मनाया जा रहा है। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी महान शहीदों के करोड़ों-करोड़ जनता के लिए निःस्वार्थ आत्मबलिदानों की गौरवगाथा से हम प्रेरणा लेंगे। इस गौरवगाथा को तहेदिल से संजोए रखते हुए सही मायने की राजनीतिक-आर्थिक मुक्ति प्राप्त करने के महान लक्ष्य पर आगे बढ़ेंगे तथा बढ़ते ही रहेंगे।

क्यों शहीदों के आत्मबलिदान महान हैं? क्योंकि वे, जो प्राण हर आदमी के लिए सबसे प्रिय होता है, उस प्राण को ही किसी संकीर्ण स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि आम जनता के हित के लिए न्योछावर किए हैं; जनता पर जबरन थोपा गया साम्राज्यवादी-सामंतवादी-दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों की लूटेरी व अत्याचारी व्यवस्था तथा इस व्यवस्था को टिकाए रखने के लिए दलाल शासक वर्ग की क्रूर शासन-प्रणाली को खत्म कर, जनता की जनवादी व्यवस्था स्थापित करने के लिए किए हैं; साम्राज्यवादी अप्रत्यक्ष शासन, शोषण व नियंत्रण से सही आजादी की प्राप्ति के लिए तथा देशी-विदेशी विशाल-विशाल कॉरपोरेट संस्थाओं की लूट-खसोट को हमेशा-हमेशा के लिए खत्म करने के लिए किए हैं।

क्या परजीवी साम्राज्यवादी-सामंतवादी जकड़न व शृंखल से प्रिय मातृभूमि भारत को आजाद करने के लिए प्राणों की आहुति देना सर्वश्रेष्ठ आत्मबलिदानी नहीं है? क्या मजदूर-किसान-मेहनतकश जनता के लिए, समाज के लिए तथा देश के हित के लिए प्राणों को न्योछावर करना सबसे महान बलिदानी नहीं है? क्या जनता की अर्थनीति, जनता की राजनीति, जनता की संस्कृति तथा जनता की राजनीतिक शासन-प्रणाली की स्थापना के लिए प्राणों को बलिदान करना सर्वश्रेष्ठ आत्मबलिदानों का सबसे उज्ज्वल व महान मिसाल नहीं है? अवश्य-ही ये तमाम बलिदानी दुनिया के सबसे महान बलिदानों के अभिन्न

अंश के बिना और कुछ नहीं हो सकती है।

पर, हर मृत्यु एक-ही प्रकार की नहीं होती है। हकीकत में मृत्यु दो प्रकार की होती है: पहला, जो लोग आम जनता के लिए जीवन बलिदान दिए हैं और दूसरा, जो लोग मुट्ठीभर शोषक-शासकों के हित के लिए मरते हैं। पहले प्रकार की मृत्यु सबसे महत्व व वजनदार तथा अंतर्वस्तु में बहुत उत्कृष्ट गुणों से लैस होती है; दूसरे प्रकार की मृत्यु छोटी-छोटी चिड़ियां के पंख जैसा बिल्कुल हल्की होती है। इस लिहाज से कहा जा सकता है कि जनता के लिए प्राणों की आहुति देना एक महान मृत्यु है और लूटेरा शोषक-शासकों के लिए मृत्यु एक महत्वहीन व तुच्छ मृत्यु है।

जाहिर है कि जनता, समाज व देश के लिए अपने प्राणों की आहुति देना सबसे महान मृत्यु होते हैं और ऐसे निःस्वार्थ बलिदानों से हम प्रेरणा पाते हैं और जो देशी-विदेशी शोषक-शासकों के लिए, प्रतिक्रियावादी व फासीवादियों के लिए दलाली कर तथा किराए की सेना की भूमिका अदा कर मर जाते या मारे जाते हैं, इतिहास में उसे महत्वहीन व तुच्छ मृत्यु के बतौर चिन्हित किया गया है।

हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी) ने देश की सही आजादी के लिए प्राणों की बलिदानी दिए हुए उन वीर व महान शहीदों के आत्म-बलिदानी की गौरवमयी परम्परा को विरासत में प्राप्त की है व उन महान शहीदों के सपने को संजोए हुई है और उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने के पथ पर दृढ़कदम से अग्रसर है।

कैसे हम अनगिनत शहीदों के अधूरे कार्यों को पूरा कर सकते हैं? हां, उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए हमारे पास कारगर कार्यक्रम मौजूद है। जिसको कार्यान्वित कर पाने से हम आजाद भारत या मुक्त भारत का निर्माण कर सकते हैं तथा जनता की अर्थनीति, जनता की राजनीति व जनता की संस्कृति से लैस जनता की जनवादी व्यवस्था तथा जनता का राजनीतिक शासनवाला राज की स्थापना कर सकते हैं। क्यों हम जनता की राजनीति-अर्थनीति-संस्कृति की स्थापना की बात कहते हैं? क्योंकि मौजूदा भारत में, हकीकत में, जनता के लिए कोई भी अधिकार, यूं कहिए कि आर्थिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक अपनी भाषा-शिक्षा व सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने का अधिकार कुछ भी प्राप्त नहीं है। क्यों ऐसा है? कारण यह है कि तथाकथित आजादी के पहले भारत ब्रिटिश उपनिवेशवादियों का प्रत्यक्ष शोषण-शासनाधीन एक उपनिवेश था और 1947 के तथाकथित आजादी के बाद से साम्राज्यवादी अप्रत्यक्ष शासन-शोषण तथा नियंत्रण के नव-औपनिवेशिक रूप के तहत भारत एक अर्द्ध-औपनिवेशिक व अर्द्ध-सामंती देश में तब्दील हो गया। इसीलिए आज भी साम्राज्यवाद से आजाद होना तथा सामंती व्यवस्था को ध्वस्त कर जनवाद की स्थापना करना हम सभी का एक अहम कर्तव्य है। अतः साम्राज्यवाद से आजाद होने के लिए राष्ट्रीय क्रांति और सामंतवाद से मुक्त होने के लिए जनवादी क्रांति यानी राष्ट्रीय व जनवादी क्रांति का मार्ग अपनाना ही देश की नब्बे प्रतिशत जनता की मुक्ति का एकमात्र सही रास्ता है। इस रास्ते से आगे बढ़ने के लिए ही तीन महत्वपूर्ण हथियारों की जरूरत है जिसे हम एक मजबूत पार्टी, एक शक्तिशाली जनसेना व मजदूर-किसान, पेटी-बुर्जुआ (निम्न-पूंजीपति)-छोटा व मध्यम पूंजीपति यानी राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग तथा चार वर्गों का संयुक्त मोर्चा के बतौर परिभाषित किए हैं।

पहले ही कहा जा चुका है कि ब्रिटिश औपनिवेशिक काल की शुरूआत से लेकर 1947 के तथाकथित आजादी के बाद के काल में शोषणमुक्त भारत, सच्चा जनवादी व लोकतांत्रिक भारत के सपने को अमली-जामा पहनाने के लिए जो अनगिनत शहीदों ने आत्मबलिदानी दी है, हम भाकपा (माओवादी) के नेतृत्व में उसी सपने को साकार करने व उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए आज अग्रसर हो रहे हैं। इस महान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए 1967 के ऐतिहासिक नक्सलबाड़ी सशस्त्र किसान विद्रोह से शुरू कर आज तक यानी लगभग पचास वर्षों के अंतराल में करीब पन्द्रह-सोलह हजार कामरेडों ने प्राणों की आहुति दी है, जिसमें 2004 के 21 सितम्बर को एक नई पार्टी के रूप में भाकपा (माओवादी) के आविर्भाव के बाद से आज तक तीन हजार से भी अधिक कामरेडों की शहादतें भी शामिल हैं और आज भी हम 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' के नाम से चलाया जा रहा बर्बर सैन्य अभियान का बहुतेरे कामरेडों की जानों की कुर्बानी देकर भी शानदार प्रतिरोधी कार्रवाईयों के जरिए मुकाबला कर रहे हैं और आगे भी प्राणों को न्योछावर करते हुए ही प्रतिरोध करते रहेंगे।

जाहिर है कि भाकपा (माओवादी) का जन्म के समय से ही इसकी केन्द्रीय कमेटी के सदस्य सहित विभिन्न स्तरों के कमेटियों के नेता-कार्यकर्ता व आम सदस्य, जन मुक्ति छापामार सेना (पी.एल.जी.ए.) के अनगिनत कमांडर व बहादूर

योद्धा, जन-सरकार और ''जोतने वालों के हाथ में जमीन'' व ''क्रांतिकारी किसान कमेटी के हाथ में हुकूमत'' के नारे की दिशा पर संचालित संगठनों के नेता व कार्यकर्ता, विभिन्न जन-संगठनों व मानवाधिकार संगठनों के यानी संयुक्त मोर्चा के नेता व अनगिनत कार्यकर्ता- सभी कोई अपने अमूल्य प्राणों की आहुति दिए हैं और आज भी 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' जैसा बर्बर सामरिक अभियान नाम के युद्ध तथा वर्ग-युद्ध के मैदान में बलिदानी दे रहे हैं। आज तो दिन के उजाला जैसा साफ है कि हमारी केन्द्रीय कमेटी के छः सदस्य को शासक वर्ग की सोची-समझी पॉलिसी के तहत एक क्रूर साजिश रचकर फर्जी मुठभेड़ में हत्या कर दी गयी। इसके अलावे पोलित ब्यूरो व सी.सी. के और कई नेता भी घातक बीमारी से ग्रस्त होकर अपने अमूल्य प्राणों को न्योछावर किए। जैसे पार्टी के वरिष्ठ नेता व पोलित ब्यूरो सदस्य का. नारायण सन्याल (विजय दा) विगत 17 अप्रैल 2017 कैंसर की बीमारी से चल बसे।

शहादतों के उपरोक्त उज्ज्वल मिसालें इस बात को साबित करती हैं कि हमारी पार्टी की शीर्ष कमेटी के कामरेडों ने भी संकीर्ण निजी स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि आम जनता के स्वार्थ में और उनकी मुक्ति के लिए जारी जनयुद्ध के मैदान में अग्रिम पंक्ति में खड़े होकर अपनी जानों की कुर्बानी देने में किसी भी तरह की हिचकिचाहट नहीं दिखाई व प्रिय मातृभूमि को निर्मम आर्थिक शोषण व बर्बर राजनीतिक उत्पीड़न से मुक्त करने के महान काम में अपने प्राणों की आहुति देने में कभी पीछे की ओर कदम नहीं खींचा।

अगर 2016 की जुलाई से 2017 की 28 जुलाई तक यानी विगत एक वर्ष के दौरान नजर दौड़ाई जाएं तो हम पाएंगे कि भाकपा (माओवादी) के पार्टी, पी.एल.जी.ए व संयुक्त मोर्चा के सैकड़ों कामरेड शहादतें दे चुके हैं और इ.आर.बी. के अंतर्गत विभिन्न राज्यों या प्रांतों की बात ली जाएं तो लगभग 20-25 कामरेडों ने इसी बीच अपने प्राणों को न्योछावर किया है। जिसमें पूर्वी बिहार-पूर्वोत्तर झारखण्ड स्पेशल एरिया व बिहार-झारखंड स्पेशल एरिया के अंतर्गत बीआरसी-जेआरसी रीजन के विभिन्न पार्टी स्तरों के से लेकर पीएजीए, केकेसी-आरपीसी के कामरेड शामिल हैं।

इसमें संदेह की कोई बात नहीं है कि नक्सलबाड़ी के विद्रोह के समय से लेकर आज तक जो पन्द्रह-सोलह हजार अमूल्य प्राणों की आहुति हुई है, वे सब प्रिय मातृभूमि के वीर संतान हैं; तमाम लोभ-लालच, भोग-विलासिता का जीवन, भ्रष्ट बनकर अकूत धन-सम्पदा का मालिक बनने की इच्छा, सभी प्रकार की उच्चाकांक्षा, आत्मसमर्पण करने पर भारी रकम मिलने का लोभ-लालच- इत्यादि सारे कुछ को त्यागते हुए और मजदूर-किसान, मेहनतकश, दलित, आदिवासी, उत्पीड़ित राष्ट्रीयताएं व धार्मिक अल्पसंख्यक जनता के साथ घुलमिल व एकात्म होते हुए आखिर भारत के नब्बे प्रतिशत जनता के हित में, उनकी मुक्ति के लिए अपने अमूल्य प्राणों को न्योछावर करने के लिए पीछे कदम नहीं हटाये हैं। इस तरह से हजारों शहीदों ने सच्चा देशप्रेम किसे कहा जाता है, उसकी उज्ज्वल मिसालें पेश किए हैं तथा रोज दिन कर रहे हैं।

पर, आज शासन की गद्दी पर बैठे ब्राह्मणवादी हिन्दुत्व के पैरोकार नरेंद्र मोदी सरकार के व आर.एस.एस. के चरम फासीवादी लोग जिसका काम ही है 'सब का साथ, सब का विकास' व 'मेक इन इंडिया' के नारों की आड़ में 'देशी'-विदेशी कॉरपोरेट संस्थाओं के हित में सारे जनविरोधी पॉलिसियों को पूरे भारत में एक फासीवादी वातावरण पैदा कर जोर-जबरन लागू करना, आज वे ही 'कौन देशप्रेमी और कौन देशद्रोही' इसकी परीक्षा लेनेवाले स्वयंभू नेता बन गए हैं, देशप्रेम का सर्टिफिकेट देनेवाले बन गए हैं। वाकई में, इन फासीवादियों ने हिटलर फासिज्म की बात को ही याद करवा दिया। जैसाकि कुख्यात हिटलर खुद को सच्चा 'देशप्रेमी' कहकर तमाम प्रगतिशील, जनवादी व कम्युनिस्टों को हजारों-हजार की संख्या में 'देशद्रोही' का लेबुल लगाकर कत्ल किया है और अंत तक इतिहास के सबसे घृणित व्यक्ति के बतौर चिन्हित हुआ है तथा इतिहास के कूड़ेदान में स्थान पाया है। असल में मौजूदा शासन की गद्दी पर बैठे ये भ्रष्ट व फासीवादी लोग 'उल्टे चोर कोतवाल को डांटे' जैसी कहावत को ही चरितार्थ कर रहे हैं यानी देशप्रेम के नकाबपोश नेता लोग ही आज स्वयंभू विचारक बन कर विचार के नाम पर कौन 'देशप्रेमी' और कौन 'देशद्रोही' का ढोंग रच रहे हैं। अतः आज हमारा-आपका, तमाम प्रगतिशील-जनवादी व क्रांतिकारी ताकतों का अहम कर्तव्य बनता है कि फासीवाद का गलाघोंटू वातावरण व फासीवादी शासन-प्रणाली के खिलाफ एकजुट होकर नकली देशप्रेमियों के मुखौटा को उतार देना तथा फासीवाद व फासीवादियों के खिलाफ एकताबद्ध जोरदार आंदोलन का निर्माण करते हुए उसे अंत तक ले जाना, जहां

हिटलर फासिज्म जैसा इनलोगों को भी इतिहास के कूड़ेदान में फेंका जा सके।

जो भी हो, 28 जुलाई शहीदी सप्ताह के अवसर पर हम उन तमाम शहीदों को याद करते हैं तथा श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं, जिन्होंने एक आजाद भारत, जनता की जनवादी व्यवस्था वाला भारत तथा शोषणमुक्त भारत का निर्माण करने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी है, नई जनवादी क्रांति को सफल बनाने की प्रक्रिया में शहादत दी है। इसलिए, नई जनवादी क्रांति को सफल बनाते हुए जो पार्टी इसे आगे बढ़ाकर समाजवाद व साम्यवाद की स्थापना कर सकती है, वैसी पार्टी भाकपा (माओवादी) ही है। इस कारण से ही हम शहीदी सप्ताह के अवसर पर हमारी पार्टी के संस्थापक नेता कामरेड चारू मजुमदार व कामरेड कन्हाई चटर्जी को तहेदिल से श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए उनके द्वारा दी गयी लाइन व नीति और सरल व सदा कम्युनिस्ट जीवनशैली के दिखाए गए मार्ग पर अडिग रह कर अग्रसर होने का संकल्प को दोहराते हैं। साथ-ही उल्लिखित तमाम शहीदों को शत्-शत् लाल सलाम पेश करते हैं तथा तहेदिल से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

हमें इस बात को भलीभांति याद रखना होगा कि शहीदी सप्ताह के अवसर पर केवल कुछ नारे लगाने व मीटिंग-जुलूस के अंदर ही हमें सीमित रहने से नहीं होगा, बल्कि प्रिय मातृभूमि भारत को साम्राज्यवाद-सामंतवाद व दलाल नौकरशाह पूंजीपति-वर्ग दुश्मन रूपी इन तीन पहाड़ों के जकड़न से मुक्त कर एक उन्नत, जनवादी तथा सच्चा लोकतांत्रिक भारत का निर्माण करने के लिए और साहस व आत्म-बलिदान के लिए तैयार रहना होगा; पार्टी, जनसेना व संयुक्त मोर्चा के कामों को और आगे बढ़ाना होगा; और साथ ही साथ छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में, पी.एल.जी.ए. को पी.एल.ए में और छापामार इलाके को मुक्त आधार क्षेत्र में बदलने के काम में तेजी लाना होगा। अगर उपरोक्त कामों को आगे बढ़ाना है, तो सबसे पहले हमारे अंदर, पार्टी के अंदर जो गैर-सर्वहारा रूझान व आचार-आचरण मौजूद है, उसे एक के बाद एक दोष निवारण आंदोलन का संचालन कर पूरे तौर पर उखाड़ फेंकना होगा और ऐसा करके ही पार्टी को और बोल्शेवीकरण के कार्यभारों को आगे बढ़ाने में तथा पार्टी की आत्मगत शक्ति की कमी को भी कमोबेश दूर करते हुए जारी संघर्ष को एक नयी ऊंचाई तक ले जाने में सक्षम हो पाएंगे।

याद रखें कि मौजूदा दौर बहुत-ही चुनौतीभरा दौर है। इस दौर में 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' के नाम पर जनता के खिलाफ चलाया जा रहा अन्यायपूर्ण व बर्बर सैन्य अभियान का तीसरा चरण जारी है, जो और तीखा होगा। पर, पिछले कई दशकों से जारी कृषि-क्रांतिकारी गुरिल्ला लड़ाई के दौरान प्राप्त अनुभव और खासकर पिछले आठ वर्षों से जारी 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' का हमारी कम आत्मगत शक्ति रहने के बावजूद हम जवाबी प्रतिरोधी लड़ाई के जरिए मुकाबला करते आ रहे हैं। शत्रु की यह घोषणा कि एक वर्ष के अंदर, दो वर्षों के अंदर, पांच वर्षों के अंदर माओवादी पार्टी व माओवादी आंदोलन को पूरे तौर पर खत्म कर दिया जाएगा के बावजूद प्रत्येक बार-ही वे विफल रहे। आगामी दिनों में भी उसका वही हश्र होगा, यानी ''तमाम प्रतिक्रियावादी कागजी बाघ हैं'' जैसी परिणति होगी, इसमें संदेह की कोई बात नहीं है और यह एक विश्वजनीन सच्चाई भी है। अत: पिछले कई दशकों के और खासकर पिछले आठ वर्षों के दौरान युद्ध-विज्ञान व युद्ध-कला संबंधी जो भी सकारात्मक और नकारात्मक अनुभव हमें हासिल हुआ है, उसमें नकारात्मक पहलुओं को दूर करते हुए तथा सकारात्मक पहलुओं पर निर्भर होते हुए साहस के साथ जनता, भौगोलिक धरातल, गुरिल्ला युद्ध के दांव-पेंच आदि का बेहतर तालमेल बैठाकर तथा 4-सी, यानी कमांड, कन्ट्रोल, कम्युनिकेशन व को-आर्डिनेशन का बेहतर तालमेल के जरिए कम ताकत को लेकर भी हम ज्यादा ताकत वाले दुश्मन के खिलाफ लड़ सकते हैं, अपनी ताकतों को बढ़ा सकते हैं और दुश्मन की ताकतों को क्रमश: धीरे-धीरे कम कर सकते हैं और अंत में दुश्मन की ताकतों को पूरी तरह नष्ट या नेस्तानाबूद कर पूरे देश में जनता द्वारा राजनीतिक सत्ता पर कब्जा हासिल हो सकता है। इस प्रकार से भारतीय क्रांति का पहला स्तर नई जनवादी क्रांति को सफल करते हुए दूसरा स्तर समाजवादी क्रांति को आगे बढ़ाते हुए अंत तक साम्यवाद की स्थापना कर सकते हैं। यही हमारे महान शहीदों के सपने हैं और उस सपने को अमली-जामा पहनाने के काम अधूरे ही रह गए हैं।

हमें याद रखना है कि उक्त अधूरे कार्यों को पूरा करने की प्रक्रिया के सामने मौजूदा चुनौतीभरा कठिन दौर में दमनात्मक अभियान के साथ-ही दुश्मन की घृणित आत्मसमर्पण की नीति को भी येन-केन प्रकारेण लागू करने का प्रयास और तेज होगा। इसी बीच, हमारी पर्टी के आराम-तलबी, भ्रष्ट व

कम्युनिस्ट नैतिकता में आयी भारी गिरावट से अध:पतित कई लोग दुश्मन के पास आत्मसमर्पण किए हैं। इस तरह से महान शहीदों के सपने को कार्यान्वित करने के विपरीत गद्दारी की भूमिका निभाए हैं, पार्टी, क्रांति व जनता के साथ विश्वासघात किए हैं, अंत तक दुश्मन के हाथ का खिलौना बन गए हैं। इसलिए, शहीद दिवस के अवसर पर शक्कर मिला हुआ बुलेट जैसा आत्मसमर्पण का लालच को घृणा के साथ खारिज करने हेतु तथा साथ ही साथ आत्मसमर्पण की घृणित नीति को पूरी तरह परास्त करने के लिए पूरी कतार व लड़ाकू जनता को शिक्षित व प्रेरित करना होगा।

अत: आवें, शहीदों के अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए दिलोजान से और एक नई शपथ व नई उमंग के साथ पार्टी को और बोल्शेवीकरण करते हुए विशाल जन-आधार युक्त मजबूत पार्टी के रूप में बदल डालने के लिए तेज गति से आगे बढ़ें।

आवें, शहीदों के विभिन्न प्रकार के विशिष्ट गुण जैसे खुद के लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए सोचना, मजदूर-किसान-मेहनतकशों के लिए सोचना व उनके लिए ही सबकुछ करना, व्यक्तिगत नाम-यश या ख्याति कमाने की आकांक्षा अथवा किसी भी प्रकार की उच्चाकांक्षा का पोषण न करना, दूसरों की अपेक्षा अपने खुद ज्यादा बोझ उठाना, हर समय ठंडे दिमाग से और नम्रता के साथ बोलने का परिचय देना- इत्यादि को आत्मसात करते हुए उसे व्यवहार में ले जाने के प्रयास को तेज करें।

उपरोक्त सबकुछ को वास्तव में कार्यान्वित कर पाने से ही महान शहीदों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी, अन्यथा नहीं।

क्रांति का रास्ता चाहे कितना ही टेढ़ा-मेढ़ा क्यों न हो, अंतिम जीत जनता की ही होगी। जनता ही इतिहास निर्माण करने की मूल प्रेरक शक्ति है। अतीत का इतिहास जनता ही रची है, आज के इतिहास का जनता ही सृजन कर रही है और भविष्य के इतिहास भी जनता ही निर्माण करेगी।

शहीदों को श्रद्धांजलि

(उक्त आलेख हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी) की केन्द्रीय कमेटी के अंग्रेजी मुखपत्र 'पी. डब्ल्यू.' अंक-10 का हिन्दी अनुवाद है, इसमें अक्टूबर 2014 से जून 2016 के बीच पूरे देश में शहीद हुए साथियों की सूचि दी गई है। - सम्पादकमण्डल, लाल चिनगारी)

हमारे देश के नव जनवादी क्रांति के पथ प्रदर्शक, शिक्षक एवं महान नेता द्वय शहीद कामरेड चारू मजुमदार एवं कामरेड कन्हाई चटर्जी के द्वारा प्रतिपादित महान नक्सलबाड़ी सशस्त्र किसान संघर्ष के द्वारा जारी दीर्घकालीन जनयुद्ध में पिछले 50 वर्षों में हजारों कामरेड्स, आम जनता अमिट बलिदानों के साथ आगे बढ़ रही है। शोषणकारी शासक वर्गों ने भारत के क्रांतिकारी आंदोलन पर अभूतपूर्व ढंग से हमलों की बाढ़ ला दी है। वहीं शासक वर्गों ने देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए अत्यधिक खतरे के रूप में भाकपा (माओवादी) को चिन्हित कर विगत एक दशक से अपने हमले तेज किये हैं। यह हमले विगत दो सालों में ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवादियों के नेतृत्व में और तीव्र हुई है।

पी डब्ल्यू के पिछले अंक के बाद अक्टूबर 2014 से जून 2016 तक के समयावधि में क्रांतिकारी आंदोलन में 300 से ज्यादा कामरेड्स शहीद हुए हैं। इनमें से सीसी के कर्मचारी गण (सीसी स्टाफ) के एक सदस्य, सीआरबी के तीन, डीके से 198, बीजे-सैक से 43, एओबी से 21, ओड़िशा से 17 पश्चिम-बंग से 2, तेलंगाना से 12, महाराष्ट्र से 2, पश्चिमी घाट से 1, मध्सप्रदेश से 1 और पंजाब से 1 कामरेड शामिल हैं। इनमें 62 महिला कामरेड्स भी शहीद हुए हैं। इसके अलावा 23 महिला कामरेड्स फासीवादी भाड़े के सैनिकों के द्वारा साधारणत: या मुठभेड़ों के दौरान घायल अवस्था में पकड़कर, सामूहिक रूप से यौन हिंसा का शिकार बना कर अत्यंत क्रूर यातना देने के बाद हत्या किया गया।

ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवादी मोदी सरकार 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' के तीसरे दौर में क्रांतिकारी आंदोलन पर तीव्र हमलों को अंजाम दे रही है। जिसमें क्रांतिकारियों व जनसमूहों को फर्जी मुठभेड़ों में हत्या करना, साथ ही साथ जनसमूह तथा जन मिलिशिया पर अंधाधुंध गोलीबारी कर रही है। बिहार-झारखंड में राज्य पोषित प्रतिक्रांतिकारी गुंडा गिरोहों जैसे: टीपीसी, जेजेएमपी और पीएलएफआई सामूहिक हत्याकांड के रूप में कहर बरपा रही हैं। 38 सामूहिक कांडों में सरकारी सशस्त्र बल और प्रतिक्रांतिकारी गिरोह शामिल रही है। वहीं, पार्टी के गद्दार जोनल कमेटी सदस्य अनुराग यादव के सूचना पर फासीवादी सरकार के भाड़े के पुलिस बल ने खुद सूचना देने वाले अनुराग यादव सहित पूरे 11 लोगों की सामूहिक हत्या बकोरिया के पास कर दी। सामूहिक हत्याकांडों में कुल मिलाकर 175 कामरेड्स शहीद हुए हैं। जबकि दुश्मन द्वारा हमारी पीएलजीए टुकड़ियों पर घात लगाकर किये गये हमलों में 6 कामरेड्स शहीद हुए हैं। तेलंगाना के अदिलाबाद जिले में चार कामरेड्स, एओबी के मलकानगिरी जिले में का. चार्ल्स, का. दिनेश, का. मुकेश और का. अर्जुनम्मा विषाक्त भोजन का शिकर बनकर शहीद हुए हैं। शोषित-उत्पीड़ित वर्ग के हित में दुश्मन के बलों से लड़ते हुए 73 कामरेड्स शहीद हुए हैं, जबकि 12 कामरेड्स अस्वथता के कारण, 7 कामरेड्स बढ़ती उम्र के करण, 19 कामरेड्स दुर्घटनाओं में जान खोये हैं। इनमें ज्यादा नुकसान बूबी ट्रैप्स के कारण हुए हैं। चार कामरेड्स (दक्षिण बस्तर के पालाचेलिमा मेट्टा गूडेम एम्बुश में का. सोढ़ी मसाल- पार्टी और पीएलजीए का सदस्य, उत्तर बस्तर के राजनांदगांव-कांकेर बॉर्डर डिवीजन एक्शन टीम के कमांडर का. विकास ने बेतिय एम्बुश में, पश्चिम बस्तर के जप्पूर एम्बुश में कंपनी-2 के कमांडर का. मासा और कंपनी सदस्य का. केसाल) दुश्मन के बलों पर किये गये नीतिगत प्रत्याक्रमण की कार्रवाईयों में अपना जीवन समर्पित किया है। माओवादी कैदियों के नेतृत्व में किया गया झारखंड का चाईबासा बहादुराना जेल ब्रेक में डी-जोन के सबजोनल कमेटी के सदस्य कामरेड्स भाई रामविलास तांती और का. टीपा तांती शहीद हुए हैं।

विगत दो सालों में एक सीसी मेंबर सहित चार एससी/सैक/एसजेडसी सदस्य, दो आरसी सदस्य, चौदह जिला/जोनल/डिविजनल कमेटी सदस्य, पांच सबजोनल कमेटी सदस्य, 47 एरिया कमेटी सदस्य, 95 पेशेवर क्रांतिकारी/पीएलजीए सदस्य, आरपीसी के 11 कामरेड्स, क्रांतिकारी जन संगठनों के 11 कामरेड्स और क्रांतिकारी बुद्धिजीवी, कलाकार और जनवाद पसंद लोग शहीद हुए हैं।

सीसी कामरेड श्रीधर श्रीनिवासन (विजय/विष्णु/मासा),

बीजे-सैक सदस्य कामरेड उर्मिला (सरिता गंझु), का. रामचंद्र महतो (प्रमोद/चिराग), भूतपूर्व ओड़िशा सांगठनिक समिति के सदस्य का. कुमारा स्वामी (वसंत), डीके-एसजेडसी के वैकल्पिक सदस्य का. गोट्टिमुक्कना रमेश (लछाल) इस कालावधि में शहीद हुए हैं।

सीसी सदस्य कामरेड श्रीधर श्रीनिवासन भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के उतार-चढ़ाव में दृढ़ता से डटे रहे और अचानक दिल का दौरा पड़ने से 18 अगस्त 2015 को शहीद हो गये। वे 57 वर्ष के थे। 6 साल के सख्त जेल जीवन बिताने के बाद सुरक्षित बाहर निकलकर पुनः पार्टी से संपर्क बना लिये। जंगल जीवन में कम अनुभव के बावजूद अपने दायित्व के एक गुरिल्ला जोन जाने के रास्ते में थे। भारत की क्रांतिकारी आंदोलन में महाराष्ट्र राज्य एवं मुम्बई को विशिष्टता प्राप्त है। का. श्रीधर की क्रांतिकारी यात्रा की शुरूआत मुम्बई शहर से ही हुई थी। राजकीय एलिफिन्सटन कॉलेज के छात्र के रूप में रहते हुए विद्यार्थी प्रगति संगठन (विपीएस) का मार्गदर्शन किया, जिसने शहर के क्रांतिकारी छात्रों को संगठित किया। इस संगठन ने महाराष्ट्र और पड़ोसी राज्य गोवा के क्रांतिकारी छात्र आंदोलन को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। तत्कालीन सीपीआई (एमएल) आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी (एसपीएससी) के नेतृत्व में 1978 में जारी जगत्याल किसान आंदोलन से महाराष्ट्र के कामरेड्स प्रभावित हुए थे। महाराष्ट्र के मुम्बई शहर कमेटी की एमएल पार्टी का सीपीआई (एमएल) (पीपुल्सवार) से 1980 में विलय हुआ। कामरेड श्रीधर ने शहर में छात्र आंदोलन तथा मजदूर आंदोलन को विकसित करने में काफी कोशिश की। उन्होंने कपड़ा मिल मजदूरों के 1982 के ऐतिहासिक संघर्ष का नेतृत्व किया। इसके अलावा कई जुझारू कार्रवाइयों में सक्रिय भागीदारी निभायी। इस संघर्ष ने देश के अत्यधिक जुझारू मजदूर संघर्षों में अपनी जगह बनायी।

का. श्रीधर पार्टी के अंतर्गत उतार-चढ़ाओं के बीच मा-ले-मा सिद्धांत के से लैस होकर सर्वहारा के पक्ष में अडिग रहे। महाराष्ट्र की पार्टी इकाई भू.पू. पीपुल्सवार पार्टी के 1985 के संकट में पार्टी से अलग हुई। बाद में सितंबर 1987 में आयोजित महाराष्ट्र के दूसरा अधिवेशन में राज्य संयोजक द्वारा पेश किये गये दस्तावेज को नकारा गया तथा का. श्रीधर और अन्य कामरेडों के द्वारा तैयार किये गये दस्तावेज को अनुमोदित किया गया। उस अधिवेशन ने का. श्रीधर को नव गठित राज्य कमेटी के सचिव के रूप में चयन किया। का. श्रीधर के नेतृत्व में पार्टी को फिर से मिलाने की कोशिश को बल मिला। हालांकि अलग पार्टी रहते हुए भी पीपुल्सवार पार्टी के द्वारा आयोजित अखिल भारतीय छात्र एवं सांस्कृतिक मोर्चा में महाराष्ट्र के कामरेड्स सक्रिय थे।

पार्टी के संकट के दौरान कुछ लोग पार्टी छोड़ दिये तथा कुछ लोग कमजोर हुए। लेकिन का. श्रीधर और कुछ अन्य कामरेड्स पार्टी लाइन पर अडिग रहकर गलत सैद्धांतिक, राजीनतिक रूझान और गलत सांगठनिक पद्धतियों के खिलाफ संघर्ष करते हुए संकटपूर्ण हालातों से पार्टी को उबारा। का. श्रीधर नेतृत्वकारी के रूप में रहे। उन्होंने आंदोलन को आगे बढ़ाया। बाद में सीसी के संकट के दौरान अवसरवादी समूह के खिलाफ महाराष्ट्र के कामरेड्स के संघर्ष के बारे में, आंतरिक संघर्ष चलाने में, अल्पमत समूह की कमियों के बारे में व सच्चे क्रांतिकारियों की एकता के बारे में सर्वसम्मति बनी। नतीजतन राज्य कमेटी का 1994 में सीपीआई (एमएल) (पीपुल्सवार) में दोबारा विलय हुआ। इस पूरे प्रक्रिया में का. श्रीधर ने मुख्य भूमिका निभायी थी।

सीपीआई (एमएल) (पीपुल्सवार) के द्वारा 1995 में आयोजित अखिल भारतीय अधिवेशन और 2001 के 9वीं कांग्रेस में का. श्रीधर ने सक्रिय भागीदारी निभायी। कांग्रेस के सामने लाये गये वाम दुस्साहसिक लाइन को हराकर पार्टी लाइन को समृद्ध करने में का. श्रीधर ने सकारात्मक भूमिका निभायी। कांग्रेस द्वारा निर्वाचित सीसी सदस्य बने और इससे गठित किये गये दक्षिण-पश्चिम ब्यूरो का हिस्सा बने।

केन्द्रीय कमेटी के आदेशानुसार उन्होंने बालाघाट-गोंदिया डिवीजन के विकास व निर्माण के साथ महाराष्ट्र में क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने में नेतृत्व किया। अपनी स्वास्थ्य परेशानियों के बावजूद कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में काम करते हुए भी उन्होंने कभी विशेष सुविधा नहीं ली। वे कैडरों से अच्छी तरह से घुल-मिल गये और उनका विश्वास भी प्राप्त किया। 2004 में जब भाकपा (माओवादी) बनी, तो उन्हें भी इसके सीसी (अस्थायी) सदस्य के रूप में लिया गया।

उन्होंने इस बीच वाजपेयी सरकार की विनिवेश नीति और ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवादी हमलों के खिलाफ विकसित हो रही सामाजिक आंदोलनों के साथ अपने-आपको घनिष्ठता के साथ जोड़ा। मुम्बई प्रतिरोध 2004 के आयोजन का नेतृत्व किया। देश और महाराष्ट्र के क्रांतिकारी आंदोलन को इस आयोजन ने गति प्रदान की थी। जब खैरलांजी दलितों के

ऊपर हमला हुआ, तो जातियों के उन्मूलन के लिए जुझारू संगठन बनाये, जो जाति के सवाल को हल करने का सही रास्ता दिखाता है। छात्र और नौजवान लोग इस आंदोलन की ओर आकर्षित हुए। इन सभी के पीछे मुख्य रूप से का. श्रीधर थे। नतीजतन महाराष्ट्र के आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए अनुकूल परिस्थितियां बन गयी।

का. श्रीधर भाकपा (माओवादी) के 9वीं कांग्रेस में सक्रियता के साथ भाग लिये। 9वीं कांग्रेस में सामने लाये गये वाम दुस्साहसी लाइन को हराने में उन्होंने अहम भूमिका निभायी। उनका निर्वाचन फिर एक बार सीसी के लिए हुआ, जिसमें वे एसडब्लयूआरबी का सदस्य बने। उसके बाद के समय में गंभीर दमन के चलते देशीय स्तर पर ही नहीं बल्कि महाराष्ट्र में भी पार्टी को भारी नुकसान उठाना पड़ा। इसी समय अगस्त 2007 में उनकी गिरफ्तारी से आंदोलन को भारी नुकसान पहुंचा।

कैदखाना में 60 से ज्यादा मुकदमों का सामना किये, फिर भी का. श्रीधर क्रांति के झण्डे को उंचा उठाये रखे। उनका हौसला बुलंद था। जेल जीवन ने उनकी दृढ़ता को और मजबूत किया। वह लोहे की तरह मजबूत हो गये थे। का. श्रीधर ने जेल को युद्ध के मोर्चे में बदल दिया तथा अपने साथियों और साधारण कैदियों के साथ मिलकर उनके हक के लिए संघर्ष चलाए। उन्होंने उस समयावधि को सैद्धांतिक अध्ययन के लिए भी इस्तेमाल किया। का. श्रीधर अपने क्रांतिकारी जीवन में महत्वपूर्ण मोड़ों व उतार-चढ़ाव में पार्टी लाइन को सीने से लगाये रखे। वे पार्टी के अंदर गलत सैद्धांतिक व राजनीतिक रूझान के खिलाफ भी लड़ते रहे। वे विचारों में स्पष्ट थे। वे अध्ययन में व्यस्त रहते थे, सर्वहारा अनुशासन तथा सरल जीवन पद्धति के साथ चेहरे पर सदा मुस्कुराहट लिए रहते थे। वे अपने साथ के कामरेडों के साथ स्पष्ट रूप से अच्छे रिश्ते बनाए रखे। वह निरंतर राजनीतिक और सांगठनिक काम में एक क्रांतिकारी नेता के तौर पर तराशे गये और एक परिपक्व कम्युनिस्ट नेता के तौर पर विकसित हुए थे। उन्होंने अपने साढ़े तीन दशक के राजनीतिक जीवन में कई मुश्किलों का सामना किये और अंततः क्रांति में अपने जीवन को भी न्योछावर कर दिये। आवें, उनके सर्वहारा मूल्यों को एक मिसाल के तौर पर लेने की प्रतिज्ञा करें और भारत के दीर्घकालीन जनयुद्ध को आगे बढ़ावें।

कामरेड उर्मिला

का. उर्मिला बीजे-सैक सदस्य और जनता की प्यारी पुत्री 17 मई, 2015 पुलिस के साथ हुई एक मुठभेड़ में वीरतापूर्वक लड़ते हुए अपने प्राण को न्योछावर कर दी। वह एक गरीब दलित किसान परिवार से आयी थी। वे 15 वर्ष की कच्ची उम्र में भू.पू. एमसीसी के सांस्कृतिक मंच में कार्यकर्ता के तौर पर शामिल हुई थी। उसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखी। महिला संगठन बनाने और महिला संगठन विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

कामरेड चिराग

का. चिराग पूर्वी बिहार-पूर्वोत्तर झारखंड के सैक सदस्य थे, इस सैक को बीजे-सैक से अलग करके बनाया गया है। का. चिराग हमारी पार्टी की एकता कांग्रेस 9वीं कांग्रेस के द्वारा तय किये गये केन्द्रीय कार्यभार को पूरा करने के हिस्से के तौर पर दोनों राज्यों में जनयुद्ध को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाये थे। पुलिस ने उन्हें पकड़कर 30 जनवरी, 2015 को एक फर्जी मुठभेड़ में ठंडे दिमाग से उनकी हत्या कर दी।

कामरेड बसंत (सुनील)

का. बसंत पुरानी ओड़िशा राज्य सांगठनिक कमेटी में काम कर रहे थे और विगत कुछ सालों से पार्टी संपर्क में नहीं थे। वह ओड़िशा के कलिंगनगर डिवीजन में थे और बीमार पड़ गये थे। पहले वे तेलंगाना में काम किये थे और बदली होकर डीके में आये थे। वे सीसी की सुरक्षा के लिए बनायी गयी 6 नम्बर प्लाटून पार्टी कमेटी के सदस्य थे। वह और उनकी जीवन साथी का. रमा (डीवीसी-एम) पार्टी के साथ संपर्कों को पुनः स्थापित करने के दौरान 24 जनवरी, 2016 को एक फर्जी मुठभेड़ में शहीद हो गये।

कामरेड लच्छन्ना (गोट्ठि मुक्कला रमेश)

का. लच्छन्ना हैदराबाद के छात्र आंदोलन और दक्षिण तेलंगाना में किसान आंदोलन में भाग लिये थे। बाद में वह राज्य कमेटी के मुख्य पत्र 'क्रांति' के सम्पादक मण्डल के सदस्य बने और उसकी मुख्य जिम्मेदारी सम्भाली। का. लच्छन्ना बहु योग्यता वाले कामरेड थे। डीके में वे 1 नम्बर बटालियन पार्टी कमेटी के सदस्य और उसी के शिक्षा कमेटी के सदस्य भी थे। 2015 के डीके प्लेनम में वैकल्पिक एसजेडसी सदस्य के तौर पर निर्वाचित हुए। वह तेलंगाना ग्रेहाउण्ड, छत्तीसगढ़ पुलिस और केन्द्रीय अर्द्ध-सैनिक बलों के साथ मार्च 2016 में हुई मुठभेड़ में वीरतापूर्वक लड़ते हुए शहीद हुए। दो साल के अंदर राज्य कमेटी स्तर के तीन

नेताओं के शहादत से आंदोलन को बड़ी क्षति हुई है। उनके आदर्शों और सपनों को उपर उठाये रखें तथा उस पर आखिरी सांस तक चलते रहें।

इसी समय बीजे-सैक के बीआरसी में रीजनल कमेटी सदस्य का. चंदन और का. सिल्वेस्टर भी शहीद हुए। जिला/जोन/डिविजन/कंपनी पार्टी कमेटी कामरेड्स शरत (ईस्ट डिविजन एओबी), हेमला मासा (कंपनी-2, डीके), सोनाधर (धरमा-डीके), सतीश (दक्षिण जोन-बीजे), नगेश (खम्मम-तेलंगाना) सोनी (दक्षिण बस्तर, डीके), बिहारी यादव (सेंट्रल जोन, बिहार), रमा (कलिंगनगर-ओड़िशा) संजय यादव (गुमला-झारखंड), चंदु (पीएल-22 कमांडर-सीआरबी), चार्ल्स (आदिलाबाद-तेलंगाना), रवि (ईस्ट डिविजन-एओबी), सुनिल (माड़-डिके) रजिता (उतर गढ़चिरौली-डीके), गाजो हांसदा उर्फ पंकज (यू जोन-बीजे)।

इस समयावधि में सबजोनल कमेटी कामरेड्स भी शहीद हुए हैं। बीजे-सैक में भूपेश यादव (गुमला), हंसराज (हजारीबाग) रामविलास तांती, टीपा तांती (दक्षिण जोन), जोधन महतो उर्फ शीतल (यू जोन) श्हीद हुए हैं।

एरिया कमेटी/प्लाटून पार्टी कमेटी सदस्य लखी (पीएल-22, सीआरबी) मिनको (सीआरसी कंपनी-2 के प्लाटून डीवाईसी) डीके के बटालियन कामरेड मेघनाथ, प्रेस कामरेड जमिलि, कामरेड नवतक्क, विकास, भाष्कर, योगी, दक्षिण बस्तर के बुधराम, कामरेड बुदरी, कामरेड राकेश (मिलिट्री खुफिया विभाग के प्रभारी), कंपनी-2 के रिनु, लक्ष्मण, दुलाल, दरमा के रामे, माड़ के चैतु, दसमन (विकास, आरकेबी- डिविजन एक्शन टीम सदस्य) कामरेड जानकी (डॉक्टर), कामरेड अजय (एलओएस सदस्य), पूर्वी डिविजन के कंपनी-6 का सेक्शन सदस्य धर्मु यादव, कामरेड फुलसिंग (एलओएस सदस्य), कामरेड जमिलि, कामरेड अर्जुन कंपनी-5 के लालसू (सेक्शन सदस्य), उत्तर बस्तर रामसिला, गणेश सेक्शन सदस्य, कामरेड आरती, निर्मला, सरीता (एलओएस-डीवाईसी) कामरेड प्रमोद उत्तर बस्तर, पश्चिम बस्तर के मंगुडू (सेक्शन कमांडर) बीजे के जगलाल गंझु (सेंट्रल रीजियन), तुफान (गुमला), अमलेश यादव (कोयल शंख जोन), मुस्लिम अंसारी (लोहरदगा), तेलंगाना के कमला (एलओएस सदस्य), शिवलाल (एलओएस-डीवाईसी, केकेबी डिविजन), ओड़िशा के सुनिल (सोनाबेड़ा), डब्लयूआरबी के कृष्णा, महराष्ट्र के आजाद (एरिया कमेटी सचिव) एओबी के आंनन्द (पूर्वी डिविजन), जयराम, जोगाल, पोड़िया (एओएस सदस्य) और अन्य कामरेड्स भी इन दो सालों में शहीद हुए हैं।

पेशेवर क्रांतिकारी/पीएलजीए सदस्य/सीसी के स्टॉफ जोगी, कामरेड्स प्याजु, संजय-बीजे के हजारीबाग, कमलेश-लातेहार, महेन्द्र खरवार, सत्येन्द्र पार्किया, रमेश खरवार, छरकु पछारिया और कोयल शंख जोन के बुधराम उराव, रतन यादव, देवकी बुईया और सेंट्रल जोन के वीरेन्द्र सिंह, हेमंत, रोशन, सरस्वती (दक्षिण जोन), देवलाल मुर्मू (यू जोन), सोनाबेड़ा के दिनेश, अजय, विजय (गंधमार्दन-ओड़िशा), डीके के बटालियन-1 के कोर्सा सोनी, भीमा कुंजाम, सोमडी, और दक्षिण बस्तर के सोड़ी मसाल, कलमु लक्ष्मी, सोढ़ी देवे, मासे, सन्नि, पाण्डे, मड़कम मुक्के, पाडारी रोशन, रामे, देवे, थांथी रमाल, वंजाम दूला, माड़ के दसरू, जोगाल, लक्कु, मुन्ना, रोशनी के अलावे और चार कामरेड्स तथा पश्चिमी बस्तर के मीना, सुकोती, दरभा के विज्जाल, जीराल, कुंजाम पोड़िया (एसओएस-डीवाईसी) बामन के अलावा और दो कामरेड्स, एओबी के सुर्यम, जानकी कविता, सहित और भी कामरेड्स शहीद हुए हैं।

सरकारी सशस्त्र बलों द्वारा मारने के उद्देश्य से किये गये अंधाधुंध गोलीबारी में पीएलजीए के बुनियादी बल मिलिशिया के 45 योद्धा शहीद हुए हैं। इनमें से का. मिच्चा दन्नू-मिलिशिया के सदस्य (पश्चिम बस्तर डीके), मज्जी बुधराम (मिलिशिया पीएल-सदस्य), कोरसा आईतु (जनमिलिशिया-डीवाईसी), सोढ़ी लालू (जनमिलिशिया सदस्य), मड़कम मूडा (ग्राम स्तर के मिलिशिया कमांड के प्रभारी) और मिलिशिया पीएल के कमांडर्स का. कुंजाम, का. लिंगा, का. कड़कम राजु, का. हेमला रामसिंह और संग्राम (जनमिलिशिया के सदस्य बीजे के दक्षिण जोन) दरमा के हेमला रम्सू, सोडी विछेम, मुछाकी रामाल (मिलिशिया कंपनी के सदस्य), बस्तर के वंजेम शांति, सिरियम पोज्जे, पश्चिम बस्तर के पूनेम रूक्नी, ओयम मुन्ना, ओयम तुलसी (भूमकाल मिलिशिया) एओबी के पलासा गणपति (पूर्वी डिविजन) शहीद हुए हैं।

जन संगठनों के कार्यकर्ता पश्चिम बस्तर के का. पल्लो सुक्को (एरिया स्तर), नूपो भूमाल (ग्राम कमेटी सदस्य), दक्षिण बस्तर के कामरेड्स कोरसा सुखलाल (सदस्य), दुदी भीमा (सदस्य) दरभा के कल्मु सुक्का (ग्राम अध्यक्ष) और सदस्य लोग बालसिंग सोड़ी और उनगा ये सभी डीएकेएमएस

के कामरेड्स शहीद हुए हैं। दक्षिण बस्तर के थांथी बुदरी (केएएमएस) सोडी नन्दाल (सीएनएम), विस्थापन विराधी आंदोलन नियमगिरी (ओड़िशा) के टट्का कडरुको जिन्होंने पुलिस की यातनाएं सहन न करते हुए आत्महत्या कर लिया।

महिला कामरेड्स का. उर्मिला (बीजे-सैक) सहित जिला कमेटी स्तर के का. रमा (कलिंग नगर), सोनी (दक्षिण बस्तर), रजिता (गढ़चिरौली) और एरिया कमेटी/पीएल पार्टी कमेटी सदस्य का. लखी (पीएल-22), मिनको (सीआरसी कंपनी-2 के पीएल डिवाईसी) डीके प्रेस विभाग के जमिलि और पश्चिम बस्तर के सोयम बुदरी, आरती, निर्मला और सरीता (गढ़चिरौली एलओएस डिवाईसी), उत्तर बस्तर के रामसिला (कंपनी-5), दक्षिण बस्तर के रामे, पूर्वी बस्तर के जानकी, तेलंगाना के कमला, जोगी, नवता (प्रेस विभाग के) शहीद हुए हैं। सीसी स्टाफ का. जोगी ने दुश्मन से लड़ते हुए शहीद हुआ। बीजे के देवकी भुइयां (सेंट्रल जोन), सरस्वती (दक्षिण जोन), और उत्तर बस्तर के मीना, सुकोती, भीमा और पश्चिम बस्तर के लक्ष्मी, रामबती, रूकनी, जुनकी, कुड़ियम कमला, बटालियन-1 के कोरसा सोनी, भीमे कुंजाम, सोमडी और दरभा के रामबती और दक्षिण बस्तर के लक्ष्मी, सोढ़ी देवे, मासे, सन्नी, रामे, देवे और माड़ के रोशनी, कविता और कोरापुट के जानकी, एओबी के पर्वतक्का (पूर्वी डिविजन), अर्जुन्नमा (मलकानगिरी), तेलंगाना के श्रुती, अनिता और दक्षिण बस्तर के थाथी बुदरी (केएमएस) और दरभा के कीकी और दक्षिण बस्तर के वंजाम शांति, सिरियम पोज्जे और पश्चिम बस्तर के पूनेम, रूकनी, ओयम तुलसी (भूमकाल मिलिशिया) और समर्थक तथा ग्रामीण महिलाएं जरीना, हपका पाण्डे, दरभा के दुर्रे और दक्षिण बस्तर के रिश्पा मुति, मड़कम हिड़में और ओड़िशा के बुबुडी (कंधमाल) और अन्य लोग शहीद हुए हैं।

पार्टी के हमदर्द तथा क्रांतिकारी जनता

बीजे के का. बलिक साहु (रांची), संतोष अंसारी (लातेहार), हरसन तोपनो (खूंटी), सोमनद तांती (दक्षिण जोन), गुरा लुगुन (खूंटी), किस्टोफर गिद्ध (गुमला), ओड़िशा के दुबा नायक और उनकी पत्नी (कंधमाल), सुकरू मांझी, जय मांझी, हरि शंकर (कालाहांडी), मोंडो काद्रिका (नियमगिरी), मालकानगिरी के दो किसान और दरभा के मुसाकी घासी, कराटम दुर्रे और माड़ के मोटु, रेंगु और पूर्वी बस्तर के कचमाल सन्नारू, बोटि कश्यप और पश्चिम बस्तर के जरीना, एक छोटा बच्चा सोडी सन्नु और दक्षिण बस्तर के सोढ़ी पाण्डु, पोडियम देवा, थाथी सुक्कु, मड़कम हिड़मे और गढ़चिरौली के विजु कोला सहित 55 कामरेड्स शहीद हुए हैं।

अस्वस्थता के कारण पश्चिम-बंग के का. बसंती दी (कोलकाता), ओड़िशा के का. रायसिंग शहीद हुए हैं।

क्रांतिकारी बुद्धिजीवी जिन्होंने भारत के क्रांतिकारी आंदोलन की सेवा में निर्णायक भूमिका निभाये, का. सुंदर मराण्डी (झारखंड एभेन), चालसानी प्रसाद (विरसम-एपी), राममुर्ती (सीएलसी-एपी), सेबास्टेन (सीपीडीआर महाराष्ट्र) जनवादी और आदिवासी हितैषी बीडी शर्मा, तेलंगाना प्रजा फ्रंट के नेता का. मद्धिलेटी, वरिष्ठ कम्युनिस्ट महिला का. अनसुयम्मा, का. कनकय्या सरजी (विरसम), क्रांतिकारी कवि और बुद्धिजीवी का. सतनाम (पंताब) शहीद हुए हैं।

लोकयुद्ध के हिस्से के तौर पर शोषक वर्गों की सत्ता को ध्वस्त कर उत्पीड़ित जनता की सत्ता के रूप में विकसित हो रहे भ्रूण रूप क्रांतिकारी जनताना सरकार की बात करें तो गांव स्तर की सरकारों के अध्यक्ष पूर्वी बस्तर के का. रामधेर सलाम और का. जैन कोरम, बस्तर के का. पोटामी मंगू, दक्षिण बस्तर के कुरसम धर्ममन्ना, जनताना सरकार के उप अध्यक्ष एओबी के का. शंकर, जनताना सरकार के सदस्य दक्षिण बस्तर के मड़ावी कोसल, कवासी मल्लाल, मड़ावी लखमल, पूर्वी बस्तर के सुधराम कश्यप, पश्चिम बस्तर के का. कुंजाम सुक्कु और दरभा के सयनु ने अपनी कुर्बानी दी है।

हमारी केंद्रीय कमेटी इन सब को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करती है। ये सब महान योद्धा थे, जिन्होंने क्रांतिकारी आंदोलन को जारी रखने और आगे बढ़ाने के लिए वर्तमान हालातों में पुलिस, अर्द्ध-सैनिक बलों के अभूतपूर्व हमलों के दौरान अपने बहुमूल्य प्राण न्योछावर किये हैं। वे जनता के नि:स्वार्थ सेवक और शहीद हैं। हमारी केंद्रीय कमेटी विनती करती है कि हम सब और ज्यादा साहस और धैर्य, पहलकदमी और बोल्शेविक इच्छाशक्ति के साथ लड़ें। आवें, इन सबको और इनकी क्रांतिकारी सेवाओं को याद करें। आवें, आने वाले पीढ़ियों के लिए शहीदों के आदर्शों को उपर उठावें और युवाओं को आगे बढ़ावें ताकि वह भारतीय क्रांति में अपनी भूमिका को अच्छी तरह से निभा सके।

सर्वहारा वर्ग के प्यारे सपूत, देश की उत्पीड़ित जनता के साहसिक नेता कामरेड कुप्पु देवराज व वरिष्ठ नेत्री कामरेड अजिता को शत्-शत् लाल-लाल सलाम!

(हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति को ही हम यहां दे रहे हैं।

- संपादकमण्डल, लाल चिनगारी)

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) अपनी केंद्रीय कमेटी के सदस्य कॉमरेड कुप्पु देवराज (रमेश/योगेश/रायन्ना) और वरिष्ठ कार्यकर्ता कामरेड अजिता को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करती है। करीबन चालीस वर्ष तक क्रांतिकारी आंदोलन की सेवा करने वाले कामरेड द`वराज और वरिष्ठ कार्यकर्ता कामरेड अजिता की 24 नवंबर 2016 को एक फर्जी मुठभेड़ में जघन्य हत्या की गयी। अपने प्यारे कामरेड देवराज एवं अजिता के परिवारों के प्रति हम गहरा दुख प्रकट करते हैं। कामरेड देवराज 62 वर्ष के थे और कॉमरेड अजिता 52 वर्ष की थीं. इस निर्मम हत्या की निंदा करने एवं इस तरह के अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाने को देश के अवाम, जनवादियों, देशभक्तों व नागरिकों का हम आह्वान करते हैं। वर्तमान में केंद्र में सत्तारूढ़ ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवादी मोदी सरकार और केरल की सामाजिक फासीवादी सीपीआई (एम) की सरकार ने इस फर्जी मुठभेड़ को अंजाम दिया।

अमर शहीद कामरेड कुप्पु देवराज एवं अमर शहीद कामरेड अजिता

हमारे प्यारे कामारेड देवराज का क्रांतिकारी सफर कुछ इस तरह शुरू हुआ. 1960 के दशक में नक्सलबाड़ी के सशस्त्र किसान संघर्ष की प्रेरणा से कर्नाटक राज्य के किसान और बुद्धिजीवियों ने जनता के बीच में काम करना शुरू किया था, जिनमें सिरहट्टी गांव के कोगानूरु गानेप्पा एक थे। नक्सलबाड़ी संघर्ष की राजनीती से वे गरीब जनता को लैस करने लगे थे। जमींदारों के गुंडों ने उनकी हत्या की थी।

उसके बाद दस वर्ष तक वहां कोई आंदोलन नहीं रहा। बाद में भाकपा (मा-ले)(पीपुल्सवार) का गठन हुआ था. देश भर के क्रांतिकारी कार्यकर्ता एवं लोग इकट्ठे होने लगे, इस तरह 1980 में कामरेड देवराज भी पार्टी के संपर्क में आए। कर्नाटक में क्रमशः अंशकालिक कार्यकर्ता विकसित होकर पार्टी सेल्स में संगठित हुए थे। उनमें से कामरेड देवराज एक सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में उभरकर आए थे। कामरेड देवराज ने अन्य कामरेडों के साथ मिलकर छात्रों, मजदूरों व युवाओं के बीच राजनीतिक व सांगठनिक काम शुरू किया था। दरअसल पार्टी से परिचित होने के पहले से ही कामरेड देवराज ने अन्य कुछ लोगों के साथ मिलकर सर्वहारा वर्ग के बीच क्रांतिकारी राजनीतिक कार्य शुरु किया था। कामरेड देवराज एक कंपनी में मजदूरी किया करते थे। वे शहरी गरीब एवं उत्पीड़ित दलित वर्ग से आये थे। उनके पूर्वज तमिलनाडु से बेंगलुरू गए थे। जब से वे कार्यकर्ता बने थे, तब से उनका घर क्रांतिकारी क्रियाकलापों का केन्द्र बन गया था।

1980-85 के बीच पार्टी सेल्स सक्रिय हो गए थे। शहीद कामरेड चेरुकुरी राजकुमार (आजाद), जिन्हें कर्नाटक राज्य में पार्टी के सांगठनिक कार्य के लिए भेज दिया गया था, के नेतृत्व में देवराज जल्द ही पेशेवर क्रांतिकारी बन गए थे।

1985 तक आठ कार्यकर्ता पेशेवर क्रांतिकारी बने थे, जिनमें कामरेड देवराज अग्रिम पंक्ति में थे। ये पूर्णकालीन कार्यकर्ता बेंगलुरू, कोलार व मैसूर नगरों में मजदूर, छात्र एवं युवाओं के बीच काम करते हुए उनकी विभिन्न समस्याओं को लेकर आंदोलन छेड़ रहे थे। उन्होंने एक सांस्कृतिक संस्था का गठन भी किया गया था, इस सांस्कृतिक संस्था, पार्टी व जन संगठन के कार्यकर्ताओं ने दीर्घकालीन जनयुद्ध और आंध्र प्रदेश, बिहार आदि राज्यों के आंदोलनों के बारे में विस्तृत राजनीतिक प्रचार किया था। इस क्रम में 1985 तक कामरेड आजाद के नेतृत्व में सैद्धांतिक व राजनीतिक एकता के साथ एक नेतृत्वकारी टीम गठित हुई थी, जिसमें कामरेड देवराज महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। केंद्रीय कमेटी में 1985 में उत्पन्न सकंट के समय में कर्नाटक के इस नेतृत्वकारी दल ने सीसी में मौजूद अवसरवादी व विघटनकारी गुट के खिलाफ सक्रिय भूमिका निभाई। कामरेड आजाद के नेतृत्व में कामरेड देवराज एवं साकेत राजन ने इस आंतरिक संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालांकि इन्हें वर्ग संघर्ष का अनुभव ज्यादा नहीं था, लेकिन वे मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद के सिद्धांत, पार्टी की बुनियादी दस्तावेजों, हमारे देश व दुनिया के क्रांतिकारी इतिहास के अध्ययन से लैस होकर सैद्धांतिक व राजनीतिक रूप से मजबूत थे व पार्टी की दीर्घकालीन जनयुद्ध की दिशा के साथ डटे हुए थे। सशस्त्र संघर्ष की राजनीति के रास्ते पार्टी के आगे बढ़ने में उनलोगों का योगदान रहा। उन लोगों के अध्ययन व विघटनकारी गुट के खिलाफ उनके सैद्धांतिक संघर्ष ने राज्य में भविष्य के पार्टी निर्माण के लिए सैद्धांतिक नींव डाली। बाद में उसी नींव ने इस टीम के राज्य कमेटी के रूप में विकसित हाने में भी मदद की। इस टीम ने दमन के दौर में आंध्र प्रदेश राज्य कमेटी का साथ दिया था। इस नेतृत्वकारी टीम की मदद से आंध्र प्रदेश राज्य कमेटी कुछ महत्वपूर्ण कार्यभारों को सफलतापूर्वक संचालित कर सकी, जिसके चलते इन दोनों आंदोलनों के बीच न सिर्फ अच्छे रिश्ते बने बल्कि एक दूसरे की मदद भी हुई।

1987 मे संपन्न पहले राज्य अधिवेशन में कॉमरेड आजाद कर्नाटक राज्य कमेटी सचिव के रूप में चुने गए थे जबकि कॉमरेड साकेत राजन व कुप्पु देवराज इस कमेटी के सदस्य. इस अधिवेशन ने कृषि क्रांति के परिप्रेक्ष्य की रूपकल्पना की। उन्होंने राज्य के असमान सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक परिस्थितियों के मद्देनजर कर्नाटक के उत्तरी मैदानी इलाके जो आंध्र प्रदेश की सीमा से लगा हुआ है, में आंदोलन शुरू किया। आंदोलन को आगे बढ़ाने में नेतृत्व की प्रत्यक्ष भागीदारी के महत्व को कॉ. देवराज ने सटीक समझा था, इसीलिए राज्य कमेटी सदस्य के तौर पर इस देहाती आंदोलन की जिम्मेदारी उन्होंने ली। इस इलाके में एक जमींदार को सजा देकर उसकी जमीन पर कब्जा किया गया था। यहां के संघर्ष दो वर्ष तक जारी रहा। इस दौरान छात्र भी उल्लेखनीय संख्या में सक्रिय हुए थे। बीदर, रायचूर जिलों के किसानों के बीच भी उन लोगों ने काम किया। किसानों को इकट्ठा करके, किसान संगठन का निर्माण कर सामंती विरोधी व राज्य विरोधी संघर्षों का नेतृत्व किया। उसी वक्त कैगा परमाणु केंद्र के खिलाफ संघर्ष सामने आया। उस संघर्ष के जरिए उन्होंने छात्र क्षेत्र में अपने काम का विस्तार किया और बीदर, रायचूर, चित्रदुर्गा, शिमोगा व धार्वाड जिलों में छात्र संगठन बना लिया। कैगा में संघर्ष एवं छात्रों के बीच काम के चलते पार्टी राज्य भर में जनता को परिचित हो गई।

1985-87 में पार्टी में आए संकट के चलते केंद्रीय कमेटी कुछ समय के लिए स्थगित हो गई। राज्यों के आंदोलनों के संचालन के लिए कोई केंद्र नहीं रह गया था। उस समय आजाद और योगेश ने मिलकर कैडरों को मजबूती से बनाए रखने के लिए काफी प्रयास किया। तमिलनाडु के कैडरों को पार्टी के साथ बनाए रखने में भी कॉमरेड देवराज ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1990 में पार्टी ने दूसरे राज्य अधिवेशन का आयोजन किया. इस अधिवेशन में आंदोलनों की समीक्षा की गई। अधि वेशन ने यह महसूस किया कि सामंती विरोधी आंदोलन में जुझारुपन से संबंधित कुछ कमियां हैं। इस अनुभव से सबक लेकर पार्टी को संगठित करने और आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए प्रत्यक्ष नेतृत्व देने का उन्होंने निर्णय लिया। पार्टी में मौजूद गैर सर्वहारा रुझानों को सुधारने के लिए 1993 में राज्य प्लेनम आयोजित की गई। इस प्लेनम में यह कार्यभार लिया गया था कि पार्टी को विकसित करने व आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए जनता की समस्याओं को लेकर उन्हें गोलबंद किया जाए।

कर्नाटक में जब राष्ट्रीयता की समस्या सामने आई, पार्टी ने कन्नडिगों के मुद्दे पर लड़ने की आवश्यकता को समझ लिया था और इसके लिए एक संगठन बनाया था। 1991 में अखिल भारतीय स्तर में पार्टी में दूसरा संकट सामने आया था। इस दौरान कर्नाटक राज्य कमेटी ने अल्पमत गुट के गलत रुझानों का पर्दाफाश करते हुए एक दस्तावेज लिखी थी। उस

अवसरवादी गुट के खिलाफ संघर्ष करने का 1992 में सभी कैडरों का आह्वान किया था। उस आह्वान का मकसद था, पार्टी के सभी कैडर विघटनकारी गुट के बारे में समझें और वैचारिक संघर्ष करें। 1995 में संपन्न अखिल भारतीय विशेष अधिवेशन के पहले आयोजित कर्नाटक राज्य अधिवेशन में देवराज ने राज्य कमेटी के सचिव की जिम्मेदारी ली। अखिल भारतीय विशेष अधिवेशन में कॉमरेड देवराज केंद्रीय कमेटी के वैकल्पिक सदस्य चुने गए थे। 1997 में वे पूर्णकालीन सीसी सदस्य बने थे। उसी समय से पार्टी की कर्नाटक राज्य इकाई में आंतरिक संघर्ष शुरू हुआ था, जिसके चलते आंदोलन के आगे बढ़ने में बाधा उत्पन्न हुई।

2001 में आयोजित पूर्व की पीपुल्सवार पार्टी की 9वीं कांग्रेस में कॉमरेड देवराज फिर से सीसी सदस्य चुने गए थे। उस समय सीसी ने दक्षिण-पश्चिम रीजनल ब्यूरो (एसडब्ल्यूआरबी) गठित किया, जिसका कॉमरेड देवराज सदस्य बने थे। उसी समय परस्पेक्टिव इलाके को बदलने का प्रस्ताव राज्य कमेटी ने सीसी के सामने रखा था। उस प्रस्ताव का अनुमोदन करनेवाली सीसी ने एक पक्की योजना बनायी। पहले कमेटी ने उस इलाके की सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक परिस्थितियों का अध्ययन किया। कॉमरेड साकेत राजन के साथ कॉमरेड कुप्पु देवराज ने 21 वीं सदी की शुरुआत में इस परस्पेक्टिव इलाके में आंदोलन को आरंभ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

जब परस्पेक्टिव इलाके में काम की शुरुआत हुई थी, अवसरवादियों ने यह कहते हुए कि यह सफल नहीं होंगे, उस पर पत्थर फेंकना शुरू किया था, दो पार्टियों के विलय और सीपीआई (माओवादी) की स्थापना के वे खिलाफ थे। ऐसी हालत में कामरेड साकेत राजन दुश्मन के साथ वीरतापूर्वक लड़ते हुए शहीद हुए थे। उनकी शहादत के बाद कामरेड देवराज ने रीजनल ब्यूरो की मदद से उस दक्षिणपंथी गुट के खिलाफ संघर्ष जारी रखा। बहुसंख्यक कामरेड्स पार्टी दिशा के पक्ष में खड़े हो गए। आखिर 2006 में संपन्न राज्य अधिवेशन में उक्त संकट का हल हुआ और अवसरवादी गुट पार्टी छोड़कर चला गया था, उन अवसरवादियों का सामने करने के लिए एक दस्तावेज जिसका नाम 'अवसरवादी कभी क्रांतिकारी द्वंद्वात्मकता को नहीं समझ सकते हैं' को जारी किया गया था। उस दस्तावेज की रचना में कामरेड देवराज की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उसी समय तमिलनाडु के मदुरई और उसके इर्द-गिर्द के जिलों में सशस्त्र गुरिल्ला दस्तों का कामकाज शुरू हो गया था। सशस्त्र संघर्ष के लिए परस्पेक्टिव और कैडरों को तैयार करने में कामरेड योगेश ने प्रमुख जिम्मेदारी निभायी। 2004 में माओवादी पार्टी की स्थापना हुई। सीसी सदस्य के तौर पर नयी पार्टी की स्थापना में कॉमरेड योगेश का योगदान रहा। उसके बाद वे एसडब्ल्यूआरबी का सदस्य बने थे। एकता कांग्रेस में उन्होंने सैद्धांतिक व राजनीतिक योगदान दिया।

2007 में पार्टी ने एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस का आयोजन किया। कांग्रेस ने कामरेड देवराज को सीसी में चुना था। वे एसडब्ल्यूआरबी का सदस्य बने थे। उस वर्ष की आखिरी में और बाद के वर्ष में रीजनल ब्यूरो के अन्य सदस्यों में से कुछ गिरफ्तार हो गए और कुछ शहीद हो गए। कामरेड देवराज ने तमिलनाडु, कर्नाटक एवं केरल तीनो राज्यों के उत्तरदायित्व अपनाए। उस कठिन हालात में अडिग रहकर उन्होनें कैडरों को क्रांतिकारी आन्दोलन में मजबूती से बनाए रखने में उनकी मदद की।

2011 में एसडब्ल्यूआरबी ने अपने अधिकांश आत्मगत शक्तियों को ट्राई जंक्शन एरिया जो कि केरल, कर्नाटक और तमिलनाडु के सरहदी जंगली क्षेत्र है, में केंद्रित करके काम करने का निर्णय लिया था। देश के इस हिस्से में युद्ध क्षेत्र खोलने के लिए कामरेड देवराज सदैव उत्सुक रहते थे। इन तीन राज्यों के विभिन्न इलाकों के बारे में वे निरंतर अध्ययन करते थे। इस तरह ट्राई जंक्शन क्षेत्र में आंदोलन को प्रारंभ करने में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया. जल्द ही इस क्षेत्र के परंपरागत आदिवासी जन समुदायों के बीच पार्टी लोकप्रिय हो गई। पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए ने राजनीतिक-सैनिक अभियान को सफलतापूर्वक संचालित किया। गुरिल्ला दस्तों ने जनता में गहरी पैठ जमायी। इन तीनों राज्यों की सरकारें सतर्क हो गयी। ट्राई जंक्शन का वर्तमान आंदोलन संशोधनवादियों खासकर केरल के संशोधनवादियों के लिए जबर्दस्त आघात है। पार्टी ने वहां सही दिशा दिखाई, जिसमें कामरेड देवराज का सक्रिय योगदान रहा, जब एसडब्ल्यूआरबी में नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम (एलटीपी) संचालित किया गया, कामरेड देवराज ने उसका दायित्व अपने ऊपर लिया और प्रशिक्षण शिविरों को संचालित किया। उस प्रशिक्षण में राज्य स्तर से लेकर सभी स्तरों के कैडर भाग लिए थे। उस प्रशिक्षण द्वारा कैडर अच्छी तरह शिक्षित हुए और आंदोलन की विभिन्न समस्याओं के बारे में स्पष्ट दृष्टिकोण विकसित कर सके थे। इस तरह कामरेड देवराज ने पार्टी कैडरों की राजनीतिक समझदारी बढ़ाने में योगदान दिया।

अन्य क्रांतिकारी कम्युनिस्टों के साथ एकता के लिए कामरेड देवराज ने सक्रिय योगदान दिया। सीसी की तरफ से उन्होंने नक्सलबाड़ी ग्रुप के साथ बातचीत करने की जिम्मेदारी ली थी, जिसके फलस्वरूप नक्सलबाड़ी ग्रुप का पार्टी में विलय हो गया। इसके पहले उन्होंने जनशक्ति ग्रुप के साथ बातचीत का संचालन किया और कुछ कामरेडों को सही दिशा की ओर लाने में सफल हुए। पार्टी और जन संगठनों की पत्रिकाओं के संचालन के प्रति कामरेड देवराज बहुत ध्यान देते थे, बदलते हालात के विश्लेशण से युक्त लेखन के प्रति वे गंभीर रहा करते थे। इस तरह के लेखन के जरिए वे हमेशा संबंधित कमेटियों की मदद करते थे कामरेड देवराज के बारे में और एक महत्वपूर्ण बात है। वर्तमान जन युद्ध के लिए हथियार व गोला बारूद की आपूर्ति करने में उनकी मुख्य भूमिका थी। ग्रेनेड उत्पादन कार्य के संचालन में भी उनका योगदान रहा। देश के क्रांतिकारी आंदोलन को एक नया अनुभव देने की क्षमता पश्चिम घाटी में मौजूद है, इसीलिए केंद्र व राज्य सरकारों ने साजिश रच कर फर्जी मुठभेड़ में एक वरिष्ठ कार्यकर्ता कामरेड अजिता सहित कामरेड देवराज की निर्मम हत्या की।

फर्जी मुठभेड़ में कामरेड देवराज को खोना ट्राई जंक्शन में जनता को संगठित करने के कार्य में लगी पार्टी के लिए बहुत बड़ा नुकसान है। केरल की धरती पर 50 वर्ष पहले शहीद होने वाले वर्घेश और उनकी कुरबानी को जनता कभी भूली नहीं। वह उनके आशयों को जारी रखना चाहती थी, इसीलिए जब पार्टी वहां गयी तब जनता सक्रिय रूप से आन्दोलन में भाग लेने लगी थी। अब वह कामरेड देवराज को कभी नहीं भूलेगी।

कामरेड देवराज उत्पीड़ित वर्ग एवं उत्पीड़ित दलित जाति के थे। वे अंग्रेजी, मलयालम, तमिल, कन्नड़ व तेलुगु और स्थानीय आदिवासी भाषाएं बोलने में कुशल थे। भारत की क्रांति ने एक होनेहर नेता खोया है। उन्होंने वैचारिक व सैद्धांतिक रूप से तीखा आंतरिक संघर्ष किया। उस संघर्ष में वे मजबूत हो गए थे। कम आत्मगत शक्तियों और अपेक्षाकृत कम अनुभव के साथ उन्होंने काफी हिम्मत व दृढ़ संकल्प के साथ क्रांतिकारी आन्दोलन का नेतृत्व किया था। सभी के साथ वे मिल-जुलकर रहते थे। कैडर और जनता में जनवादी माहौल विकसित कर कामरेड देवराज ने उनका विश्वास जीता। इस तरह कामरेड देवराज उनके मन में सदा जीवित रहेंगे। वे नि:स्वार्थ व्यक्तित्व के धानी थे। कमेटी द्वारा जो भी निर्णय लिया जाता था, उसे वे अपना कार्यभार मान लेते थे। भारत की क्रांति में खासकर पश्चिम घाटी और आंध्र प्रदेश, तेलंगाना एवं दंडकारण्य में वे चिरस्मरणीय रहेंगे। उनके आदर्श सदा जीवित रहेंगे। उनकी प्रतिबद्धता, कठिन मेहनत व बलिदान जरूर पार्टी को आगे बढ़ायेगी। लक्ष्य के प्रति कामरेड देवराज की अडिग वचनबद्धता वर्तमान नुकसान से उबरने में कैडर की मदद करेगी। प्रवाह के खिलाफ तैरना कैडरों को उनसे सीखना चाहिए।

उनकी कार्यशैली, इरादा, समर्पण की भावना व हिम्मत पार्टी के सभी कैडरों के लिए आदर्श है। सीसी तमाम पार्टी कैडरों का आह्वान करती है कि वे इस शहीद के आदर्शों को आत्मसात करें। कर्नाटक, तमिलनाडु व केरल राज्यों के कैडरों से कमेटी विशेष रूप से अपील करती है कि वे उनकी महान स्फूर्ति से लैस होकर उनके अधूरे कार्यभार को स्वीकार कर उनके जैसा काम जारी रखें, उनके द्वारा बनाई राह पर चलकर अच्छे कम्युनिस्ट कार्यकर्ता बनें। यही हमारे महान शहीद के प्रति सही श्रद्धांजलि होगी। हम और एक बार उनके कैडरों और परिवार के प्रति दुख और गहरी संवेदना प्रकट करते है।

कामरेडों की मदद से उन्होंने पश्चिम घाटी में लाल झंडे को ऊंचा उठाए रखा था। दमन में जितनी भी बढ़ोत्तरी हो जाए, जितने भी नुकसान हो जाए, क्रांतिकारी आंदोलन आगे बढ़ कर शोषक वर्गों का उन्मूलन करेगी, जनता के राज्य व अधिकार हासिल करेगी, नव जनवादी राज्य की स्थापना करेगी, समाजवाद फिर साम्यवाद की ओर अग्रसर होगी।

अपील

लाल चिनगारी के तमाम पाठकों से अपील है कि वे अपने क्षेत्र में हो रहे तमाम संघर्षों, शहीद साथियों की जीवनी व तस्वीरें, पुलिस जुल्म की घटनाएं आदि हमें जरूर भेजें -सम्पादकमंडल, लाल चिनगारी

क्रान्तिकारी आन्दोलन के उतार-चढ़ावों में दृढ़ता से खड़ा रहकर नेतृत्व करनेवाले केन्द्रीय कमेटी सदस्य कॉमरेड श्रीधर हमें हमेशा प्रेरणा देते रहेंगे!

भाकपा(माओवादी) के केन्द्रीय कमेटी सदस्य और पार्टी के महाराष्ट्र राज्य कमेटी के पूर्व सचिव कॉमरेड श्रीधर श्रीनिवासन (विश्णु, विजय), का 18 अगस्त 2015 के सुबह 9.45 बजे दिल का दौरा पड़ने के कुछ ही मिनटों के बाद शहादत हुआ। पार्टी के नेतृत्वकारी साथियों, सदस्यों और पीएलजीए गुरिल्लाओं के बीच एक माओवादी संघर्ष इलाके में उन्होंने अंतिम सांस ली। वह केवल 57 साल के थे। उनकी मौत काफी आकस्मिक थी क्योंकि उन्हें कोई गंभीर बीमारी नहीं थी और कुछ ही समय पहले हुए एक चिकित्सा जांच में भी उनके स्वास्थ्य में कोई गंभीर समस्या नहीं मिली थी। लेकिन 2007 में उनके गिरफ्तारी के बाद जेल में बिताए साढ़े छह साल के कठिन दौर ने उनके स्वास्थ्य पर प्रभाव डाला। यह उनके अदम्य क्रान्तिकारी उत्साह का ही पहचान है कि स्वास्थ्य की कोई भी चिन्ता उन्हें संघर्ष इलाके में अपने कॉमरेडों से मिलने की कठिन सफर पर निकलने से नहीं रोक सकी, जब 2013 के अन्त में हुई उनकी रिहाई के देढ़ साल बाद आखिरकार उन्हें यह अवसर मिला। इसी सफर के दौरान उनकी शहादत हुई। उस संघर्ष इलाके के कई नेतृत्वकारी साथियों, अलग-अलग कमेटियों से बड़ी संख्या में कॉमरेडों और कई पीएलजीए इकाइयों ने पूरी पार्टी सम्मान के साथ कॉमरेड श्रीधर को अंतिम विदाई दी। नम आंखों से उनको क्रान्तिकारी श्रद्धांजलि पेश किये गये और स्मृति सभा आयोजित की गयी। भारत के नई जनवादी क्रान्ति के प्रति उनके आजीवन योगदान और देश के शोषित जनता के प्रति उनकी सेवा को याद किया गया। उनके कम्युनिस्ट आदर्शों को याद कर दीर्घकालीन जनयुद्ध को आगे बढ़ाते हुए उनके आदर्शों को जिंदा रखने की शपथ ली।

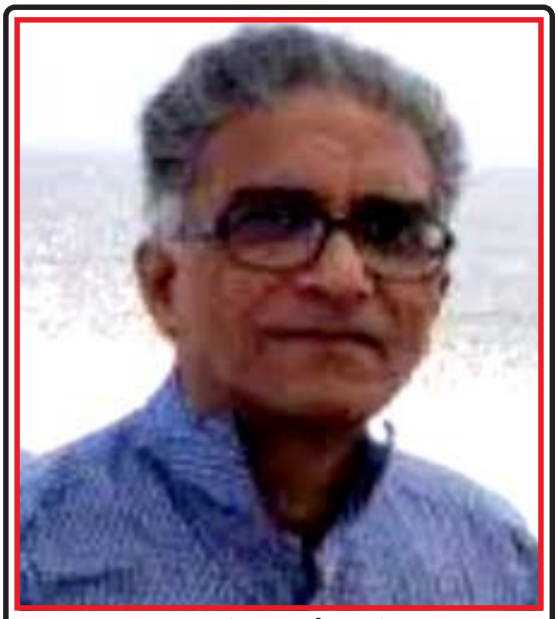

अमर शहीद कामरेड श्रीधर

एक क्रान्तिकारी का जन्म

देश की क्रान्तिकारी वस्तुगत परिस्थिति के एक हिस्से के रूप में क्रान्तिकारी मजदूर वर्ग की पार्टी की मौजूदगी के साथ साथ परिवार में प्रगतिशील मूल्यों और जनवादी वातावरण जैसे सकारात्मक सामाजिक माहौल किसी को एक क्रान्तिकारी के रूप में तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। कॉमरेड श्रीधर एक ऐसे ही परिवार में पले-बढ़े। उनका परिवार अपने दृष्टिकोण में काफी अपारम्परिक था। श्रीधर एक शहरी मध्यम वर्गीय परिवार में पांच भाई-बहनों के बीच सबसे छोटे थे। उनके माता-पिता ने अपने सभी बच्चों में छोटे उम्र से ही पढ़ने की आदत को बढ़ावा दिया। अपने माता-पिता से उत्साहित होकर श्रीधर ने अपने बचपन से ही ज्ञान के प्रति असीम जिज्ञासा विकसित किया और एक उत्सुक पाठक बन गए। अपने बड़े भाई से प्रभावित होकर उन्होंने गणित और विज्ञान, खासकर ज्योर्तिपदार्थ विज्ञान (Astrophysics) के लिए तीव्र उत्सुकता दिखाई। हालांकि उनके माता-पिता अपने बच्चों की पढ़ाई को लेकर काफी चिंतित थे, फिर भी उन्होंने अपने बच्चों को अपने इच्छा के मुताबिक अपना जीवन व्यतीत करने की पूरी आजादी दी। इसलिए अपने भाई-बहनों से एक सम्पूर्ण अलग राह चुनकर जब श्रीधर कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर बम्बई शहर में (वर्तमान मुम्बई) उस समय नये-नये उभर रहे मार्क्सवादी-लेनिनवादी (माले) पार्टी के एक पेशेवर क्रान्तिकारी के रूप में क्रान्तिकारी आन्दोलन में शामिल हुए, तब उनके इस निर्णय का समर्थन नहीं करने के बावजूद उनके परिवार ने उनकी राह में कोई बाधा खड़ी नहीं की। श्रीधर के लम्बे

क्रान्तिकारी जीवन के दौरान उनके परिवार के सदस्य कई अवसरों पर उन्हें मदद करने के लिए आगे आये, जब उन्हें ऐसी मदद की जरूरत थी।

महाराष्ट्र के क्रान्तिकारी आन्दोलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका

महाराष्ट्र और मुम्बई शहर भारतीय क्रान्ति में एक विशेष स्थान रखते हैं। यह शासक वर्गों का एक महत्वपूर्ण आर्थिक केन्द्र है और इसे देश की आर्थिक राजधानी भी कहा जाता है। यहां मजदूर वर्ग का अच्छा-खासा जमावड़ा है। एक तरफ जहां इस राज्य के मजदूरों और किसानों के जुझारू आन्दोलनों का एक महान इतिहास है, वहीं दुसरी तरफ यह जड़ जमाए हुए संशोधनवाद और ब्राह्मणवादी हिन्दु फासीवाद का भी गढ़ रहा है। महाराष्ट्र में जुझारू दलित आन्दोलन और आदिवासी क्रान्तिकारी आन्दोलन का भी गौरवशाली परम्परा रहा है। इस तरह के विशेषताओं के चलते महाराष्ट्र और मुम्बई ने कम्युनिस्ट क्रान्तिकारियों के सामने हमेशा खास चुनौतियां पेश किया है। जब फासीवादी इंदिरा गांधी सरकार द्वारा लागू किए गए आपातकाल के काले बादल मार्च 1977 में हटने लगे, मार्क्सवादी-लेनिनवादी धाराओं के नेतृत्व में चलनेवाले आन्दोलनों सहित देश में राजनीतिक जनान्दोलनों का एक उभार आया। आपातकाल के बाद कि इसी राजनीतिक परिस्थिति में छात्र समुदाय के बीच मार्क्सवाद चर्चा का एक प्रमुख विषय बन गया। नक्सलबाड़ी से प्रेरित होकर बम्बई शहर में कई मार्क्सवादी अध्ययन केन्द्र पनपने लगे। इसी तरह का एक अध्ययन केन्द्र दक्षिण बम्बई के एलफिन्सटन सरकारी कॉलेज में भी बना। श्रीधर इस कॉलेज के दूसरे वर्ष का छात्र था, जो कला में स्नातक डिग्री की पढ़ाई कर रहे थे। वह इस अध्ययन केन्द्र में शामिल हुए। जल्द ही वह मा-ले-मा और मार्क्सवादी-लेनिनवादी राजनीति से गहराई से प्रभावित हुए और न केवल इसमें सक्रिय रूप से भाग लेने लगे बल्कि एक कार्यकर्ता के रूप में अलग-अलग कॉलेजों में छात्रों को संगठित करने लगे। विद्यार्थी प्रगति संगठन (वीपीएस) के बैनर में छात्र गोलबंद होने लगे। 1980 तक आते-आते कई पूर्णकालिक सदस्यों और कार्यकर्ताओं के साथ वीपीएस का संगठन तेजी से बढ़ने लगा। उनके कार्यक्रम को लागू करने के दौरान वीपीएस ने अलग-अलग कॉलेजों में कांग्रेस और शिव सेना के छात्र संगठनों के गुंडों का जुझारू रूप से मुकाबला किया। 1979 में कॉलेज छात्रों द्वारा फीस वृद्धि के खिलाफ बम्बई विश्वविद्यालय के ऐतिहासिक कब्जा आन्दोलन के नेतृत्वकारी कॉमरेडों में श्रीधर भी एक थे। इस क्रान्तिकारी छात्र आन्दोलन के उभार के समय बम्बई शहर और इसके उपनगरीय क्षेत्रों के ज्यादातर कॉलेजों में वीपीएस की इकाईयां थी। वीपीएस के नेतृत्व में जारी छात्र आन्दोलन से प्रभावित होकर गोवा में भी एक जनवादी छात्र संगठन गठित हुआ। श्रीधर ने इस छात्र संगठन का मार्गदर्शन किया। भाकपा (माले) की आन्ध्र प्रदेश प्रादेशिक कमेटी (एपीपीसी) के नेतृत्व में उभरे जगितयाल किसान आन्दोलन से प्रेरित होकर हाल ही में महाराष्ट्र में गठित माले पार्टी की बम्बई सिटी कमेटी 1979 में इसके सम्पर्क में आयी। मई 1980 में नवगठित भाकपा (माले) (पीपुल्स वार) के साथ बम्बई सिटी कमेटी का विलय हो गया।

1970 के दशक के शुरूआत से विश्व पूंजीवादी अर्थव्यवस्था एक संकट के घेरे में आ गया, जो अगले कुछ सालों में और ज्यादा गंभीर होता गया। इस संकट से उबरने के लिए इजारेदारी कॉर्पोरेट घरानों ने दुनियाभर में और ज्यादा आधुनिकीकरण का तरीका अपनाया, जिसके तहत अस्थिर पूंजी (variable capital) में कटौती के लिए आधुनिक मशीनरी व पूंजी केन्द्रित तकनीकों का इस्तेमाल बढ़ाया। इस बदलाव का सबसे ज्यादा असर इन देशों के तथा सभी पिछड़े देशों के मजदूरों पर पड़ा, जिन्हें नौकरी से निकाला गया, मजदूरी में कटौती की गयी और उन्हें ज्यादा मुश्किल परिस्थितियों में काम करने के लिए मजबूर किया गया। विश्व अर्थव्यवस्था में आयी इन बदलावों का प्रभाव भारत के बड़े औद्योगिक केन्द्रों जैसे बम्बई और इसके कपड़ा उद्योग पर भी पड़ा। कुछ बड़े कपड़ा कारखाने जिन्होंने साम्राज्यवादियों के आधुनिक तकनीक और पूंजी के साथ सांठ-गांठ बढ़ाकर आधुनिकीकरण को अपनाये, वो विकसित हुए जबकि बड़ी संख्या में वो कारखाने जो यह बदलाव लाने में असमर्थ थे, वो दिवालियापन का शिकार होकर बंद हो गए और इनकी जमीन उभरते निर्माण (रीयल-इस्टेट) व्यापार की जगह बन गयी। इस बदलाव ने बड़ी संख्या में कपड़ा श्रमिकों को बेरोजगार बना दिया और सभी मजदूरों के बीच हड़कंप मचा दी। मजदूरों ने ट्रेड यूनियनों - खासकर शहर के प्रमुख जुझारू ट्रेड यूनियन के नेता दत्ता सामंत की नेतृत्व वाली ट्रेड यूनियन - में संगठित होकर कारखानों की तालाबंदी (लॉक-आउट), बंद होने और छंटनी के खिलाफ तीखा विरोध किया। इस तरह के

एक उथल-पुथल के दौर में बम्बई शहर में क्रान्तिकारी गतिविधि तेजी से बढ़ने लगी। ये गतिविधि शहर के झुग्गी-झोपड़ियों और मजदूरों के बीच भी व्यापित हुआ। 1981 में नौजवान भारत सभा (एनबीएस) का गठन हुआ, जिसके व्यापक प्रचार और आन्दोलन के गतिविधियों के वजह से यह काफी लोकप्रिय हुआ, जैसे-जैसे सांगठनिक काम का दायरा बढ़ता गया। 1981 में एएमकेयू नाम से एक ट्रेड यूनियन स्थापित किया गया। एएमकेयू और एनबीएस ने 1982 के बम्बई की ऐतिहासिक कपड़ा मिल हड़ताल का पूरी तरह से समर्थन कर उसमें शामिल हुए और कपड़ा मजदूरों व अन्य श्रमिकों के कई जुझारू जनसंघर्षों में भाग लेकर उनके सबसे जुझारू और प्रगतिशील हिस्से का केन्द्र बन गये। कॉमरेड श्रीधर इस आन्दोलन को आगे बढ़ाने में योगदान देनेवाले संगठकों में से एक थे और हड़ताल के समय कई जुझारू कार्रवाईयों में शामिल हुए। उन जैसे उभरते हुए उर्जावान कार्यकर्ताओं को बम्बई के हमारी पार्टी के कुछ दक्षिणपंथी नेतृत्वकारी तत्वों के विरोध का सामना करना पड़ा, जिन्होंने उनके कार्रवाइयों को ''जुझारू अर्थवाद (मिलिटेंट इकोनोम्ज़िम)'' का नाम दिया। फिर भी, कई बड़ी कठिनाइयों का सामना कर बम्बई की कपड़ा मिल हड़ताल समकालीन देश के सबसे बड़े जुझारू संघर्षों में से एक बन गया, जिस पर क्रूर राज्यहिंसा थोपा गया था।

बम्बई के अलावा एएमकेयू के बैनर तले थाने, भीवांडी और महाराष्ट्र के कुछ अन्य औद्योगिक केन्द्रों और इनके आसपास के इलाकों के मजदूर संगठित हुए। बम्बई के कपड़ा मजदूरों के ऐतिहासिक हड़ताल के उभरने के कुछ ही समय पहले जून 1980 में पार्टी के नेतृत्व में गढ़चिरौली में आदिवासी किसान आन्दोलन शुरू हुआ। बम्बई सिटी कमेटी का भाकपा(माले)(पीडब्ल्यू) में विलय होने के बाद दीर्घकालीन जनयुद्ध विकसित करने के रणनीतिक दृष्टि से केन्द्रीय कमेटी के मार्गदर्शन पर महाराष्ट्र के कॉमरेडों ने नागपुर, बल्लरशाह, चन्द्रपुर और इन शहरों के आसपास के ग्रामीण इलाकों में क्रान्तिकारी गतिविधि विस्तार करने के लक्ष्य से एक विदर्भ दृष्टिकोण तैयार किया। इस दृष्टिकोण के तहत पार्टी की महाराष्ट्र राज्य कमेटी ने पेशेवर क्रान्तिकारियों को विदर्भ भेजना शुरू किया। विदर्भ के किसानों, खासकर भूमिहीन और गरीब किसानों के बीच कृषि क्रान्तिकारी राजनीति का प्रचार के लिए वीपीएस ने 'गांव चलो' अभियान चलाया। इसी तरह की एक अभियान में 1980 के दशक के शुरूआत में श्रीध र को उनके 10 या 12 छात्र साथियों के साथ गढ़चिरौली जिले के सिरोंचा में पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। उनके मां ने सुदूर बम्बई से चलकर उन छात्रों को जमानत पर बाहर निकाला। 1984 में गढ़चिरौली जिला के कमलापुर गांव में आयोजित क्रान्तिकारी किसान संगठन की (वर्तमान के दण्डकारण्य आदिवासी किसान मजदूर संघ-डीएकेएमएस) पहली जिला सम्मेलन में भाग लेने के लिए जा रहे श्रीधर कुछ अन्य छात्रों के साथ फिर से गिरफ्तार हो गये।

1985 के शुरूआत में कुछ सैद्धान्तिक-राजनीतिक सवालों तथा सांगठनिक मुद्दों को लेकर पार्टी में अंदरूनी संघर्ष सामने आया, जिसके चलते केन्द्रीय कमेटी की गतिविधि बंद हो गयी। इस परिप्रेक्ष्य में इस गम्भीर समस्या को सुलझाने के लिए पार्टी के राज्य इकाइयों के प्लेनमों के एक भाग के रूप में 1986 में महाराष्ट्र राज्य प्लेनम आयोजित किया गया। इस प्लेनम में रीजनल कमेटियों के कॉमरेडों और महाराष्ट्र के राज्य संयोजक - जो सीसी बहुमत गुट (मेजरिटी ग्रुप) में शामिल थे - के बीच गंभीर मतभेद सामने आये। लगभग इसी समय 1987 के शुरुआत में महाराष्ट्र राज्य इकाई भाकपा(माले)(पीडब्ल्यू) से अलग हो गयी। इसी परिप्रेक्ष्य में सितम्बर 1987 में दूसरी राज्य सम्मेलन आयोजित हुई। इस सम्मेलन ने राज्य संयोजक (केन्द्रीय कमेटी सदस्य) द्वारा पेश किए गए दस्तावेजों को खारिज कर श्रीधर और कुछ अन्य कॉमरेडों द्वारा तैयार किए गए वैकल्पिक दस्तावेजों को पारित किया। पहली बार एक नयी राज्य कमेटी का चुनाव किया गया और श्रीधर इसके सचिव बने। जनसंगठनों का निर्माण और वर्ग संघर्ष को विस्तारित करते हुए इस प्रक्रिया में सामने आनेवाले अगुवा तत्वों को पार्टी में भर्ती कर पार्टी को मजबूत और विस्तारित करना इस सम्मेलन का प्रमुख आह्वान था। इस सम्मेलन ने तय किया कि हालांकि केन्द्रीय कमेटी को विघटित करने का निर्णय गलत था, फिर भी बहुमत या अल्पमत के आधार पर फैसला लेकर अभी एकता के लिए जल्दबाजी में आगे नहीं बढ़ना चाहिए और इसके बजाए भाकपा (माले) (पीडब्ल्यू) के सभी राज्य इकाइयों के साथ दोस्ताना सम्बन्ध बरकरार रखकर काम करना चाहिए। इसने यह भी निर्णय लिया कि अखिल भारतीय क्रान्तिकारी छात्र संघ (एआईआरएसएफ) और क्रान्तिकारी संस्कृति का अखिल भारतीय लीग (एआईएलआरसी) जैसे सर्वभारतीय जनसंगठनों

के इकाई के रूप में मौजूद राज्य के जनसंगठनों को सक्रिय कर राज्य में इन संगठनों को मजबूत करना चाहिए, लेकिन पार्टी की इस अंदरूनी संकट ने महाराष्ट्र राज्य के कॉमरेडों को बुरी तरह से प्रभावित किया और 1980 के शुरूआत के जुझारू संघर्षों के दौरान नक्सलबाड़ी क्रान्तिकारी राजनीति के तेजी से बढ़ रहे प्रभाव से प्रेरित होकर आन्दोलन में शामिल होनेवाले कई साथियों के मनोबल को कमजोर किया। इनमें से कुछ हतोत्साहित होकर आन्दोलन से दूर चले गये। कुछ पार्टी सदस्यों ने जबकि पूरी तरह से आन्दोलन से नाता तोड़ लिया, कुछ अन्यों ने अपने गतिविधि के स्तर को कम कर दिये। इसके कारण खासकर बम्बई के जनसंगठनें कमजोर हुई। यही कारण है कि आन्दोलन के विकास और विस्तार के लिए राज्य सम्मेलन के बाद तैयार किए गए ज्यादातर योजनाओं को लागू करना इस माहौल में असंभव हो गया। इसके बावजूद श्रीधर और कुछ अन्य साथियों ने अपने मनोबल को टूटने नहीं दिया, पार्टी लाइन के साथ मजबूती से खड़े रहे और सभी गलत रूझानों के खिलाफ संघर्ष किये। इस कठिन दौर में भी दृढ़ता के साथ खड़े रहने वाले कॉमरेडों के कतार में श्रीधर शामिल थे। पार्टी में बने रहनेवाले कॉमरेडों ने बहाव के खिलाफ तैर कर पार्टी का बचाव करने का निर्णय लिया और साहस के साथ राज्य में आन्दोलन का निर्माण करने के लिए कठिन प्रयास किए।

आन्दोलन निर्माण की नयी कोशिशें

1980 के दशक के आखिरी भाग में महाराष्ट्र राज्य कमेटी को एक नयी परिस्थिति का सामना करना पड़ा जब आत्मगत शक्तियां कमजोर हुई, गढ़चिरौली क्रान्तिकारी आदिवासी आन्दोलन पर राज्य हिंसा बढ़ने लगी और मार्गदर्शन के लिए कोई केन्द्रीय कमेटी मौजूद नहीं थी। इस परिस्थिति में महाराष्ट्र के कॉमरेडों को विदर्भ दृष्टिकोण इलाके में अपनी ग्रामीण गतिविधियों को बंद करने के लिए मजबूर होना पड़ा। महाराष्ट्र राज्य कमेटी और बचे हुए कॉमरेडों ने पार्टी की अंदरूनी संकट के बाद ग्रामीण आन्दोलन का निर्माण कर आधार इलाका निर्माण करने के लक्ष्य से नासिक जिला को केन्द्र में रखकर पश्चिमी महाराष्ट्र ग्रामीण दृष्टिकोण तैयार किया। यह इलाका रणनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था और कई अनुकूल पहलूएं यहां मौजूद थी। 1980 के अंत में यहां राजनीतिक-सांगठनिक काम शुरू हुआ और लगभग 4-5 सालों तक जारी रहा। हालांकि गम्भीर प्रयास किये गये, जनाधार को प्राथमिक स्तर पर बढ़ाया गया और कुछ हद तक अनुभव हासिल किये गये, लेकिन बढ़ते राज्य दमन के चलते जनता के बीच काम करने के लिये जिम्मेदार कुछ कॉमरेडों की गिराफ्तारी, दो राज्य कमेटी सदस्यों के इस इलाके से वापस हटने और इस काम में नियुक्त करने के लिये बलों की कमी की वजह से इस आन्दोलन को जारी नहीं रखा जा सका।

कॉमरेड श्रीधर ने कोयला खदान मजदूरों के आन्दोलन व अन्य आन्दोलनों के मार्गदर्शन के उद्देश्य से 1992 में अपने गतिविधियों का मुख्य केन्द्र विदर्भ इलाके में बदली किए। पुलिस मुखबिरों को सजा देने के लिए उन्होंने विदर्भ के शहरी इलाकों में दो एक्शन टीमों का नेतृत्व किया। कुछ महत्वपूर्ण राजनीतिक-सांगठनिक निर्णय लेने और 1986 के प्लेनम में उठाए गए कुछ महत्वपूर्ण सवालों को सुलझाने के लिए सिम्तबर 1992 में महाराष्ट्र राज्य का एक विशेष प्लेनम आयोजित किया गया। इस प्लेनम में प्रतिनिधियों ने कुछ नेतृत्वकारी कॉमरेडों द्वारा पेश किए गए वैकल्पिक दस्तावेजों को खारिज कर राज्य कमेटी द्वारा पेश किए गए दस्तावेजों को पारित किया।

भाकपा(माले)(पीडब्ल्यू) से अलग होने के बाद पहली बार 1988 के अन्त में आन्ध्र प्रदेश राज्य कमेटी (एपीएससी) के प्रतिनिधिमंडल और महाराष्ट्र के प्रतिनिधिमंडल ने दोनों राज्य इकाइयों के बीच दोबारा सम्बन्ध स्थापित किया। उसके बाद से दोनों इकाइयों के बीच मित्रतापूर्ण सम्बन्ध बरकरार रखे गए। सितम्बर 1990 में आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु राज्य इकाइयों के प्रतिनिधियों को लेकर एक केन्द्रीय प्लेनम आयोजित की गयी, जिसमें भाकपा (माले) (पीडब्ल्यू) की केन्द्रीय सांगठनिक कमेटी (सीओसी) का चुनाव किया गया। महाराष्ट्र के राज्य कमेटी के साथ बनाए गए सम्बन्धों को सीओसी ने आगे बढ़ाया। तीन सालों तक कायम रहनेवाले मित्रतापूर्ण सम्बन्धों के इस दौर में दोनों पक्षों के बीच क्रान्तिकारी आन्दोलन के विकास के बारे में रिपोर्टें साझा किए गए, सीसी संकट के बारे में तथा महाराष्ट्र के कॉमरेडों द्वारा अवसरवादी सीसी बहुमत गुट के खिलाफ चलाए गए सैद्धान्तिक संघर्ष के बारे में और अंदरूनी संघर्ष तथा सही कम्युनिस्ट क्रान्तिकारियों के एकीकरण के मामले में सीसी अल्पमत गुट द्वारा किए गए गलतियों के बारे में गहराई से चर्चा की गई। इन विषयों पर सहमति के वजह से महाराष्ट्र

राज्य कमेटी 1994 में भाकपा (माले) (पीडब्ल्यू) में एकीकृत हो गए। कॉमरेड श्रीधर इस पूरे प्रक्रिया के हिस्सा थे और महाराष्ट्र राज्य कमेटी के साथ-साथ उन्होंने इसमें एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

महाराष्ट्र राज्य कमेटी 1994 में भाकपा (माले) (पीडब्ल्यू) की राज्य इकाई बन जाने के बाद 1995 में हुए अखिल भारतीय विशेष सम्मेलन (एआईएससी) के पहले सभी राज्य इकाइयों का राज्य सम्मेलन आयोजित किया गया। पार्टी की अतीत के व्यवहार का संश्लेषण करने और आन्दोलन की नयी कार्यभार तय करने में इस विशेष सम्मेलन ने एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इस सम्मेलन में महाराष्ट्र के प्रतिनिधियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। खासकर उन्होंने 1987 में सीसी के विघटन के गलत प्रक्रिया के बारे में जोर देकर अपनी दलील रखी और पूरी पार्टी ने उनके मत को स्वीकार किया। इसमें भी कॉमरेड श्रीधर की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण थी।

2001 में भाकपा (माले) (पीडब्ल्यू) की 9वीं कांग्रेस आयोजित हुई। भारतीय क्रान्तिकारी/मा-ले आन्दोलन के इतिहास में इस कांग्रेस का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। आन्दोलन को आगे बढ़ाने में यह एक महत्वपूर्ण कदम था क्योंकि पार्टी के पूरे इतिहास का इसने सही समीक्षा किया, दीर्घकालीन जनयुद्ध की रणनीति और कार्यनीति को इसने संवर्धित किया और नये कार्यनीतियों और कुछ नीतियों को निर्धारित किया। कांग्रेस के चर्चाओं में कॉमरेड श्रीधर ने सक्रियता से भाग लिया। कांग्रेस में उभरे वाम-अतिवादी लाईन को हराने में और इस संघर्ष के एक भाग के रूप में पार्टी लाईन को सम्बर्धित करने में उन्होंने एक सकारात्मक भूमिका निभायी। इस कांग्रेस में श्रीधर को केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में चुना गया। चार राज्यों - महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु और केरलम - को लेकर कांग्रेस के तुरन्त बाद 2001 में पार्टी की नवगठित दक्षिण-पश्चिम रीजनल ब्यूरो (एसडब्ल्युआरबी) के भी वह सदस्य बने।

2001 में आयोजित राज्य सम्मेलन ने विदर्भ दृष्टिकोण को संवर्धित कर इसे तुरंत लागू करने को राज्य के नये परिस्थिति में पार्टी के मुख्य कार्यभारों में से एक के रूप में पारित किया। इस दृष्टिकोण को लागू करने में सहायक होने के लिए पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने बालाघाट-गोन्दिया डिवीजन की जिम्मेदारी महाराष्ट्र इकाई को सौंप दिये। उस समय तक इस इलाके के काम को दण्डकारण्य गुरिल्ला जोन के भाग के रूप में दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी (डीकेएसजेडसी) मार्गदर्शन करती थी। राज्य कमेटी सचिव और केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में श्रीधर ने इस ग्रामीण आन्दोलन के मार्गदर्शन की जिम्मेदारी सम्भाली। इस डिवीजन में उस समय आन्दोलन गंभीर राज्य दमन और कुछ गंभीर अन्दरुनी समस्याओं का सामना कर रहा था। कार्यकर्ताओं के मनोबल को बढ़ाने तथा आन्दोलन को मजबूत करने के लिए श्रीधर ने भरसक कोशिश की। यहां काम करते समय अपने खराब स्वास्थ्य की परवाह न करते हुए उन्होंने कभी भी एक नेता के हैसियत से कोई विशेष छूट या सुविधाओं की मांग नहीं की। वह कार्यकर्ताओं के सभी गतिविधियों में भाग लेने और सभी जिम्मेदारियों में हिस्सेदारी करने की कोशिश करते थे, जिसकी वजह से उन्होंने अपने साथियों का दिल जीत लिया और उनके प्रिय बन गए। इस इलाके में आन्दोलन को बरकरार रखने तथा इसे क्रमबद्ध रूप से आगे बढ़ाने की उन्होंने यथासंभव प्रयास किए।

सिम्बतर 2004 में भाकपा (माले) [पीडब्ल्यु] और एमसीसीआई के बीच ऐतिहासिक विलय होकर एकीकृत भाकपा (माओवादी) का जन्म हुआ। क्रान्ति का नेतृत्व करने के लिए नयी पार्टी की एक केन्द्रीय कमेटी (सीसी) गठित किया गया और श्रीधर को इसके एक सदस्य के रूप में चुना गया। हालांकि उस समय महाराष्ट्र में आन्दोलन कमजोर थी, लेकिन वाजपेयी नेतृत्वाधीन एनडीए सरकार की विध्वंसकारी नवउदारवादी नीतियों के खिलाफ बढ़ रहे असंतोष, ब्राह्मणवादी हिन्दू फासीवाद के बढ़ते खतरे आदि ने काफी प्रतिरोध उत्पन्न किया और राज्य में कुछ सामाजिक आन्दोलनों को हमारी पार्टी के करीब लाये। भाकपा (माओवादी) का उदय तथा मुम्बई प्रतिरोध (एमआर-2004) की सफलता ने देश की और खासकर महाराष्ट्र की क्रान्तिकारी आन्दोलन को नयी ऊर्जा से भर दी। सितम्बर 2006 में जमींदारों के नेतृत्व में जातिवादी ताकतों द्वारा खैरलांजी में एक दलित परिवार की क्रूर हत्या के बाद लगभग सभी राजनीतिक पार्टियों ने जब दलितों का विश्वासघात किया, हमारी पार्टी ने दलितों का पूरी तरह से समर्थन किया और जाति उत्पीड़न व भेदभाव से मुक्ति की सही राह को उनके सामने रखा। इसके वजह से महाराष्ट्र के दलितों के सामने माओवादी आन्दोलन एक आशा की किरण बनकर उभरा। इस परिस्थिति में वे जातिवाद-विरोध ी जुझारू संगठन के परचम तले गोलबन्द हुए जो जल्द ही

राज्य के कई हिस्सों में फैल गयी। इस संगठन की इकाइयां कई जिलों में बनने लगे और काफी संख्या में दलित छात्र और युवा इस आन्दोलन से जुड़ गए। इन सभी कारणों ने इस सदी के शुरुआती वर्षों में महाराष्ट्र में क्रान्तिकारी आन्दोलन की विकास के लिए एक अनुकूल परिस्थिति तैयार किए।

उमड़ रहे जनान्दोलनों पर लगाम कसने, धार्मिक अल्पसंख्यकों का दमन करने तथा क्रान्तिकारी आन्दोलन को कुचलने के लिए शासक वर्गों ने पोटा जैसे दमनकारी कानूनों को लागू कर पूरे देश में फासीवादी तरीकों का इस्तेमाल तेज कर दिया। माओवादी पार्टी के नेतृत्व को निशाना बनाया गया, क्रान्तिकारी जन संगठनों को प्रतिबन्धित किया गया और संघर्ष इलाकों में सलवा जुडूम व सेन्द्रा जैसे फासीवादी अभियानों को विभिन्न रूपों में शुरु किया गया। इस देशव्यापी तीव्र राज्य दमन के बीच ही 2007 के शुरूआत में भाकपा (माओवादी) की एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। श्रीधर ने कांग्रेस के वाद-विवादों व चर्चाओं में सक्रिय रूप से भाग लिया, इनमें अपने मतभेदों को साफ-साफ पेश किया, कांग्रेस में सामने आये वाम-अतिवादी लाईन की आलोचना की और इस गलत लाईन को हराने में योगदान दिया। कांग्रेस ने उन्हें पार्टी के केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में चुना। बाद में वह पार्टी की एसडब्ल्डुआरबी के सदस्य भी बने। कांग्रेस के सफल आयोजन और देश में क्रान्तिकारी आन्दोलन के आगे बढ़ने से बैचेन होकर साम्राज्यवादियों, खासकर अमेरिकी साम्राज्यवाद, के इशारे पर राज्य ने माओवादी आन्दोलन पर पहले से भी ज्यादा भयानक रूप से हमला करना शुरु किया। पूरे देश में अलग-अलग स्तर के कई नेतृत्वकारी साथी इस हमले में शहीद हुए या गिरफ्तार हुए। महाराष्ट्र में भी यह प्रतिक्रान्तिकारी आक्रमण चलाया गया। आन्दोलन को कमजोर होता देख कॉमरेड श्रीधर को बहुत दुख हुआ। 2007 के मध्य में उनकी खुद की गिरफ्तारी महाराष्ट्र के आन्दोलन के लिए एक बड़ा नुकसान था।

गिरफ्तारी और जेल जीवन

18 अगस्त 2007 की देर रात को मोस्साद जैसी एपीएसआईबी और मुम्बई पुलिस की खुंखार नक्सल-विरोधी दल ने एक संयुक्त अभियान में कॉमरेड श्रीधर को उनके गुप्त ठिकाने के सामने से गिरफ्तार किया। एपीएसआईबी, नक्सल-विरोधी दल और केन्द्र व कई राज्यों के विभिन्न खुफिया संस्थाओं के लगातार और तीव्र पूछताछ व मानसिक यातनाओं का कई दिनों तक उन्हें सामना करना पड़ा। कुछ महीनों के बाद जब उन्हें अवसर मिला तो श्रीधर ने पूछताछ सत्रों, गिरफ्तारी और पूछताछ के तरीकों, पूछताछ में उपयोग किए गए नये तकनीकों और उपकरणों, दुश्मन द्वारा उनके निशाने में रहनेवाले लोगों का खुफिया जानकारी इकट्ठा करने और पीछा करने के तरीकों आदि का विश्लेषण कर पार्टी को भेज दिये। दुश्मन के कार्यनीतियों को और भी बेहतर तरीके से समझने में इसने पार्टी की मदद की। महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, गुजरात आदि के पुलिस ने - जो झूठे मामले दर्ज करने में माहिर है - 60 से भी ज्यादा मामले उनके खिलाफ दायर किए। इतनी बड़ी संख्या में झूठे आरोप थोपकर राज्य ने उनके बंदी जीवन को जितना संभव उतना लंबा खींचने की भरपूर कोशिश की। ऐसी ही एक फर्जी मामले में झूठे सबूतों के आधार पर श्रीधर को दोषी साबित कर 6 साल की सजा देने में भी वे कामयाब रहें। उन्होंने अपने बहन को भेजे चिट्टियों में बंदी जीवन की घुटन को और जेल की परिस्थिति के बारे में साफ-साफ लिखा करते थे। इस तरह की एक चिट्टी में उन्होंने लिखा, ''इस बंदी जीवन का सबसे भयानक हिस्सा है आजादी और स्वतंत्रता का खोना। मैं इन चीजों को पहले भी महत्व देता था लेकिन इन्हें खोने के बाद मेरे लिए इनका महत्व कम-से-कम 1000 गुणा बढ़ गया है। लेकिन मैं परेशान नहीं हूं और अपने मनोबल को टूटने नहीं दिया हूं। मैं जेल जीवन को सीखने के एक अवसर के रूप में देख रहा हूं (हालांकि संभव होता तो मैं इस अवसर को खुशी से छोड़ देता)। जेल में कई तरह के दिलचस्प लोग मिलते हैं - खासकर उस तरह के लोग जिनको मेरे जीवन ने सहज ही सम्पर्क में लाये - ड्रग व्यापारियों, बलात्कारियों, छोटे-मोटे चोर-उचक्कों, अंतर्राष्ट्रीय स्मगलरों और माफिया सरदारों और कई सारे गरीब, असहाय और ज्यादातर बेगुनाह लोगों को भी जिनका एकमात्र गुनाह था गरीबी। जेल का जीवन बाहर के समाज और जीवन का लगभग हुबहू नकल है - फर्क केवल एक बंद माहौल का और शायद समाज का एक ज्यादा घनीभूत रूप का ही है। अमीरों और गरीबों, शोषकों और शोषितों, हिंसा व विसंगतियों के साथ-साथ अच्छाइयों और महानताओं - ये सभी यहां बारिकी से मौजूद हैं। इसलिए मैं यह कल्पना नहीं कर सकता कि जेल कभी भी एक सुधारगृह का भूमिका निभा सकता है जैसे कि जेल के दीवारों में लिखे

बड़े-बड़े नारे दावा करते हैं। एक गुनाहगार कैसे सुधर सकता है, अगर वही परिस्थितियां जिन्होंने उसे गुनाह की जिंदगी में ढकेल दिया, वही परिस्थितियां रात-दिन जेल के चारदीवारियों के अंदर भी ज्यादा तीव्रता से तैयार होता रहता हैं?''

कॉमरेड श्रीधर ने मुक्ति के लिए इंतजार करते हुए उनके साथ जेल में बंद युवा कार्यकर्ताओं को शिक्षित और प्रेरित करने का काम जारी रखा। बिना थके उन्होंने अपने समय को किताबें पढ़ने और घरेलू व अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति का अध्ययन करने के लिए उपयोग किए। वे अलग-अलग इस्लामपंथी कार्यकर्ताओं के साथ बातचीत करते थे और उनके आन्दोलन को समझने की कोशिश करते थे। सुबह का समय विभिन्न जेलों में बंद कॉमरेडों को लम्बी चिट्ट्यां व राजनीतिक नोट्स लिखने में बीतता था। वे और उनके साथी उनके आरोप पत्रों को गहराई से अध्ययन करते थे, नोट बनाते थे और उनके वकीलों को केस की तैयारी में मदद करते थे। जेल में रहने के समय वे बन्दियों के जमानत के लिए और छोटे-छोटे सुविधाएं हासिल करने में मदद करते थे। नियमित शारीरिक कसरत के जरिए अपने आप को स्वस्थ रखने के लिए वह कड़ी मेहनत करते थे।

श्रीधर और महाराष्ट्र के अन्य कॉमरेडों ने राजनीतिक बन्दियों के रूप में उन्हें मिलनेवाले न्यायपूर्ण अधिकारों और अन्य बन्दियों के अधिकारों के लिए जेल के अंदर वर्ग संघर्ष चलाए। इसके लिए जेल के अन्य साथियों के साथ उन्होंने कई जेल संघर्षों में भाग लिया और कुछ भूख हड़ताल भी किये। इसी प्रक्रिया में उन्होंने कुछ अन्य कॉमरेडों के साथ मिलकर भारतीय न्याय व्यवस्था, दण्डसंहिता (आईपीसी) और सीआरपीसी आदि के बारे में अध्ययन किया और अपने झान को और विस्तृत किए। उनके लम्बे जेल जीवन ने भारत जैसी एक अर्ध-औपनिवेशिक अर्ध-सामंती देश की न्याय और दण्ड व्यवस्था के विशेषताओं के बारे में करीबी से समझने का अवसर दिया और वह इसके एक ऐसी गंभीर अध्ययन में जुट गये जो बहुत कम लोग ही करते हैं। इस तरह उन्होंने जेल में बिताए समय का सही उपयोग करने की कोशिश की। फिर भी वह रिहा होने के लिए तरसते थे। वर्ग संघर्ष के प्रमुख इलाकों में अपने कॉमरेडों से मिलने के लिए वे बहुत जल्दी में थे। अपने वकील को लिखे एक पत्र में उन्होंने कहा, ''जेल के अंदर बैठकर अंधे धृतराष्ट्र की तरह युद्ध को देखते रहना और युद्ध की जानकारी के लिये परोक्ष स्त्रोतों पर निर्भर होकर वेताबी से इन्तजार करना बहुत ही हताश करनेवाली परिस्थिति है। आशा करता हूं कि समय रहते ही मैं बाहर आकर जनता के हित में अपना नगण्य योगदान देने में सक्षम हो सकूंगा। दूर आकाश में युद्ध के काले बादल मंडरा रहे हैं और वहां बारिश बरसना भी शुरू हो गया है। केवल कुछ ही समय की बात है जब ये बादल हमें इन शहरी इलाकों में भी अपने घेरे में ले लेंगे और उसके जहरीले बूंदों से हमको भी भींगा देंगे - मुझे तो कम-से-कम इस काल-कोठरी में बैठकर यही दिखाई देता है।''

कॉमरेड श्रीधर को साढ़े छह साल के कारावास के बाद 2013 में जेल से रिहा किया गया। वर्ग संघर्ष के इलाकों में जल्द से जल्द पहुंचने का उनकी इच्छा थी। लेकिन उच्च स्तर के सरकारी निगरानी, उनके फिर से गिरफ्तार होने के खतरे और इन इलाकों में जारी गंभीर दमन के वजह से उनको इस यात्रा के लिए डेढ़ साल और ज्यादा इंतजार करना पड़ा। इस इंतजार के समय को उन्होंने घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति से अपने को अवगत करने के लिए उपयोग किया। खासकर उन्होंने क्रान्तिकारी आन्दोलन की तथा दुश्मन की बदलती परिस्थितियों के बारे में साफ तौर पर जानने की कोशिश की और देश के बुद्धिजीवियों, लेखकों और विभिन्न शोषित तबकों के सोच-विचार के बारे में जानने की कोशिश की। हाल के समय में बढ़ रहे ब्राह्मणवादी हिन्दू फासीवाद का भी उन्होंने अध्ययन किया। इसके अलावा, केन्द्रीय कमेटी के सामने रखने के लिए उन्होंने जेल रिपोर्टें और कुछ ठोस सुझाव तैयार किए। इस तरह की विस्तृत तैयारियों और आन्दोलन के भविष्य के बारे में ऊंचे सपनों के साथ उन्होंने 2015 में एक संघर्ष इलाके की ओर अपनी कठिन यात्रा शुरू की। इसी यात्रा के दौरान 18 अगस्त 2015 को उन्होंने अंतिम सांस ली।

एक आदर्श कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी

1970 के दशक के अंतिम दौर से लेकर 2006 तक एक छात्र कार्यकर्ता के रूप में अपनी राजनीतिक जीवन शुरू करते हुए एक पेशेवर क्रान्तिकारी, राज्य कमेटी सदस्य, महाराष्ट्र राज्य कमेटी सचिव और केन्द्रीय कमेटी सदस्य के तौर पर कॉमरेड श्रीधर ने विभिन्न पार्टी जिम्मेदारियों को अलग-अलग स्तर पर निभाते हुए ढाई दशक से भी ज्यादा समय तक कारगर तरीके से पार्टी का नेतृत्व करने की

कोशिश की। आन्दोलन के हर एक महत्वपूर्ण पड़ाव और उतार-चढ़ावं में वह दृढ़ता से खड़े रहे और पार्टी लाइन का मजबूती से रक्षा करते हुए उसे रचनात्मक ढंग से लागू करने की कोशिश की। विश्व समाजवादी क्रान्ति को सफल बनाने के लिए मा-ले-मा को विश्व सर्वहारा का एकमात्र वैज्ञानिक सिद्धान्त के रूप में उन्होंने ऊंचा उठाए रखा। जब पार्टी के केन्द्रीय और राज्य स्तर पर गलत सैद्धान्तिक और राजनीतिक रूझानों ने अपने सर उठाये, उन्होंने इनके खिलाफ संघर्ष किये और इनसे उभरते हुए आन्दोलन को आगे बढ़ाने में योगदान दिये। आन्दोलन ने खासकर महाराष्ट्र में जब प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना किया तब भी वह डटकर खड़े रहे। केन्द्रीय कमेटी और निचली कमेटियों के बैठकों में तथा अन्य कॉमरेडों के साथ चर्चाओं के दौरान वह अपने मत को साफ-साफ रखते थे और गैरजरूरी चर्चाओं व वाद-विवादों में अपना समय जाया नहीं करते थे। व्यापक पढ़ाई, सर्वहारा अनुशासन, दृढ़ता, वचनबद्धता, सरलता, हंसमुख मिजाज और अपने कॉमरेडों के साथ सम्बन्धों में गर्मजोशी - इस तरह के व्यक्तिगत गुणों से उन्होंने हमारे सामने एक मिसाल खड़ा किया। अपने स्वास्थ्य की समस्याओं के बावजूद पार्टी द्वारा दिए गए कोई भी जिम्मेदारी को सीखने की भावना के साथ पूरा करने में वह कभी भी नहीं हिचकिचाते थे। उनके लम्बे क्रान्तिकारी जीवन के ज्यादातर समय व प्रयास महाराष्ट्र के शहरी इलाकों में पार्टी संगठन और मजदूर वर्ग, छात्र, युवा, जातिविरोधी संगठनों आदि को विकसित करने के तरफ ही केन्द्रित था। इसलिए शहरी आन्दोलन के विकास में उनकी भूमिका का पार्टी के लिए विशेष महत्व रहेगा। इस तरह दशकों की राजनीतिक-सांगठनिक काम के जरिए उन्होंने परिपक्वता हासिल की और एक आजमाये हुए क्रान्तिकारी नेता के रूप में उभरे।

एक महत्वपूर्ण समय में कई सालों तक कॉमरेड श्रीध र को कैद में रखकर क्रान्तिकारी आन्दोलन में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेने से रोकने में दुश्मन की कामयाबी के बावजूद हमारी पार्टी के सर्वोच्च कमेटी के एक सच्चे सदस्य के रूप में वह बन्दी जीवन में हमेशा बाहर के आन्दोलन के विकास के बारे में सोचते थे। इसमें कोई आश्चर्य नहीं की जेल से बाहर आने तक आन्दोलन में उनकी भूमिका के बारे में वर्तमान समय के लिए एक अच्छी योजना का खाका उनके दिमाग में तैयार हो चुका था। ठीक उसी समय जब वह दुश्मन के चंगुल से निकलकर अपनी आजादी हासिल कर पाये थे और भारतीय क्रान्ति में एक ऊंचे स्तर पर योगदान देने के स्थिति में पहुंचे थे, तभी मौत ने उन्हें हमारे बीच से क्रूरता से छीन लिया।

दुनिया में सभी लोग अपने लिए जीते हैं, लेकिन कुछ ही लोग ऐसे होते हैं, जो अपने बारे में या अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के बारे में बिना सोचे समाज के बहुसंख्यक लोगों के लिए, व्यापक शोषित जनता के लिए और पूरी मानवता के लिए जीते व मरते हैं। हालांकि यह बात अब तक के सभी वर्ग विभाजित समाजों पर लागू होते है, लेकिन वर्तमान के युग में, जब साम्राज्यवादी संस्कृति और मूल्यों के प्रभाव से बढ़ रहे आत्मकेन्द्रिता, स्वार्थ और व्यक्तिवाद का वर्चस्व है, यह बात और भी ज्यादा प्रांसगिक हो जाती है। कॉमरेड श्रीधर जैसे लोग हमें कम ही मिलते हैं जो शोषित जनता के और उनके मुक्ति संघर्ष के लिए अपने जीवन को उत्सर्गित करते हैं। यह उतना महत्वपूर्ण नहीं कि किसी का जन्म किस वर्ग, जाति, राष्ट्रीयता या लिंग में हुआ हो। महत्वपूर्ण यह है कि किस लक्ष्य के लिए वह जीता व मरता है और क्या वह इस लक्ष्य के लिए अपने जीवन के एक छोटे समय के लिए संघर्ष करता है या अपने आखिरी सांस तक इसके लिए संघर्ष करता है। कॉमरेड श्रीधर ने अपने जीवन से इस बात का मिसाल खड़ा किया है। साढ़े तीन दशकों तक उन्होंने एक वचनबद्ध क्रान्तिकारी का जीवन बिताये, महाराष्ट्र और भारत में नई जनवादी क्रान्ति की विकास के लिए बिना थके काम किए, इस राह पर आये सभी कठिनाईयों से गुजरे और इसी राह पर अपनी जीवन न्योछावर कर उच्चतम कुर्बानी दी। कॉमरेड श्रीधर आज हमारे बीच न होते हुए भी अपने कॉमरेडों, परिवारजनों और दोस्तों के बीच अपनी यादें छोड़ गए हैं। उनको जाननेवाले सभी लोग उनके इन यादों को संजोए रखेंगे। उनके काम और उनकी यादें शोषितों को तथा उनके मुक्ति संघर्ष को हमेशा प्रेरित करते रहेंगे। पूरी पार्टी, पीएलजीए और क्रान्तिकारी जन संगठनों के तरफ से केन्द्रीय कमेटी कॉमरेड श्रीधर को उनकी शहादत पर क्रान्तिकारी श्रंद्धाजलि पेश करती है और उनके सर्वहारा आदर्शों, मा-ले-मा के प्रति उनकी आजीवन प्रतिबद्धता तथा क्रान्तिकारी संघर्ष के दीर्घकालीन राह पर सभी तरह के कठिनाइयों का सामना करने की उनकी दृढ़ संकल्प से सीख लेकर समाजवाद और साम्यवाद के परचम को ऊंचा उठाए रखने की शपथ लेती है।

बुजुर्ग कम्युनिस्ट साथी मेघ राज (प्रोफेसर) को शत्-शत् लाल सलाम!

पंजाब राज्य से संबंधित उम्रदराज, वरिष्ठ कामरेड मेघ राज, 78 साल की उमर तक, क्रांति की सेवा कर हम सबसे हमेशा के लिए विदा हो गये। का. मेघ राज, जिन्हें पार्टी में 'ज्ञान' के नाम से जाना जाता था, पूरे पंजाब के कैडरों में, क्रांतिकारी व जनवादी जन सगठनों में प्रोफेसर के नाम से जाने जाते थे। वे पिछले 7 सालों से प्रकिंसन बिमारी से पीड़ित थे। अचानक ही, इस बिमारी का गंभीर दौरा पड़ने से दिनांक 4-10-2016 को उनकी मृत्यु हो गई।

कामरेड मेघ राज (प्रोफेसर) का जन्म 13 अप्रैल, 1938 को पंजाब के नाभा शहर में माता शामवति और पिता मदन लाल के घर में हुआ था। वैसे उनका पैतृक गांव तो 'कोटड़ा' कोड़िया वाला था। प्रोफेसर जी के माता और पिता बहुत इमानदार और मेहनती थे। उनके माता पिता ने उन्हें बहुत ही उच्च जीवन मूल्य विरासत में दिये थे। प्रोफेसर जी बताते थे कि उनकी माता जी अपने बच्चे को कहती थी ''अगर किसी की चीज को हाथ भी लगाया तो काट के रख दूंगी।'' उनके माता पिता बेशक गरीब थे, पर वह अपनी दस अंगुलियों की कमाई से ही घर चलाये। अपने बच्चों को भी दस अंगुलियों से मेहनत कर जीवन निर्वाह करना सिखाये। उम्र भर इस शिक्षा को प्रोफेसर जी अपनी जुबान से हम सब के सामने दोहराते रहते थे।

प्रोफेसर हमेशा ही पढ़ाई में अव्वल रहे। 17 साल की उम्र में उन्होंने जे.बी.टी. पास कर ली थी। पर कम उम्र की वजह से जिला शिक्षा अधिकारी ने उन्हें मजाक किया था 'काका अभी तो खेल, 18 से पहले नौकरी नहीं मिलेगी'। पर क्योंकि वह मैरिट में आये थे, तो उसी साल उनकी नियुक्ति अध्यापक के रूप में हो गई। वह देर रात तक बच्चों को पढ़ाते थे। इस वजह से इलाके में उनका सम्मान होने लगा था। यह सब 1955 की बातें है। आगे पढ़ने के लिए उन्होंने 1961 में अपनी नौकरी छोड़ दी। 1962-64 तक भटिंडा के राजेंदरा कॉलेज से बीए की। उसी समय उन्होंने छात्र संगठन पंजाब स्टुडेंट यूनियन (पी.एस.यू.) में काम करना शुरू किया। साथ ही साथ प्रगतिशील साहित्य का अध्ययन शुरू किया, जो तमाम उम्र जारी रहा। साथ ही मार्क्सवाद का अध्ययन भी शुरू किया।

1966 में उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगड़ से एम.ए. (अंग्रेजी) करते समय पी.एस.यू. की राज्य कमेटी में काम करते रहे। 1966 की महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति का उन पर बहुत प्रभाव पड़ा। मई 1967 में बंगाल के नक्सलबाड़ी से भूमिहीन गरीब किसानों का हथियारबंद संघर्ष शुरू होकर देश के कोने-कोने में फैलने लगा। पुराने सच्चे कम्युनिस्ट कैडरों के बिना, देशभर के किसान मजदूर, नौजवान, छात्र, अध्यापक आदि सब इस संघर्ष में आने लगे। इसी चढ़ाव वाले पर परीक्षा से भरे दौर में का. मेघ जी भी आन्दोलन का हिस्सा बने और अपनी आखिरी सांस तक इस इन्कलाबी लहर से जुड़े रहे।

1969-71 के दौरान दुश्मन द्वारा क्रातिकारियों के झूठे इन्काउन्टर करने और अति दर्जे के पुलिसिया जुल्मों के कारण और अलग-अलग ग्रुपों के आपसी मतभेदों के चलते एक ग्रुप के नेतृत्व द्वारा दूसरे ग्रुप के साथ ताल-मेल करना बहुत ही मुश्किल कार्य होता था। लेकिन प्रोफेसर जी की इमानदारी और विश्वासनीयता के कारण दूसरे दोनों ग्रुपों के नेतृत्व द्वारा अब तक संपर्क करने के दरवाजे खुले रहते थे। वह पंजाब कम्युनिस्ट क्रांतिकारी कमेटी (PCRC) के सदस्य बने। इस ग्रुप की राज्य कमेटी के 1981 तक सदस्य रहे। 1975 में इंदिरा गांधी द्वारा थोपे गए आपातकाल के दौरान व मोगा शहर से पुलिस द्वारा पकड़ लिये गये। अलग-अलग थानों में और पूरे राज्य में सबसे कुख्यात अमृतसर इन्टैरोगेशन सेन्टर में उन पर जुल्म किये गये। इस दौरान ही उनका एक कान पूरी तरह खराब हो गया। पूरी उम्र वह कम सुनने की समस्या से जूझते रहे। पर इन्कलाबी आन और शान की बात है कि दुश्मन प्रोफेसर से कुछ भी नहीं जान पाया। ऐसे कितने ही इम्तिहानों से प्रोफेसर जी सफल होकर निकले थे। यही वजह थी कि इलाके के गुण्डे-बदमाश भी उनके सामने सिर नहीं उठाते थे। 1982 में उनके संगठन में लाइन के मुद्दे पर तीखे मतभेद उभर आए। उनके विचार नेतृत्व से नहीं मिलते थे। नतीजतन संगठन के दो टुकड़े हो गये। प्रोफेसर नये संगठन के नेतृत्वकारियों में लगभग दो साल तक रहे।

उनके जीवन में कई उतार-चड़ाव आये। पर उनका विश्वास हमेशा मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद पर कायम रहा। उन्होंने कभी भी आम पारिवारिक जीवन को स्वीकार नहीं किया था।

पिछले 20 साल से वह ऑल इंडिया लीग फॉर रेवल्युशनरी कल्चर के केन्द्रीय कमेटी सदस्य थे। पंजाब के क्रांतिकारी संगठन 'इन्कलाबी सभ्याचार केन्द्र' के वह राज्य प्रधान भी थे। पंजाब का यह केन्द्र क्रांतिकारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए लगातार काम कर रहा है।

प्रोफेसर बहुत अच्छे अनुवादक थे, उन्होंने मशहूर चीनी उपन्यास 'चमकता लाल तारा' का अंग्रेजी से पंजाबी में बेहतरीन अनुवाद किया। वह संगठन के लिए अंग्रेजी से

पंजाबी और पंजाबी से अंग्रेजी अनुवाद भी करते थे। पंजाब व देश स्तर की पत्रिकाओं में वह राजनीतिक और संस्कृतिक मुद्दों पर लिखते रहे। राजनीतिक कार्य के दौरान दर्जनों राजनीतिक दस्तावेज समय-समय पर तैयार किये।

अपने पूरे जीवन काल में उन्होंने सैकड़ों परिवारों व व्यक्तियों के घरेलू-निजी मामलों को भी बहुत ही सूझ-बूझ से हल करवाया। बहुत सारे लोगों की जिन्दगी को बेहतर बनाया।

प्रोफेसर बहुत अच्छे अध्यापक थे। गुप्त जीवन के दौरान भी छात्र उनके पास गुप्त जगहों पर पढ़ने आते थे। उन्होंने अंग्रेजी और गणित में गहरी महारत हासिल की थी। उनका व्यवहार और अध्यापन इतना अच्छा होता था कि छात्र उन्हें अपना गुरू मानते थे।

वे राजनीतिक शिक्षक भी थे, उनके द्वारा तैयार किये गये कार्यकर्ता आज भी अलग-अलग संगठनों, फ्रंटों पर अपनी जिम्मेदारी निभा रहे है।

रूस, चीन और अन्य समाजवादी देशों में प्रतिक्रांतियां होने के कारण और बहुत सारे देशों में क्रांतियां उतार पर होने के कारण का. मेघ राज जोरदार रूप से यह मानते थे कि पार्टी को वैचारिक-राजनीतिक लाईन के अंग के तौर पर सांस्कृतिक क्षेत्र को पर्याप्त अहमियत देनी चाहिए। नये सांस्कृतिक मूल्यों वाले नये मनुष्य की शुरू से ही तैयारी किये बिना कोई राजनीतिक आंदोलन सुदृढ़ होकर, बड़ी छलांगें लगाती हुई अंतिम जीत तक नहीं पहुंच सकती। अगर पहुंच भी जाए तो उस जीत को बरकरार नहीं रखा जा सकता। इसलिए उन्होंने पिछले कुछ सालों में सांस्कृतिक क्षेत्र पर गंभीर अध्ययन भी किया, लिखा भी और संघर्ष का झंडा भी बुलंद किया। वह चाहते थे कि नेतृत्व से कैडर तक और जन आन्दोलन के घेरे में आने वाले लोगों का शुरू से ही सांस्कृतिक विकास हो ताकि आंदोलन ठोस नींव पर खड़ी हो और आगे बढ़े।

कामरेड मेघ राज उच्च मूल्यों वाला जीवन जिए। पूरी उम्र सर्वहारा जीवन शैली और कार्यशैली अपनाए। 1969 से 1989 तक उनका प्रति माह खर्चा 30 रू. से शुरू हो कर 100 रू. तक ही पहुंचा था।

कामरेड मेघ राज हमेशा नक्सलबाड़ी के रोशन लाल झण्डे को ऊपर उठाए रखे। उन्हें जन युद्ध और नवजनवादी क्रांति पर पक्का विश्वास था। अपने जीवन का बड़ा हिस्सा वह खेत मजदूरों, किसानों, नौजवानों, छात्रों व महिलाओं को संगठित करने में लगाये।

पार्टी द्वारा सौंपी गई हर जिम्मेदारी को वह बखूबी निभाये। पार्टी उनके द्वारा क्रांति के प्रति निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका का सम्मान करती है। हमारी पार्टी को अपने कामरेड मेघ राज पर गर्व है। उनके द्वारा नव जनवादी भारत के सपने को पूरा करने का प्रण करती है।

पार्टी महसूस करती है कि उनके अंतिम समय पार्टी उनका ध्यान नहीं रख पाई। अति दुखदायी व दर्द भरे आखिरी दिनों में उनकी दोनों पुत्रियों ने उन्हें संभाला। आन्दोलन में उनके दोस्तों ने भी उनकी सेवा व देख-रेख में अपना योग्दान दिया, पार्टी उनका धन्यवाद करती है। कामरेड मेघ राज द्वारा खाली की गई जगह को भरने के लिए पार्टी दृढ़ संकल्प है।

अमर शहीद कामरेड सुशील बुड़ को लाल-लाल सलाम

पोड़हाट सबजोन के अतर्गत ग्राम जिलिंगटू पंचायत टोमडेल थाना गोईलकेरा, प्रखण्ड गुदड़ी, जिला प. सिंहभूम का रहने वाले कामरेड सुशील बुड़ वर्ष 2009 से ही भाकपा (माओवादी) पार्टी का सक्रिय समर्थक रहा और वर्ष 2009 से ही गांव किसान कमेटी का अध्यक्ष भी रहा। वे अपने गांव के किसान कमेटी व महिला संगठन के साथियों को हमारे संगठन का विस्तार करने हेतु नेतृत्व करने में अहम भूमिका निभाये तथा सभी ग्रामीण जनता के साथ अच्छा व्यवहार के साथ करते थे। एवं हर काम में ग्रामीणों को साथ देता था

अमर शहीद कामरेड सुशील बुड़

इसलिए आस-पास के जनता सुशील बुड़ से बहुत खुश थे और पार्टी का हर काम को पहल के साथ करता था चाहे पार्टी के लिए हों चाहे व्यवस्था करने के मामले में हो या दवा, कपड़ा व्यवस्था करने की बात हो अपना जिम्मा को अच्छी तरहसे पालन करता थे इसी कारण ही पीएलएफआई ने 5 नवम्बर, 2016 दिन रविवार की शाम 5बजे मंगरा लुगुन विरकेला गांव के 3 लोग को लेकर आया और गितिल उली गांव से वापस जाते समय सुशील बुड़ को गोली मारकर हत्या कर दिया।

अमर शहीद कामरेड पन्तोष हेम्ब्रम उर्फ निर्मल को शत्-शत् लाल सलाम

अमर शहीद का. पन्तोष हेम्ब्रम उर्फ निर्मल उम्र-34 वर्ष, ग्राम-कोचागोड्डा, थाना-पीरटांड़, जिला-गिरिडीह (झारखण्ड) के स्थायी निवासी थे। वे दिनांक 17 अप्रैल, 2014 को बोकारो जिला के गोमिया थाना अन्तर्गत लुगू पहाड़ के डोम्बा चढ़ाई में पीएलजीए द्वारा बारूदी सुरांग विस्फोट के बाद पुलिस और पीएलजीए के बीच 9:30 बजे से 11:30 बजे तक के बीच भीषण मुठभेड़ में युद्ध के मैदान में अदम्य साहस के साथ दुश्मनों से लड़ते हुए शहीद हो गये। दुश्मनों की गोली लगने के बाद आधा घण्टा तक ही हमलोग के साथ रहे, उसके बाद हम सभी साथियों को छोड़कर वे अकेले इस दुनिया से सदा के लिए चल बसे। वो अपने प्राण को बलिवेदी पर चढ़ाकर इतिहास के पन्नों में अपना नाम शहीदों की सूचि में अंकित कर गये। हमारे प्रिय का. पन्तोष उर्फ निर्मल एक आदिवासी गरीब परिवार में जन्मे थे। ये पिता-श्री सीताराम हेम्ब्रम एवं माता-श्रीमती देवी के पुत्र थे। वे चार भाईयों में सबसे बड़े थे, पत्नी के अलावे इन्हें 3 लड़की है। 1990 से ही वे पार्टी के साथ जुड़कर पार्टी के काम ईमानदारी से करते आये थे। पीएलजीए में कई साल रहे, इनकी ईमानदारी और वफादारी को देखते हुए 2003 में पार्टी की एक महत्वपूर्ण विभाग की मुख्य जिम्मेवारी इनको सौंपी गई थी। वे पार्टी संपत्ति को काफी हिफाजत करके सुरक्षित रखने में माहिर थे, वे आज तक एक सूई तक का नुकसान होने नहीं दिये थे। घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रहने के चलते वे चौथी कक्षा तक ही पढ़ाई कर पाये थे।

अपने गांव के अगल-बगल के दबंग-रंगदारों, सूदखोर, जमीन्दार, महाजनों के जुल्म-अत्याचार को इन्होंने बर्दाश्त नहीं किया और पार्टी में आ जुड़े। पहले एलजीएस में रहकर काम किये, इसके बाद एरिया कमेटी मेम्बर बने। इनकी सक्रियता को देख एक मत्वपूर्ण जिम्मेवारी इन्हें सौंपी गयी। इस जिम्मेवारी को देख दुश्मनों को रहा नहीं गया, वे दुश्मनों की आंखों की किरकिरी बन गये। इसी बीच 2012 में दुश्मनों ने इनको गिरफ्तार कर सप्ताह दिन तक गुप्त ठिकानों में रखकर कड़ी पूछताछ व थर्ड डिग्री तक टॉर्चर किया। रूपया व नौकरी देने का काफी लालच देकर पार्टी की गोपनीयता दुश्मन ने उगलवाने का लाख कोशिश किया, लेकिन दुश्मनों के लालच को इन्होंने थूक दिया और पत्थर के समान डट गया, तब पीट-पीटकर अधमरा कर जेल भेज दिया गया। फिर भी दुश्मनों के सामने पार्टी की गोपनीयता उगलने को तैयार नहीं हुआ, अन्ततः पार्टी को सुरक्षित रखा। जब पार्टी की तरफ से सुनियोजित योजना बनाकर गिरिडीह जेल के कैदी वाहन पर पीएलजीए द्वारा हमला कर 36 कैदियों को निकाला गया था, उसमें का. पन्तोष भी थे। छूटकर आने के बाद पार्टी से सम्पर्क कर Z1 में अस्थायी प्लाटून के मेम्बर बने। इन्होंने पार्टी की नियम-नीति, अनुशासन, संविधान और दिये गये आदेश व निर्देशों को ईमानदारी व वफादारी पूर्वक सहर्ष पालन किया। का. पन्तोष कम्युनिस्ट गुणों से भरे विचार-व्यवहार व शिष्टाचार के आदर्श गुणों से लैश थे, साथ ही अनेक छोटी-बड़ी लड़ाई जैसे-प्रतिक्रियावादी-सफाया, जोतदार-महाजनों के खिलाफ लड़ाई, रेड, एम्बुशों में शामिल होकर दुश्मनों के खिलाफ लड़ने में बहादूर योद्धा के समान अग्रिम पंक्ति में जाकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले एक वीर सपूत थे। नीति में अडिग व्यवहार में लचीला होकर 1990 से 17 अप्रैल, 2014 तक पार्टी के कामों में उन्होंने अपना बहुमूल्य योगदान दिया। इतना ही नहीं, वे सीधा सरल जीवन व्यतीत करने में से एक अव्वल दर्जे के थे। उनके आदर्श गुणों को पीएलजीए के सभी कतार, कमाण्डर और नेतृत्वकारी कभी भूल नहीं सकते। शहीद कामरेड पन्तोष तुम्हारा जगह अभी भी रिक्त है, उसे भरपाई करने के लिए पार्टी और पीएलजीए को बहुत समय लगेगा। तुम्हारे शहादत से अपूरणीय क्षति हुई है, जिससे पूरे पीएलजीए के कतार, कमाण्डर व नेतृत्व सभी मर्माहत हुए हैं।

शहादत दिवस के अवसर पर शपथ लें 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' को परास्त करें!

बीजे सैक भाकपा (माओवादी)

ykrgkj ftyk >kj[k.M d fNiknkgj Fkkuk vrxr djeMhg xko d ikl fLFkr c<k unh d fdukj n'eu }kjk ?kkr yxkdj fd; x; vpukd gey e 'kghn ;k)k dkejM 'ky'k] ukxUn] euk t] g"k] ldjk] euk t ,o vufi;k dk 'kr&'kr yky lyke!

केन्द्र व झारखण्ड–छत्तीसगढ़ राज्य सरकारों द्वारा संयुक्त अभियान के नाम पर संघर्षरत जनता व उनका नेतृत्व करने वाली भाकपा (माओवादी) के उपर भीषण दमन चलाया जा रहा है। इसके तहत केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बल कोबरा, आईआरबी, एवं छत्तीसगढ़ राज्य पुलिस बल तथा झारखण्ड राज्य पुलिस बल के साथ झारखण्ड की कुख्यात जगुआर के संयुक्त बलों द्वारा छत्तीसगढ़–झारखण्ड बॉर्डर क्षेत्र में बूढ़ा पहाड़ को लक्ष्य कर अभियान चलाया जा रहा था। उसी बीच दुश्मन के तमाम घेराव–दमन का मुकाबला करते हुए हमारी पार्टी के ''कोयल–शंख जोनल कमेटी'' व 'इआरबी कम्पनी' के द्वारा एक सैनिक प्रशिक्षण कैम्प का सफल अयोजन इसी इलाके में किया गया था।

सैनिक प्रशिक्षण की समाप्ति के तत्पश्चात विभिन्न इलाके के साथी अपने–अपने इलाके में जाने के लिए 22 नवम्बर 2016 को ही निकले, संभवतः कोवर्ट के माध्यम से साथियों को अपने–अपने इलाके में जाने की खबर दुश्मन तक पहुंच चुकी थी। प्रशिक्षण कैम्प से कुछ दूर जाकर खाना बनाकर खाने के बाद साथियों ने रात्रि–विश्राम किया, 23 नवम्बर को सुबह 6 बजे उठकर कुछ दूरी चलकर बूढ़ा नदी के किनारे रूककर रोल–कॉल करके डेरा डाला गया और सभी सेक्शन के साथी अपने–अपने आर्क में खाना बनाने लगे और सभी सेक्शन से दो–दो साथी को करमडीह गांव से रिपोर्ट और कुछ खाद्य–सामग्री लाने के लिए जाना तय हुआ, कुल 10 साथी को गांव जाना था। इसी बीच 6 साथी जल्दी ही यानी सुबह 7ः 30 बजे ही तैयार होकर नदी पार कर जूता पहन रहे थे कि पहले से ही घात लगाये दुश्मन एकदम नजदीक से ताबड़तोड़ गोलियां की बौछार कर दी। जिसमें 6 साथी मौके पर ही शहीद हो गये। दुश्मन ने साथियों को सम्भलने व गोली चलाने का भी मौका नहीं दिया। इधर कुछ सेक्शन में भी दुश्मन ने अचानक हमला कर दिया, जिसमें रिट्रीट होते समय सेक्शन पोस्ट में ही कॉमरेड अनुप्रिया को गर्दन में गोली लगने से वह भी तुरंत शहीद हो गई। हम सिर्फ अनुप्रिया का ही शव को अपने कब्जा में ले पाये और उन्हें क्रांतिकारी तौर तरीकों से श्रद्धांजलि देते हुए अंतिम संस्कार कर पाये।

दुश्मन के इस हमले में हमारे सात प्यारे कॉमरेडों ने अपने अनमोल जान की कुर्बानी दी। इन शहीद कॉमरेडों में कॉमरेड शैलेश उर्फ दीपक उर्फ श्यामसुन्दर सिंह खरवार (जेडसी सदस्य), कॉमरेड नागेन्द्र उर्फ चेता यादव (एसजेडसी सदस्य/प्रोटेक्शन टीम का डिप्टी कमाण्डर/एल.जी.एस सदस्य), कॉमरेड हर्षु उर्फ हर्षनाथ (एसी सदस्य/एक कमाण्डर के गार्ड), कॉमरेड मनोज उरांव (एसी सदस्य/प्रोटेक्शन टीम के सदस्य), कॉमरेड सुकरा खड़िया (एसी सदस्य/एलजीएस सदस्य), कॉमरेड मनोज महतो (पीएलजीए के साधारण सदस्य) और एक प्रोटेक्शन टीम की महिला कॉमरेड अनुप्रिया (सेल सदस्य) है।

आज की परिस्थिति में इन कॉमरेडों की शहादत हमारे लिए बहुत ही नुकसानदेह है। इस पूरे घटना क्रम में हमारे साथियों, खासकर नेतृत्व साथियों की गलती भी सामने आयी है। उस इलाके में दुश्मन का अभियान लगातार चलते रहता है। हमारा प्रशिक्षण कैम्प चल रहा था, यह भी दुश्मन जानता था। हमारी गतिविधियों को दुश्मन जानता था और दुश्मन अपने खुफिया नेटवर्क/कोवर्ट के माध्यम से हमारे पीएलजीए का पुख्ता समाचार पाकर 22 नवम्बर की रात को ही रास्ते में घात लगाकर बैठा था, लेकिन हमारे साथियों को इसकी जानकारी नहीं थी। घटना के दिन सुबह जहां डेरा डाला गया, उसके अगल–बगल जांच भी नहीं किया गया। जबकि दुश्मन हमारे साथियों की सारी गतिविधियों पर नजर रख रहा था। साथ ही साथ दुश्मन हमारे आने–जाने के सारे रास्ते को भी जानता था। इन्हीं गलतियों से दुश्मन को एक अच्छा मौका मिला और हमें भारी नुकसानों का सामना करना पड़ा। हमें अपने सात बहादूर योद्धाओं को खोने के साथ–साथ इस घटना में हमारे पीएलजीए के दो एस.एल. आर, एक इन्सास, और तीन .315 बोर की रायफल एवं सैकड़ों कारतूस दुश्मन के हाथ में चला गया। इन तमाम शहीद कॉमरेडों को कोयल–शंख जोनल कमेटी भावभीनी विनम्र श्रद्धांजलि पेश करती है और अपने पाठकों को आह्वान करती है कि वे इन कॉमरेडों के अधूरे कामों व सपनों को साकार करने के लिए सभी स्तर के कमेटियों व व्यक्तियों में विभिन्न रूपों में मौजूद गैर सर्वहारा रूझानों को दूर करते हुए अपनी पार्टी को हर स्तर से मजबूत करें, तभी सच्चे अर्थों में श्रद्धांजलि होगी। इन कॉमरेडों की जीवनियां संक्षिप्त रूप से इस प्रकार है–

dkejM 'ky'k mQ nhid mQ ';kelqUnj flg [kjokj

कॉमरेड शैलेश का जन्म 34 साल पहले झारखण्ड राज्य के लातेहार जिला अंतर्गत मनिका थाना के सरदमदाग गांव में एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। इनके माता-पिता के लिए कॉमरेड शैलेश बहुत ही प्यारा बेटा था। अभी इनके एक भाई और दो बहनें हैं। इनका पार्टी में आने के पहले ही विवाह हो चुका था एवं इनको एक बेटी व दो बेटा है। गरीबी के कारण गांव के ही सरकारी प्राथमिक विद्यायल सरदमदाग में 5वीं क्लास तक ही पढ़ाई किये। कॉमरेड शैलेश बचपन से ही हंसमुख-मिलनसार स्वभाव के थे, इसके चलते गांव के हर लोगों के साथ अच्छा लगाव रहता था। इनका गांव-घर इलाके में 90 के दशक में क्रांतिकारी गुरिल्ला दस्ते द्वारा सशस्त्र किसान आंदोलन चल रहा था और इनका गांव पार्टी का किला ही बन चुका था। इसलिए इनके गांव में दस्ते का लगातार आना-जाना लगा रहता था, जब भी दस्ता आता तो कॉमरेड शैलेश अपने दोस्तों के साथ दस्ता के पास जरूर आ जाते और दस्ते के लोगों को खिलाने-पिलाने से लेकर हर तरह का मदत करते थे। जिससे दस्ते के लोगों से क्रांतिकारी संबंध बढ़ता ही गया और क्रांतिकारी आंदोलन के प्रति समझदारी भी इनके अन्दर बढ़ता ही गया और अंततः ये 2009 में अपने माता-पिता एवं भाई-बहनों का तथा पत्नी-बच्चों की जिन्दागी की परवाह न करते हुए अपने सिर में लाल कफन बांध कर लोकल गुरिल्ला दस्ता में शामिल हो गए। ये दस्ते के कमाण्डर का हर आदेश का बखूबी पालन करते थे और सैनिक मामलों में इनका बहुत तेजी से विकास होने एवं जनता के बीच भी अच्छा पकड़ रहने के चलते इन्हें बहुत जल्द-जल्द प्रमोशन भी मिलता गया। 2012 में 'सैक कम्पनी' बनने के दौरान इन्हें 'सैक कम्पनी' में काम करने की जिम्मेदारी मिली एवं कम्पनी में रहते समय ही सबजोन स्तर दिया गया। 'सैक कम्पनी' टूटने के बाद इन्हें 41 नंबर पीएल गठन के समय पीएल डिप्टी कमाण्डर भी बनाया गया। हट्टा-कट्टा शरीर एवं बोझ उठाने वाले शैलेश अपने पास एलएमजी रखते थे। ये कई छोटी एवं बड़ी कार्रवाईयों में शामिल रहे थे, पिपरवार, बालूमाथ शहर कार्रवाई के अलावे धरधरिया एम्बुश, सतनदी एम्बुश में इनकी अग्रणी भूमिका रही है। 2014 में पीएल 41 का कमाण्डर एक लड़ाई में शदीद हो जाने के बाद इन्हें ही पीएल कमाण्डर नियुक्त किया गया। 41 नंबर पीएल टूटने के बाद भी ये किसी न किसी फौजी युनिट का कमाण्डर ही रहे। इन्हें 'कोयल-शंख जोनल' की तृतीय प्लेनम में जोनल स्तर का दर्जा मिला और जोनल कमाण्ड का सदस्य में भी इन्हें रखा गया। 2016 में जोनल प्लेनम के बाद सैनिक प्रशिक्षण में इनका नाम पहला नंबर में था, वहीं प्रशिक्षण सामाप्ति के तत्पश्चात अपने इलाके लौटते समय इनकी शहादत हो गई।

लगभग 8 वर्ष के अल्प-अवधि में ही अपनी क्रांतिकारी जिन्दागी में दृढ़ संकल्प के साथ काम करते हुए कॉमरेड शैलेश अपने आपको एक विश्वसनीय कमाण्डर के तौर पर साबित किये। आज की कठिन परिस्थिति में इन्हें खोना 'कोयल-शंख जोन' के आंदोलन के लिए बड़ा नुकसान है। इनके घर का नाम श्यामसुन्दर सिंह खरवार था, पार्टी में आने के बाद दीपक एवं शैलेश नाम दिया गया था। कॉमरेड शैलेश सहित कइयों शहीदों द्वारा स्थापित कम्युनिस्ट मूल्यों व आदर्शों को अपनाकर आगे बढ़ते हुए नुकसानों से उबरेंगे।

कॉमरेड शैलेश अमर रहे!

dkejM ukxUn mQ pirk ;kno

कॉमरेड नागेन्द्र का जन्म 19 वर्ष पहले झारखण्ड राज्य, लातेहार जिला के चन्दवा थाना अंतर्गत बेलंगा गांव में एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। इन्होंने अपने गांव के ही स्कूल में 7वीं कक्षा तक पढ़ाई की थी। अपने माता-पिता के एक बेटी और तीन बेटों में ये सबसे छोटे थे। इसी कारण अपने माता-पिता के साथ-साथ सभी भाई एवं बहन का इनको बहुत प्यार मिलता था। चंचल मन, फुर्तिला शरीर वाला कॉमरेड नागेन्द्र जनता एवं पार्टी से भी सबसे अधिक प्यार पाता था। इनके गांव-घर के इलाका में 90 के दशक से ही क्रांतिकारी आंदोलन शुरू हो चुकी थी। इनके गांव में भी पार्टी का गहरा प्रभाव था। कॉमरेड नागेन्द्र बचपन से पार्टी के साथियों से सम्पर्क रहने के चलते पार्टी के प्रभाव में रहते हुए ही बड़ा हो रहा था। ये 13 साल के उम्र में ही अपने माता-पिता को बिना बताये ही घर से भागकर पीएलजीए में शामिल हो गये थे। इनके माता-पिता घर लाते पर पुनः वे भागकर पीएलजीए में आ जाते थे, अपने से ये एक बार भी घर नहीं गए, खुद इनके माता-पिता एवं भाई-बहन मिलने आते थे। घर में रहते समय अर्थात् बचपन से ही पार्टी के

प्रभाव में रहने के चलते पीएलजीए के हर साथी के आदेशों का पालन करते थे एवं किसी भी साथियों द्वारा कोई भी काम जिम्मा देने से बहुत जल्दी पूरा करते थे। हर कामों के साथ-साथ अध्ययन, पीटी ड्रिल बड़े ही दिलचस्पी से करते थे। हमारी पार्टी के सभी नेतृत्व कमाण्डरों के भरोसेमंद साथी थे, सभी साथियों को उम्मीद था कि कॉमरेड नागेन्द्र एक अच्छा अनुशासित कमाण्डर बनेगा। ये सैनिक मामलों में तनिक भी नहीं हिचकिचाते, हर लड़ाई में जाने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। कॉमरेड नागेन्द्र का पार्टी सदस्यता उम्र होते ही इन्हें पार्टी सदस्यता दी गई एवं इन्हें 2016 में सबजोन स्तर का दर्जा दिया गया। कॉमरेड नागेन्द्र गद्दार नकुल यादव की प्रोटेक्शन टीम में सेक्शन कमाण्डर था एवं नकुल का गार्ड भी था। 2016 के सैनिक प्रशिक्षण कैम्प में भी इन्होंने प्रशिक्षण लिया। कामरेड नागेन्द्र हमेशा हंसते हुए बिना हिचकिचाहट के बड़ों व छोटों के साथ घुल-मिलकर रहता था। हालांकि इन्हें जनता के बीच जाने का बहुत ही कम समय मिलता था, लेकिन उसने जनता के हृदयों में भी हमेशा के लिए अपना स्थान सुनिश्चित बना लिया था। 'कोयल-शंख जोनल कमेटी' कॉमरेड नागेन्द्र की शहादत को कभी नहीं भूलेगी, इनके सपनों को जरूर आगे ले जाएगी। सैनिक क्षेत्र में उभरते नागेन्द्र की शहादत आज की परिस्थिति में हमारे लिए बड़ी ही नुकसानदेह है। इनका पार्टी में नागेन्द्र नाम था और घर का नाम चेता था।

कॉमरेड नागेन्द्र अमर रहे।

vej 'kghn dkejM g"kZ mQZ g"kZukFk x>

कॉमरेड हर्षु 18 साल पहले झारखण्ड राज्य के लातेहार जिला अंतर्गत चन्दवा थाना क्षेत्र के हैसलौंग गांव में एक गरीब किसान परिवार में जन्म हुआ था। गरीबी के चलते ये भी अपने गांव के प्राथमिक विद्यालय में 6ठी क्लास तक शिक्षा प्राप्त कर पाये थे। कॉमरेड हर्षु बचपन से ही मेहनती थे, गांव-घर के छोटे-बड़े सभी लोग से अच्छा व्यवहार रखने के चलते इनसे सभी लोग प्यार करते थे। घर में अपने सभी भाई-बहनों से सबसे ज्यादा प्यार इन्हीं को ही मिलता था। इनकी शहादत का समाचार जब मिला तो इनके गांव क्षेत्र में मातम सा छा गया एवं सभी लोग के मुंह पर एक ही सवाल था कि यह सब कैसे हुआ? बहुत अच्छा लड़का था! क्योंकि इनके गांव-घर में 90 के दशक से ही क्रांतिकारी आंदोलन शुरू हुआ था। शुरूआत से ही उस क्षेत्र की जनता हमारी क्रांतिकारी पार्टी के नेतृत्व में जागरूक होते हुए विभिन्न तरह की कमेटी बनाये थे। सामंती गढ़ होने के चलते जमीन्दारों का जुल्म भी जनता को हमारी आंदोलन को समझने में मदद की। उस क्षेत्र में हजारों एकड़ जमीन जमींदारों से अपने कब्जे में करते हुए जनता में वितरण किया गया था, जंगल विभाग के सिपाहियों के खिलाफ लड़ाई में पार्टी के नेतृत्व में वहां की जनता भी प्रत्यक्ष रूप से शामिल हुई थी। बाद में पार्टी के कुछ गद्दारों के पार्टी से भागने से पुलिस-प्रशासन द्वारा टीपीसी गिरोह खड़ा कर आंदोलन को धक्का पहुंचाया गया और अपने फौजी दस्ते का उधर जाना कम हो गया, फिर भी वहां की जनता हार नहीं मानी। आंदोलन को पुनः आगे बढ़ाने के लिए हमारी पार्टी द्वारा जनता से पीएलजीए में युवा-युवतियों को देने के आह्वान पर कॉमरेड हर्षनाथ को जनता ने ही लगभग 5 वर्ष पहले ही पीएलजीए में भेजा था, इसलिए कॉमरेड हर्षनाथ अपने दायित्व को भी अच्छी तरह से समझता था और जबसे पीएलजीए में शामिल हुआ, तबसे ही अध्ययन के साथ-साथ कमाण्डरों द्वारा दिये सभी काम को करता था। इनके अंदर पुलिस के साथ-साथ टीपीसी, जेजेएमपी के प्रति घृणा एवं नफरत थी और हर समय इन्हें मारने के लिए ही सोचता था, इनके अंदर धौर्य व सहनशीलता भी थी, इन्हें एसी स्तर प्राप्त था इनमें आगे विकास की काफी संभावनाएं थी। शहादत के पहले ये एक नेतृत्व कॉमरेड का गार्ड था। कॉमरेड हर्ष एक विश्वसनीय, मेहनती, अनुशासित व मिलसनार स्वभाव का साथी था। सैनिक क्षेत्र में उभरते इस कॉमरेड को खोना पीएलजीए के लिए बड़ा ही नुकसानदेह है।

कॉमरेड हर्षु अमर रहे।

vej 'kghn dkejM eukst mjko

कॉमरेड मनोज उरांव का जन्म 22 साल पहले झारखण्ड के लोहरदगा जिला के पेशरार थाना अंतर्गत ग्राम केरार गोमोटोली में एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। वे अपने माता–पिता के दो बेटी, तीन बेटों में से तीसरा संतान थे। इन्होंने अपने गांव के ही प्राथमिक विद्यालय में 5वीं कक्षा तक ही शिक्षा प्राप्त किये थे। सिधा–साधा रहने के चलते गांव–घर के सभी लोग से इनका अच्छा संबंध रहता था। 90 के दशक में ही इनके गांव–घर इलाके में क्रांतिकारी पार्टी के गुरिल्ला दस्तों का आना–जाना शुरू हो गया था और वहां की ग्रामीण जनता क्रांतिकारी आंदोलन

के तहत संगठित होते हुए उस इलाके के जमीन्दारी शासन को ध्वस्त कर रही थी। जमीन्दारों की जमीन भी जब्त कर रही थी एवं जंगल सिपाहियों के अत्याचार को भी खत्म कर रही थी। इस सब को कॉमरेड मनोज बचपन से ही देख व सुन रहे थे और ये भी 16 साल की उम्र में ही लोकल गुरिल्ला दस्ता में शामिल हो गए। दस्ते में अपने सभी कार्यवाहियों के आदेशों को बखूबी पालन करते थे। इन्हें 2015 में एसी का दर्जा देते हुए लोहरदगा क्षेंत्र के एल.जी. एस में काम की जिम्मेवारी दी गई थी। वे पार्टी के हर काम को हंसी–खुशी से करते थे। इनका पार्टी में ही एक एसी स्तर के महिला कॉमरेड से एक साल पहले शादी हुई थी। सीधा–साधा, मेहनती, अनुशासित एवं साहसी साथी कॉमरेड मनोज एक जनयोद्धा के रूप में विकसित हो रहे थे। कोयल–शंख जोनल कमेटी को इनसे असीम सम्भावनाएं थी, इनकी शहादत से हमें बड़ा ही नुकसान हुआ हैं। 2016 के मिलिटरी प्रशिक्षण में इन्होंने भी भाग लिया था।

dkejM eukt vej jg!

vej 'kghn dkejM lqdjk [kfM;k

कॉमरेड सुकरा का जन्म झारखण्ड राज्य के गुमला जिला के भरनों थाना अंतर्गत ग्राम गोइलकेरा में एक गरीब किसान परिवार में हुआ था, वे 23 वर्ष के थे। इनके माता–पिता की मृत्यु पहले ही हो गया थी, परिवार में दो बड़े भाई है, ये सबसे छोटे थे। 1998 में भाकपा (माओवादी) के बिहार रीजनल कमेटी के फैसला के अनुसार इलाका विस्तार के लिए कुछ सिविलियन कॉमरेडों को इनके गांव–घर में गुमला जिला के भरनो इलका में भेजा गया, उसी समय इनकी मुलाकात क्रांतिकारी साथियों से हुई और पार्टी के तरफ से भेजे हुए कॉमरेडों को आश्रय देना व उन्हें हर तरह के मदद करने में लगे रहते थे। 1999 में एक गुरिल्ला दस्ता की छोटी टुकड़ी भी उस क्षेत्र में जाकर इलाका विस्तार के काम में लगी, उसी समय ये भी उस दस्ते में शामिल हो गए और 2002 तक पेशेवर क्रांतिकारी बन गए, उसी समय उन्हें पार्टी सेल सदस्यता दे दी गई थी। सन् 2000 से 2002 तक उस इलाके में जमीन्दारों व गुण्डों का हथियार जब्त किया गया एवं गुण्डों व पुलिस दलालों का सफाया भी किया गया। कुछ जगहों में जमीन्दारों का जमीन भी जब्त किया गया, इन सभी कार्रवाईयों में कॉमरेड सुकरा की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। स्थानीय होने के नाते गुरिल्ला दस्ते को उस इलाके में घुमाने, गांवों की जनता की बैठक कराने में इनकी अहम भूमिका रही है। उस इलाके में भाकपा (माओवादी) द्वारा क्रांतिकारी कामों व वर्ग संघर्ष के विस्तार को देखकर वर्ग दुश्मन भी सन् 2000 से उस क्षेत्र में दमन अभियान तेज कर दिया और 2002 तक उस इलाके में काम कर रहे मुख्य साथी सहित कई एक साथी को दुश्मन ने गिरफ्तार कर लिया और कई एक हथियार दुश्मन के हाथ में चला गया। कुछ साथी तो दुश्मन के दमन के डर से पीछे हटकर घर बैठ गए। और कुछ साथी को उस क्षेत्र को छोड़कर दूसरे इलाका में काम करने के लिए भेज दिया गया। इसी बीच संगठन का काम छोड़कर कॉमरेड सुकरा भी घर बैक गए, तब भी दुश्मन इन्हें पकड़ने के लिए इनके घर में लगातार छापामारी करता रहा और इनके घर को भी दुश्मन ने ध्वस्त कर दिया। अंततः इन्हें दुश्मन ने 2006 में गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया, वे 5 साल बाद जेल से बाहर हुए तो जेल से छूटने के बाद भी कॉमरेड सुकरा को दुश्मन पूनः गिरफ्तार करने व मारने के लिए लगातार छापामारी अभियान चलता रहा। इस दौरान ये कमाने के लिए दूसरे प्रदेश में चले गये और फिर घर वापस होने के बाद भी दुश्मन उनका पीछा नहीं छोड़ी। ये पुनः मई 2015 में पार्टी से संपर्क कर पीएलजीए में शामिल हो गये और पेशेवर क्रांतिकारी बनकर काम करने में जुट गये। उन्हें सिमडेगा क्षेत्र के एल.जी.एस. में काम करने की जिम्मेदारी दी गई। ये पूरी लगन से कमाण्डरों के हर आदेशों का पालन करने में तनिक भी नहीं हिचकिचाते थे। सिमडेगा सबजोन की जरूरत को देखते हुए इन्हें सैनिक प्रशिक्षण के पश्चात नवम्बर 2016 में उसे सबजोन की बैठक में एसी का दर्जा दिया गया था। कॉमरेड सुकरा खड़िया अपना पूरा जीवन गरीबी, कष्ट एवं दमन में ही गुजारा। क्रांतिकारी कामों में दिलो–जान से लगे रहते और सभी कॉमरेडों एवं जनता के साथ स्नेहिल रिश्ता बनाने के लिए हर सम्भव कोशिश करते रहते थे।

dkejM lqdjk vej jg!

vej 'kghn dkejM vufi;k

कॉमरेड अनुप्रिया 16 साल पहले झारखण्ड राज्य के गुमला जिला अंतर्गत बिशुनपुर थाना क्षेत्र के ग्राम कुमाड़ी में एक गरीब किसान परिवार में जन्मी थी। ये अपने गांव के प्राथमिक विद्यालय में 5वीं कक्षा तक पढ़ी थी। अपने माता–पिता के पांच संतानों में सबसे बड़ी थी। भाई–बहन

अमर शहीद कामरेड अनुप्रिया

में सबसे बड़े होने के नाते इनके उपर अपने घर में बड़ी जिम्मेवारी बनती थी। भोली–भाली कॉमरेड अनप्रिया अपने माता–पिता के साथ–साथ गांव–घर के सभी लोगों से बहुत ही प्यार बटोरती थी। हंस–मुख व मासूम चेहरे वाली कॉमरेड अनुप्रिया गांव–घर के छोटों को प्यार एवं बड़ों को आदर देना अच्छी तरह जानती थी। पीएलजीए में भी नेतृत्व कॉमरेडों के साथ–साथ हर कॉमरेडों का आदर करती थी एवं हर साथियों द्वारा दिये काम को हंसी–खुशी से करती थी तथा पार्टी द्वारा सभी गांव से पीएलजीए में भर्ती के आह्वान पर इन्हें कम उम्र में माता–पिता एवं गांव के लोग मिलकर 2014 में पीएलजीए में भेजे थे। शुरू में इन्हें बालिका टीम में रखा गया था एवं 2016 में नेतृत्व के प्रोटेक्शन टीम में काम करने के लिए भेजा गया, प्रोटेक्शन टीम में इन्हें एक महिला नेतृत्व कॉमरेड की गार्ड की जिम्मेवारी दी गई थी। उनके चंचल मन को देखते हुए उन्हें कम्पयूटर सिखाया जा रहा था। ये राजनीतिक–सैद्धांतिक अध्ययन के साथ–साथ कम्प्यूटर सीखने में बहुत ही दिलचस्पी रखती थी। 23 नवम्बर 2016 को छः अन्य कॉमरेडों दुश्मन के एम्बुश में फंस जाने से शहीद हो गए एवं उसी समय दुश्मन के दूसरे बैच द्वारा सेल्टर पोस्ट पर भी अचानक गोलियों की बौछार कर देने से रिट्रीट होते समय कॉमरेड अनुप्रिया की गर्दन में गोली लग जाने से तुरंत ही शहीद हो गई। हम सिर्फ कॉमरेड अनुप्रिया का ही शव को अपने कब्जे में ले पाये और क्रांतिकारी परम्परा से उनका अंतिम संस्कार किया गया। बाकी छः साथियों के शव को दुश्मन अपने साथ ले गया।

कॉमरेड अनुप्रिया एक विश्वसनीय, मेहनती, अनुशासित व मिलनसार स्वभाव की थी, इनसे कई सम्भावनाएं थी, लेकिन दुश्मन ने अल्प–अवधि में ही हमसे इन्हें छीन लिया।

dkejM vufi;k vej jg!

vej 'kghn dkejM eukt egrk

कॉमरेड मनोज महतो का जन्म झारखण्ड राज्य के गुमला जिला के चैनपुर प्रखंड अंतर्गत ग्राम पकनी में 23 वर्ष पहले एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। कॉमरेड मनोज अपने एक बहन और दो भाई में सबसे बड़े थे। बचपन में ही इनकी मां की मृत्यु होने और गरीबी के कारण ये सरकारी स्कूल में 5वीं कक्षा तक ही पढ़ाई कर पाये। गरीबी के कारण कॉमरेड मनोज बचपन में ही अपने पिता के साथ पूरे परिवार मजदूरी करने हिमाचल प्रदेश चले गए और वहीं रहकर कॉमरेड मनोज जवान हुए। तत्पश्चात अपने पिता एवं दो भाई व एक बहन को हिमाचल प्रदेश में ही छोड़कर वे अकेले अपने पैतृक गांव 2016 में घर वापस आ गये, वे अपने चाचा–चाची के घर में रहकर खेती–बारी का काम कर रह थे। मेहनती एवं मिलसनार रहने के चलते उन्हें हर जगह प्यार मिलता था। गांव आने से भी गांव के बच्चे/बूढ़े सभी के साथ मिल–जुलकर रहते थे। उसके गांव–इलाके में भाकपा (माओवादी) के नेतृत्व चल रहे वर्ग संघर्ष से वे प्रभावित थे। शहादत से छः महीने पहले जब इनके गांव में एक लोकल गुरिल्ला दस्ता सुबह में पहुंचा, गांव के जनता के साथ–साथ ये भी दस्ता के पास पहुंच गया। गुरिल्ला दस्ता के साथियों को गांव के लोगों द्वारा खाना–पीना व्यवस्था कर खिलाने–पिलाने के काम में जुट गए और दस्ते के साथ रहे, शाम जब दस्ते के लोग गांव से बर्तन और चावल मंगाकर अपने से खाना खाकर रात्रि विश्राम के लिए चलने के समय मनोज भी साथ में शामिल हो गए। वहीं से पहली मुलाकात से ही मनोज संगठन से प्रभावित होकर दस्ते में आ गए और लोकल दस्ते में एक साधारण सदस्य के रूप में ही रहने लगे थे। कमाण्डर द्वारा दिये हर कामों को बखूबी निभाते थे। अपने सभी कार्यवाहियां में कॉमरेडों के आदेश का पालन करते थे और हर कॉमरेडों के साथ स्नेहिल रिश्ता बना लेते थे।

dkejM eukt egrk vej jg!

Mejh ukyk e n'eu l ykgk yr g, ik.k&U;kNkoj dju oky tu ;k)k o tu urk dkejM fiUl] dk0 lukt ,o dk0 fofiu dk 'kr&'kr yky lyke!

केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा संघर्षरत जनता व उसका नेतृत्व करने वाली भाकपा (माओवादी) के उपर भीषण घेराव दमन चलाया जा रहा है, इसके तहत केन्द्रीय अर्द्ध सैनिक, कोबरा बल, बिहार एवं झारखण्ड पुलिस व बिहार के कुख्यात एस.टी.एफ., झारखण्ड के जगुवार के संयुक्त बलों द्वारा मध्य जोन के बिहार–झारखण्ड की सीमा क्षेत्र औरंगबाद एवं गया जिले के संघर्षशील इलाकों को लक्ष्य कर इन संयुक्त बलों द्वारा लगातार दमन अभियान चलाया जा रहा था और उसी बीच पूरे देश में हमारे पार्टी के तमाम नेता कार्यकर्ता व क्रांतिकारी जनता पार्टी के आह्वान पर प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी 28 जुलाई से 3 अगस्त तक शहीद सप्ताह मनाने की तैयारी में जोर–शोर से जुटे हुए थे, उस अवसर पर ही मगध जोनल कमेटी की स्वतंत्र पहल कदमी से दुश्मन की अक्रामकता को तोड़ने के लक्ष्य से एक बड़ी कार्रवाई की योजना बनाते हुए उपरोक्त संघर्षशील क्षेत्र अंतर्गत सोनदाहा जंगल के डुमरी नाला के पास खुसकी रास्ते में सैकड़ों की संख्या में लड़ी (एलबी) माईनिंग कर शहीद सप्ताह के ठीक दस दिन पहले 18 जुलाई 2016 को हमारे पीएलजीए बलों द्वारा एम्बुश किया गया, उसी दिन दुश्मन बल की एक टुकड़ी माईनिंग की चपेट में आ जाने से विस्फोट कर दिया गया, जिसमें 10 दुश्मन कोबरा बल मौके पर ही मारा गया और 8 घायल हुआ, उसके तुरंत बाद कमाण्डर द्वारा कॉसन मिला कि वहां मौजूद दुश्मन सब के सब माईनिंग चपेट में आकर मारा गया है। उसी समय हमारे पीएलजीए के जंगबाजों ने हथियार जब्त करने के लक्ष्य से विस्फोट स्थल पर बढ़ गये, पर माईनिंग की चपेट में सभी दुश्मन नहीं आये थे, दुश्मन का बैच आगे बढ़कर माईनिंग किया हुआ रास्ता को छोड़कर एम्बुश बैक साथियों की ओर बढ़ गई थी, वहीं दुश्मन द्वारा हथियार जब्त करने जा रहे हमारे जंगबाजों के उपर हमला कर दिया गया, आगे बढ़े जंगबाजों को रिट्रीट होने एवं कवर लेने के लिए जगह नहीं रहने पर भी दुश्मन के हमले का हिम्मत व साहस के साथ मुकाबला करते हुए तीन प्यारे कॉमरेडों में इआरबी वन कम्पनी के पीएल कमाण्डर जेडसी स्तर के कॉमरेड प्रिन्स उर्फ बॉस, मध्य जोनल कमेटी के अधीनस्थ कार्यरत एसजेडसी सदस्य कॉमरेड सनोज उर्फ सुदय एवं इआरबी वन कम्पनी सदस्य/एसी स्तर के कॉमरेड विपिन दुश्मन से लड़ते हुए शहीद हो गये एवं एक अन्य कॉमरेड घायल हो गये।

इन तीनों कॉमरेडों द्वारा अपनी जान की बाजी लगाकर दुश्मन को जवाब देने के कारण ही बाकी अन्य कॉमरेडों को सुरक्षित रिट्रीट होने का मौका मिल पाया, हमारे इन तीन कॉमरेडों के नुकसान के बावजूद कुछ हद–तक दुश्मन की आक्रामकता को धीमा किया गया। इन कॉमरेडों की शहादत से क्रांतिकारी आंदोलन को एक बड़ा ही नुकसान हुआ है, लेकिन करोड़ों शोषित–उत्पीड़ित जनता के पक्ष में संचालित किये जाने वाले जनयुद्ध इस नुकसान से जरूर उबरेगा। शहीदों के बलिदानों की प्रेरणा से लैस होकर पीएलजीए अवश्य ही जीत की ओर आगे बढ़ेगी। इन तमाम कॉमरेडों को कोयल–शंख जोनल कमेटी विनम्र श्रद्धांजलि पेश करती है और पाठकों को आह्वान करती है कि वे अपने कमेटी, व्यक्तियों एवं अपने अन्दर के तमाम कमी–कमजोरियों को दूर करते हुए इन कॉमरेडों के अधूरे कामों व सपनों को साकार करने का संकल्प लेकर आगे बढ़ें।

¼'kghn g, rhu dkejMk e l flQ ,d gh dkejM dh thouh ge ;gk ij n ik jg g] D;kfd lcf/kr deVh }kjk flQ ,d dh gh thouh ge ikIr gb gA & l iknde.My] yky fpuxkjh½

dkejM fofiu fdlku

अमर शहीद कॉमरेड विपिन किसान का जन्म 20 वर्ष पहले झारखण्ड राज्य के लोहरदगा जिले के पेशरार थाना अंतर्गत इचवाटोड़ (ललकीटाड) गांव में एक गरीब किसान दंपत्ति के परिवार में हुआ था। चार पुत्र एवं एक पुत्री में से कॉमरेड विपिन सबसे छोटे संतान थे। इन्होंने राज्यकीय मध्य विद्यालय दुगू में 7वीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त किया था। बचपन से ही मिलनसार और मेहनती व्यक्ति होने के चलते गांव एवं क्षेत्र के हर छोटे एवं बड़ों से घुल–मिल जाते थे। अपने उम्र के हर लोग इनसे दोस्ती करने का कोशिश करते, ये अन्याय के खिलाफ भी बचपन से ही संघर्ष करने के लिए तैयार रहते थे। इनके गांव इलाके में 1990 के दशक में क्रांतिकारी गुरिल्ला दस्ते का

पदार्पण हो चुका था एवं उस इलाके में भोली–भाली जनता व जंगली–पहाड़ी इलाका होने के कारण जंगल उत्पाद के साथ–साथ खनिज सम्पदा का विशाल भण्डार भी है, इसलिए उस क्षेत्र में सांमती–जमीन्दारों, जंगल सिपाहियों एवं माफिया–गुण्डों के साथ–साथ पूंजिपतियों का लुट–शोषण एवं जुल्म अत्याचार से जनता त्रस्त थी इसलिए हमारे क्रांतिकारी गुरिल्ला दस्ते द्वारा अपने लक्ष्यों को जनता के बीच बताने से उन्हें समझने में देर नहीं लगी और हमारे गुरिल्ला दस्ते को समर्थन के साथ–साथ हर तरह से मदद भी जनता द्वारा मिली और कुछ जमीन्दार एवं जंगल सिपाही को भी खदेड़ दिया गया। जंगल को सरकारी जंगल विभाग के कब्जे से मुक्त कर दिया गया और जनता की मदद से वहां एक बड़ा इलाका लाल आधार क्षेत्र में तब्दील होने लगा। 21 सितम्बर 2004 को एकीकृत भाकपा (माओवादी) बनने के बाद उस क्षेत्र को आधार क्षेत्र बनाने का भी कार्यभार लिया गया था। कॉमरेड विपिन छोटा रहने के चलते पार्टी के लक्ष्य उद्देश्य के बारे में तो नहीं जानते थे, पर जैसे–जैसे बड़े होने लगे, हमारे पीएलजीए के साथियों के नजदीक आते गए और उन्हें मदद करने एवं लक्ष्य को समझने की कोशिश करने लगे। जब कभी भी दस्ता उनके गांव पहुंचती, तो कॉमरेड विपिन भी दस्ते के पास पहुंच जाते, जिससे दस्ते के साथियों से भी उनकी दोस्ती हो गई। अंततः 17 वर्ष की उम्र में ही 2012 में वे पीएलजीए में भर्ती हो गये। पीएलजीए में रहने से उन्हें कमाण्डर द्वारा जो भी काम मिलता वे हर काम को हंसी–खुशी व अपने सूझ–बूझ से निर्वहन करते थे। कॉमरेड विपिन के अन्दर अपने वर्ग दुश्मन के प्रति अत्यंत घृणा व नफरत था। ये जनता के बीच राजनीतिक बात करने के लिए लालायित रहते थे। जब गांव में दस्ता पहुंचती, तो कमाण्डर द्वारा जनता के बीच में आज कौन बात करेंगे, बोलने से सबसे पहले विपिन 'मैं बात करूंगा' बोलता था। इन्होंने पुलिस हो या टीपीसी/जेजेएमपी को मारने के लिए हर समय तैयार रहते थे। ये कई लड़ाई में शामिल रहे थे और एक अच्छा भूमिका निभाये थे। इनकी लड़का क्षमता को देखते हुए इन्हें 44 नं0 पीएल में काम करने की जिम्मेदारी दी गई एवं 2016 के अप्रैल में सीसी कम्पनी वन में काम करने की जिम्मेवारी सौंपी गई थी। जुलाई 2016 को पार्टी की एक विशेष काम के लिए कोयल–शंख जोन के पीएलजीए की एक टुकड़ी एवं सीसी वन कम्पनी की एक टुकड़ी को मध्य जोन भेजा गया था, उसी दौरान डुमरी नाला की कार्रवाई में दुश्मन से हथियार जब्त करते समय फंस जाने से भी अदम्य साहस के साथ लड़ते हुए युद्ध के मैदान में ही उन्होंने अपने प्राणों को क्रांति की बलिवेदी पर चढ़ा दिये और सदा–सदा के लिए हमसे विदा ले लिये। एसी स्तर के कॉमरेड विपिन एक मेहनती, अनुशासित व मिलनसार कॉमरेड थे। वे सभी कॉमरेड के साथ स्नेहिल रिश्ता बना लेते थे। आज की परिस्थिति में कॉमरेड विपिन की शहादत एक बड़ा ही नुकसान है। कॉमरेड विपिन सहित कई शहीदों द्वारा स्थापित कम्युनिस्ट मूल्यों व आदर्शों को अपना कर आगे बढ़ते हुए नुकसानों से उबरेंगे।

अमर शहीद कॉमरेड बिपिन किसान

शहादत दिवस की है पुकार
बनाएं मजदूर-किसान तथा जनता की सरकार!

बीजे सैक भाकपा (माओवादी)

कविता

ऐसी है हमारी गुरिल्ला

अचानक हुए हमले पर
पीछे हटती है हमारी गुरिल्ला,
क्योंकि वो जानती है
'दो कदम आगे और एक कदम पीछे'
है युद्ध का नियम।

जब दुश्मन ज्यादा ताकत से वार करे,
तो पीछे हटना ही सफल गुरिल्ला का है काम।
हमारी गुरिल्ला,
दुश्मनों के घेराव वाली स्थितियों में
उनके बीच से रास्ता बनाकर
पहुंचती है किसी सुरक्षित जगह पर।

दुश्मनों के घेराव के कारण
गर्मी का दंश झेलने के बाद भी
नहाने तक नहीं जाती किसी नदी-तालाब में
ठंडा पानी चाहे कितना भी ललचाए मन को
नहीं रूकती पानी के लालच में
किसी नदी तालाब के पास।
पीती है वही गंदा पानी
जो ला पाते है साथी उस वक्त।

गर्म पड़ी चट्टानों पर ही लेटकर
करती है आराम,
चिलचिलती धूप में भी सौ फुट उपर
पहाड़ी चढ़ती है, उतरती है जरूरत होने पर।
झेलती है तेज गर्मी झाड़ियों के बीच बैठकर
और सोचती है तब
कैसे देना है ईट का जवाब पत्थर से।

जब हमारे किसी गुरिल्ले को छूकर निकलती है गोली
दर्द से आहत हमारा गुरिल्ला
दर्द के बारे में नहीं सोचता,
सोचता है कैसे देना है दुश्मन को
इस जख्म के बदले गहरे जख्म।
जब दुश्मन की बड़ी ताकत के कारण
हटना पड़ता है हमारे गुरिल्ले को पीछे
तो हौसला पस्त नहीं होती हमारी गुरिल्ला
जितना कदम पीछे हटना पड़े,
हटने के बाद, बनाती है प्लान
दुश्मन को पुनः खदेड़ भगाने का।

नहीं थकती हमारी गुरिल्ला भयंकर भाग-दौड़ से,
नहीं हारती हमारी गुरिल्ला मौसम के मार से
नहीं हताश होती हमारी गुरिल्ला एक बार की वार से
नहीं निराश होती हमारी गुरिल्ला पीछे हटने से
नहीं डरती हमारी गुरिल्ला चोट लगने से
तैयार रहती है हमारी गुरिल्ला पलटवार के लिए।

हमारी गुरिल्ला भी है चीन की गुरिल्ला की भांति,
इसलिए एक दिन, हमारी गुरिल्ला भी लहराएगी
जीत का झंडा पूरे देश की भूमि पर
आज की यह साहसी, हिम्मती, फुर्तीली गुरिल्ला
चीन की गुरिल्ला की भांति
फैल जाएगी पूरे देश में,
जंगलों, पहाड़ों से शुरू हुआ यह युद्ध
बन जाएगा समाज के हर तबके के जीवन का हिस्सा
चोट पहुंचाने वाली शक्ति सिकुड़ती जाएगी
जैसे रूस और चीन में हुआ था।

ठीक एक दिन
गुरिल्ला और इसके नेतृत्वकारी शक्ति
उभरेंगे सबसे बड़ी जनशक्ति बनकर
और जल्द ही बनाएंगे
भारत में भी एक जनवादी समाज।

शहादत दिवस पर इआरबी के द्वारा जारी पर्चा

आवें शहादत दिवस को शपथ लें,
ऑपरेशन ग्रीन हंट को परास्त कर
जारी जनयुद्ध को और एक कदम आगे बढ़ाएं!

प्रिय कामरेडो एवं जंग-ए-अवामी,

पार्टी शहादत दिवस के अवसर पर सर्वप्रथम इआरबी हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी) के संस्थापक, शिक्षक और भारतीय क्रांति के महान नेता कामरेड चारू मजुमदार और कामरेड कन्हाई चटर्जी को शत्-शत् लाल सलाम पेश करती है। साथ ही साथ उन तमाम वीरों और वीरांगनाओं को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करती है, जिनकी शहादत के बदौलत क्रांतिकारी संघर्ष को जनयुद्ध के इस मुकाम तक पहुंचाने में हम कामयाब हुए हैं। नक्सलबाड़ी सशस्त्र कृषि क्रांतिकारी संघर्ष से लेकर अबतक लगभग 15-16 हजार और भारत की कम्युनिस्ट पार्टी गठन होने से अबतक 3 हजार से अधिक वीरों और वीरांगनाओं ने शहादत दी है और विगत एक वर्ष में पूरे इआरबी क्षेत्र के अन्तर्गत 26 वीरों और वीरांगनाओं ने अपनी जान को निछावर किया है। उन अमर शहीदों में केन्द्रीय कमिटी व पोलित ब्यूरो सदस्य कामरेड नारायण सन्याल उर्फ विजय दा, जिनकी शहादत 17 अप्रैल, 2017 को कैंसर की बीमारी से हुई, केन्द्रीय कमिटी के और एक सदस्य कामरेड कुप्पु देवराज उर्फ योगेश जिनको दुश्मनों ने फर्जी मुठभेड़ में 24 नवम्बर, 2016 को हत्या की और उनके साथ ही एसजेडसी सदस्या कामरेड अजिता की भी हत्या की और वे शहीद हुए; बीजे सैक सदस्य कामरेड आशीष को 11 सितम्बर, 2016 को कोवर्ट की सूचना पर पुलिस ने घातलगाकर हमला करके घायल अवस्था में पकड़ कर यातना देकर मार दिया और वे शहीद हुए, पश्चिम बंग राज्य कमिटी के पूर्व सचिव कामरेड हिमाद्री सेन उर्फ विधान दा बीमारी से 3 अगस्त, 2016 को शहीद हुए, राज्य स्तरीय वरिष्ठ कामरेड रघुनाथ महतो उर्फ मुर्मू जी 93 वर्ष की उम्र में 26 अक्टूबर, 2016 को शहीद हुए। इअरबी के अन्तर्ग शहीद हुए 26 कामरेडों में से सैक/राज्य सदस्य 3, रीजनल सदस्य 1, जोनल सदस्य 4, सबजोनल सदस्य 5, एरिया कमिटी सदस्य 4, पीएल सदस्य 2, एलजीएस सैनिक 3, केकेसी सदस्य 2 और समर्थक 1 शामिल हैं। आवें, शहादत दिवस के अवसर पर हम उन तमाम वीर शहीदों के अधूरे सपना को साकार करने हेतु क्रांतिकारी संघर्ष को और एक कदम आगे बढ़ाने की शपथ लें।

प्रतिक्रांतिकारी युद्ध से लोहा लेता क्रांतिकारी जनयुद्ध

दोस्तो, ज्यों-ज्यों क्रांतिकारी संघर्ष आगे बढ़ रहा है त्यों-त्यों वर्ग दुश्मनों का दमन अभियान भी और तीखा होता जा रहा है। परिणामस्वरूप शहादतों की संख्या में भी बढ़ोतरी हो रही है। जिससे हसिया-हथौड़ा अंकित लाल झण्डा और सुर्ख होकर क्रांति के पथ को आलोकित कर रहा है। भारतीय क्रांतिकारी संघर्ष आगे बढ़ता हुआ युद्ध का रूप ले चुका है। यह जारी जनयुद्ध अब वर्ग दुश्मनों के लिए चुनौती बन गया है। इसको कुचल डालने के बुरे इरादे से साम्राज्यवाद के दलाल भारतीय शासक वर्ग- सामंती जमीन्दार और दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग व उनके प्रतिनिधित्वकारी राजनीतिक पार्टियां कांग्रेस और भाजपा नेतृत्वाधीन यूपीए और एनडीए की सरकार ऑपरेशन ग्रीन हंट नामक प्रतिक्रांतिकारी युद्ध जनता के माथे थोप दिया है, जिसका तृतीय चरण चल रहा है। उसका दमनात्मक अभियान और क्रूर होता जा रहा है। जिसके तहत भाकपा (माओवादी) के नेताओं, कार्यकर्ताओं और समर्थक जनता पर बर्बर हमले, फर्जी मुठभेड़ में हत्याएं व नरसंहार करना, फर्जी मुकदमा में सालों दर साल, एक के बाद एक केस लादकर जेल में कैद करके रखना, कुर्की-जब्ती के नाम पर जनता की संपदा की लूटपाट करना, घरों में आग लगाना, ढाहना, मां-बहनों का बलात्कार करना आदि चलाया जा रहा है।

दूसरी तरफ हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी) के नेतृत्व में जनता के जनफौज- जन मुक्ति छापामार सेना (पीएलजीए) पुलिस व अर्द्धसैनिक बलों के क्रूर हमले का मुकाबला करते हुए क्रांतिकारी संघर्ष को आगे बढ़ाते जा रही है। हां, अवश्य ही हमारा क्रांतिकारी आन्दोलन एक कठिन दौर से गुजर रहा है। फिलहाल वर्ग दुश्मन के हाथ में जहां अत्याधुनिक हथियारों, इंसास, एके-47, 56, इजराइली टावोरेक्स-95, एलएमजी, मोर्टार, रॉकेट लांचर आदि और अत्याधुनिक उपकरणों- जीपीएस, सेटेलाइट फोन, यूएवी, ड्रोन, माइनप्रुफ-बुलेटप्रुफ वाहन, बुलेटप्रुफ जैकेट आदि से लैस विशाल संख्यक अर्द्ध सैनिक बल हो, और हमारे पास न तो पर्याप्त मात्रा में अत्याधुनिक हथियार है और न हीं कोई अत्याधुनिक उपकरणों से लैस है हमारे पीएलजीए बल तथा संख्यागत रूप से भी दुश्मन के बलों की तुलना में नगन्य रहने के कारण सापेक्षिक रूप से हम कमजोर हैं। इसलिए अभी की परिस्थिति में क्रांतिकारी आन्दोलन का कठिन दौर से गुजरना या मुश्किलों का सामना करना अपरिहार्य वस्तुगत सच्चाई है आत्मगत शक्ति के दृष्टिकोण से। लेकिन यह अस्थाई है। यह परिस्थिति का एक पहलू है।

दूसरा पहलू है, शोषक-शासक वर्ग एकमात्र बन्दूक और पुलिस-फौज के बल पर ही अपने लूट-शोषण पर आधारित शासन व्यवस्था को टिका कर रखा है। तथाकथित लोकतंत्र तो केवल दिखावा या ढोंग है, बन्दूक और फौज के बल पर चलाया जाने वाला शासन-तंत्र राज्यमशीनरी या राष्ट्रयंत्र (लूटेरे कानून, नौकरशाह, पुलिस-फौज और जेलखाना) ही जो असली है, उस पर पर्दा डालता है। वर्तमान यह शासन व्यवस्था मुट्ठीभर सैकड़ा में 10 प्रतिशत

लोगों (साम्राज्यवाद, सामंतवाद और दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग) का 90 प्रतिशत लोगों (किसान-मजदूर और मेहनतकश वर्ग) पर तानाशाही है। ये 90 प्रतिशत किसान-मजदूर, मेहनतकश जनता हमारे क्रांतिकारी आन्दोलन के पक्ष में हैं लेकिन फिलहाल असंगठित हैं। इसलिए उन मुट्ठीभर 10 प्रतिशत लोगों का शासन व तानाशाही तबतक टिकी रहेगी जबतक किसान-मजदूर, मेहनतकश जनता क्रांतिकारी राजनीति से सचेतन व जागरूक होकर संगठित नहीं हो जाती तथा अपनी हथियारबंद फौज का निर्माण कर वर्तमान शोषणमूलक सत्ता को उखाड़ फेंकने के हथियारबंद क्रांतिकारी संघर्ष या जनयुद्ध में शामिल नहीं हो जाती।

किसान-मजदूर व मेहनतकश जनता के विरोधी तथा 'देशी'-विदेशी पूंजीपति व कॉरपोरेट घरानों के हित में काम करती मोदी सरकार

केन्द्र में भाजपानीत नरेन्द्र मोदी के सरकार के तीन साल पूरे होने पर भाजपा द्वारा पूरे देश के पैमाने पर खासकर भाजपा शासित राज्यों में बड़े तामझाम के साथ जश्न मनाया गया और अपनी उपलब्धियां गिनाया। और, मुख्य रूप से भाजपा के नेताओं ने यही कहा कि 70 साल में जो विकास नहीं हुआ, नरेन्द्र मोदी उसे तीन साल में करके दिखाया। लेकिन जिन वादे के साथ नरेन्द्र मोदी सरकार सत्ता में आयी, अच्छे दिन आएंगे, सबका साथ सबका विकास, विदेश से काला धन वापस लाने, हर साल दो लाख युवाओं को रोजगार देने आदि का क्या हुआ इस पर किसी ने भी चर्चा नहीं की। वास्तव में देखा जाय तो इस सरकार के दौरान कॉरपोरेट घरानों, व्यापारी व शेयर मार्केट के अच्छे दिन आ गये। सरकार के पास कॉरपोरेट के लाखों करोड़ कर्ज माफी के लिए पैसे हैं, लेकिन किसानों और मजदूरों की भलाई के लिए फंड की कमी है। युवाओं के लिए रोजगार के अवसर नहीं है, किसान आत्महत्या करने पर मजबूर है और मजदूरों के लिए सामाजिक सुरक्षा की गारंटी खत्म हो गई है।

वर्ष 2014 में वादा किया गया था कि सालाना दो लाख युवाओं को रोजगार मुहैया कराया जाएगा, लेकिन रोजगार पैदा करने के उलट आज बेरोजगारी का संकट गंभीर हो गया है। पिछले तीन साल में सरकार की नीतियों के कारण रोजगार के अवसर कम हुए हैं। दरअसल सरकार की मौजूदा आर्थिक नीतियों के केन्द्र में आम लोग की बजाय कंपनियों का हित मायने रखता है। सरकार की नीतियां सिर्फ पूंजीनिवेश को आकर्षित करने पर केन्द्रित है। हमें यह समझना होगा कि पूंजी निवेश बढ़ने से रोजगार के अवसर नहीं बढ़ते हैं। ऊपर से सरकार ने नोटबन्दी का फैसला ले लिया। इसके कारण देश के छोटे-छोटे उद्योग पर ऐसी मार पड़ी कि वह हमेशा के लिए पंगु बन गये। देश में रोजगार मुहैया कराने में छोटे उद्योगों का सबसे अधिक योगदान रहा है। साथ ही सरकारी खर्च में कटौती के नाम पर विभिन्न विभागों में नियुक्तियां पर रोक लगाने से रोजगार के अवसर कम हुए हैं। सरकार सिर्फ आर्थिक विकास को पैमाना मान रही है। लेकिन नव उदारवादी आर्थिक नीतियों के कारण रोजगार के अवसर कम हुए हैं। एक ओर सरकार कहती है कि 2022 तक किसानों की आय दोगुनी कर दी जाएगी। लेकिन किसानों की आय बढ़ाने की बजाय कृषि क्षेत्र को निजी हाथों में सौंपने की तैयारी की जा रही है। नीति आयोग के कृषि बाजार सुधार संबंधी नौ सूत्रीय कार्यक्रम इस ओर इशारा कर रहे हैं। आज किसान दयनीय हालात में है और इस कारण आत्महत्या लगातार बढ़ रही है। बैंक कर्ज देने में आनाकानी करते हैं, लेकिन बड़े व्यापारी कर्ज लेकर भी पैसा नहीं चुकाते हैं। काले धन के नाम पर नोटबंदी कर दी गयी, लेकिन इस फैसले से समाज के गरीब तबकों पर सबसे प्रतिकूल असर पड़ा। सरकार यह बताने को तैयार नहीं है कि नोटबंदी से कितना कालाध न आया। देश में भ्रष्टाचार पर लगाम नहीं लग पायी है। खुद प्रध ानमंत्री मोदी पर सहारा-बिड़ला डायरी में पैसे लेने का आरोप लगा, ललित मोदी को लाभ पहुंचाने, छत्तीसगढ़ में राशन कार्ड घोटाला, मध्यप्रदेश में व्यापम के गंभीर आरोप लगे। लेकिन इन आरोपों को जवाब देने की बजाय सरकार लोगों का ध्यान हटाने के लिए शिक्षण संस्थानों में दखल, राष्ट्रवाद के मुद्दे को हवा देती रही। मौजूदा माहौल में देश में गरीब, अल्पसंख्यक, दलित, आदिवासी के अधिकार हासिये पर चले गये हैं। निम्न आंकड़े इस सच्चाई को ही प्रमाणित करते हैं जो निम्न प्रकार हैं।

जनवरी-मार्च में जीडीपी ग्रोथ सिर्फ 6.1 प्रतिशत, मैन्युफैक्चरिंग 12.7 प्रतिशत से घटकर 5.3 प्रतिशत रही।

पिछले दो दशकों में कर्ज के बोझ में 3 लाख से अधिक किसान आत्महत्या कर चुके हैं, वहीं पिछले चार साल के अन्दर छत्तीसगढ़ में 1585 और पिछले एक साल में 955 किसानों ने आत्महत्या कर आन्ध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और तमिलनाडु को पीछे छोड़ दिया है।

बेरोजगारी की दर बेलगाम हो चुकी है। लेबर ब्यूरो के सर्वे के अनुसार बेरोजगारी दर बीते पांच सालों के अधिकतम स्तर पर है। एक स्वयंसेवी संस्था के शोध के नतीजे संकेत कर रहे हैं कि समय रहते नहीं चेता गया, तो स्थिति बेहद गंभीर हो सकती है, क्योंकि बेरोजगारी के मोर्चे पर देश दोहरी मार झेल रहा है। एक तो रोजगार के नये अवसर वांछित तादाद और रफ्तार से पैदा नहीं हो रहे, दूसरे रोजगार के मौजूदा अवसरों में कमी आ रही है। शोध का निष्कर्ष है कि बीते चार सालों में देश से हर दिन औसतन 550 नौकरियां खत्म हुई हैं और यही स्थिति रही तो 2050 तक 70 लाख नौकरियां खत्म हो जाएंगी। विश्व बैंक के ताजा आकलन के मुताबिक उत्पादन और वितरण के अधिकाधिक मशीनीकृत होते जाने के कारण भारत में करीब 69 फीसदी नौकरियां के खत्म होने का खतरा है। लेबर ब्यूरो के आंकड़ा के अनुसार 15 साल या इससे ज्यादा उम्र के मौजूदा कार्यबल में बेरोजगारी दर 5 फीसदी पर पहुंच गयी है और कार्यबल के एक तिहाई (35 फीसदी) हिस्से को साल में कुछ महीने ही रोजगार मिलता है। जनगणना के मुताबिक, देश में 15 साल या इससे ज्यादा उम्र के 45 करोड़ लोग हैं। यानी जीविका तलाशते लगभग 2. 3 करोड़ लोग रोजगार के किसी भी अवसर से वंचित हैं और 16 करोड़ के पास पूरे साल चलनेवाला स्थायी रोजगार नहीं है। ध्यान रहे कि देश के श्रमबल का 47 फीसदी हिस्सा स्वरोजगार पर निर्भर है,

जहां नियमित आय की गारंटी नहीं है। देश के 68 फीसदी परिवारों की सभी स्रोतों से कुल आय 10 हजार से ज्यादा नहीं हो रही। 77 फीसदी ग्रामीण परिवार महीने में 10 हजार भी नहीं कमा पा रहे।

आइटी सेक्टर में भी बड़ी संख्या में नौकरी जाने की नौबत बन गई है। विप्रो ने अपने 600 कर्मचारियों की छंटनी करने का निर्देश जारी किया है। सर्च इंजन कंपनी हेड हंटर इंडिया के अनुसार अगले तीन साल तक सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र में सालाना 1.75 लाख से दो लाख के बीच रोजगार के अवसर में कटौती की जा सकती है।

संयुक्त राष्ट्र संघ की नार्वे शरणार्थी परिषद की रिपोर्ट में विस्थापन की समस्या से सबसे अधिक प्रभावित देशों में भारत का तीसरा स्थान हैं, जहां 2016 में करीब 28 लाख लोग विस्थापित हुए हैं।

कुपोषण के मामले में संयुक्त राष्ट्र का आकलन है कि भारत में प्रतिवर्ष कुपोषण से मरनेवाले पांच साल से कम उम्र के बच्चों की संख्या दस लाख से ज्यादा है। भारत में विश्व की 17.5 प्रतिशत आबादी रहती है, जबकि विश्व की कुल कुपोषित आबादी का 24. 5 प्रतिशत भारत में रहती है। अल्प कुपोषित जनसंख्या भारत में काफी ऊंची है। 55.3 प्रतिशत भारतीय महिलाएं कुपोषित हैं।

स्कूल जाने की उम्र वाला हर चार में से एक बच्चा स्कूल से बाहर है, करीब 10 करोड़ बच्चे स्कूल से बाहर हैं, जिन्हें स्कूलों में होना चाहिए। 100 में से सिर्फ 32 बच्चे स्कूली शिक्षा पूरी कर पाते हैं। देश में केवल दो प्रतिशत स्कूल ऐसे हैं, जो क्लास एक से 12वीं तक की पूरी शिक्षा दे पाने की स्थिति में हैं। बच्चों के स्वास्थ्य के मामले में भारत की हालत सबसे बदतर है। 54 प्रतिशत बच्चे कुपोषित हैं।

ये आंकड़े मोदी सरकार के कामकाज की असलित को दिखाने के लिए पेश किया गया है।

राजनीतिक सत्ता का बढ़ता सैन्यीकरण व फासीवादीकरण

आज भाजपानीत केन्द्र की मोदी सरकार हो या भाजपा शासित राज्य सरकारें हो पूंजीपति और कॉरपोरेट घरानों के लूट-शोषण को बरकरार रखने के लिए पूरे राजमशीनरी का इस्तेमाल कर रही है। नरेन्द्र मोदी विदेशी पूंजीपतियों के लूट को सुगम बनाने के लिए सत्ता में आने के साथ भूमि अधिग्रहण कानून में बदलाव लाया, लेबर कानून में बदलाव लाया, ठीक उसी के तर्ज पर राज्य सरकार खासकर झारखण्ड में रघुवर दास तमाम विपक्षी पार्टियों के जबरदस्त विरोध के बावजूद सीएनटी-एसपीटी एक्ट में बदलाव लाने पर आमादा है। उसी तरह पश्चिम बंग की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी भी गोरखा राष्ट्रीयता की जनता के आत्मनिर्णय के आन्दोलन को बूटों तले दमन करने पर आमादा है। अलावे पूरे पूर्वोत्तर भारत के राष्ट्रीयता के आत्मनिर्णय के आन्दोलन को दमन करने हेतु मिलिटरी को तैनात करके रखा गया है। कश्मीरी राष्ट्रीयता के आत्मनिर्णय के आन्दोलनकारियों के साथ तो आतंकवादी व बाहरी दुश्मन जैसा सलूक किया जाता है। और कश्मीर तो एक युद्धक्षेत्र में तब्दील हो गया है। पिछले वर्ष सेना द्वारा पैलेटगन क इस्तेमाल 100 से अधिक लोगों की जानें गई और एक हजार से अधिक लागों के आंखों की रोशनी चली गई। इस तरह जोर-जबरन भूमि अधिग्रहण के सवाल पर हो अथवा सीएनटी-एसपीटी में बदलाव लाने के सवाल पर हो या राष्ट्रीयता के आन्दोलन को दमन करने के मामले में हो, या विशेष आर्थिक क्षेत्र (स्पेशल इकोनॉमिक जोन-सेज) और आर्थिक गलियारा (इकॉनोमिक कॉरिडोर) बनाये जाने पर उत्पन्न विस्थापन समस्या के खिलाफ उठाये जाने वाले विरोधी स्वर को, सभी बूटों तले रौंदा जा रहा है। झारखण्ड के रामगढ़ गोला व हजारीबाग बड़कागांव, मध्यप्रदेश के मंदसौर, की घटना, दार्जिलिंग में गोरखा राष्ट्रीयसत्ता के आन्दोलन कारियों पर गोली चलाकर हत्या करने और कश्मीरी कजता के ऊपर बर्बर सैन्य कार्रवाई की घटना इसकी जीती-जागती मिसाल है। आज हर प्रशासनिक काम जोर-जबरन पुलिस और फौज के बल पर किया जा रहा है। भाकपा (माओवादी) के नेतृत्व में जल-जंगल-जमीन सहित तमाम संपदा पर जनता का अधिकार कायम करने तथा आर्थिक-राजनीतिक अधिकार कायम करने हेतु जारी क्रांतिकारी आन्दोलन के ग्रामीण क्षेत्रों को तो पुलिस छावनी में तब्दील कर ही दिया गया है। यहां तो कोई भी ऐसा काम नहीं है जो बिना पुलिस व अर्द्ध-सैनिक बलों के जरिए किया जाता हो।

वहीं दूसरी तरफ पूरे सत्ता के संरक्षण में विश्व हिन्दु परिषद व आरएसएस के एजेण्डे को लागू करने के लिए भगवा ब्रिगेड सक्रिय हो गये हैं और उसका आतंक काफी बढ़ गया है। गोरक्षा के नाम पर मुस्लिम अल्पसंख्यकों और दलितों पर कहर बरपाया जा रहा है। फिर, पूरे सुनियोजित साजिश के तहत भीड़ के द्वारा हमले करवाकर अल्पसंख्यकों और दलितों की हत्याएं करवाई जा रही हैं। हरियाणा के बल्लभगढ़, उत्तर प्रदेश के दादरी, सहारनपुर, गुजरात के उना, राजस्थान, दिल्ली और झारखण्ड के पूर्वी सिंहभूम, सरायकेला-खरसावां, रामगढ़, गिरिडीह की घटना इसकी जीती-जागती मिसालें हैं। इस तरह गीता पर हाथ रखकर संविधान की रक्षा करने की कसम खानेवाले ही आज संविधान (धर्मनिरपेक्षता) की धजियां उड़ा रहे हैं। पूरे देश में सांप्रदायिक सौहार्द को बिगाड़ने की कोशिश की जा रही है और इससे समाज में असहिष्णुता बढ़ रही है।

दुश्मन द्वारा एलआईसी पॉलिसी के तहत क्रांतिकारी आन्दोलन पर किये जा रहे चौतरफा हमले को पहचानें तथा उसे परास्त करने हेतु पार्टी और फौज को बोल्शेवीकीकरण करने के अभियान को तेज करें

वर्ग दुश्मन हमारे क्रांतिकारी आन्दोलन को कुचलने के बुरे मनसूबे से एलआईसी पॉलिसी के तहत चौतरफा हमले चला रहा है। इसके तहत जहां एक ओर क्रूर व बर्बर सैन्य दमन अभियान चलाया जा रहा है, वहीं दूसरी तरफ पार्टी के अन्दर कोवर्ट (भीतरघाती) घुसाकर हमले करवाना, गुटबाजी पैदा करके आपस में फूट डालना व गुटीय संघर्ष में फंसाकर आत्मगत शक्ति को कमजोर करना और क्रांतिकारी आन्दोलन से गुमराह करने के लिए आत्मसमर्पण पॉलिसी

के तहत ढुलमुल, आर्थिक व चारित्रिक रूप से भ्रष्ट तत्वों को सरेंडर करवाना और पार्टी के खिलाफ में दुष्प्रचार चलाना, झूठी अफवाह फैलाकर मनोवैज्ञानिक दबाव डालना आदि। अलावे झूठा सुधार कार्यक्रम व रिलिफ-राहत का कार्यक्रम चलाना।

आज दुश्मन ने सैनिक हमले से जितना नुकसान हमें नहीं पहुंचाया है उससे अधिक पार्टी के आन्तरिक हमले से नुकसान पहुंचाया है। इसका मूल कारण है हमारे पूरे पार्टी कतारों और पीएलजीए के फारमेशनों के अन्दर राजनीतिक व सैद्धांतिक मामले में कमी-कमजोरी रहना। हमारी राजनीतिक व सैद्धांतिक कमजोरी के कारण ही हम अपने आपको वर्गच्यूत कर सर्वहारा वर्ग व एक कम्युनिस्ट के रूप में बदल नहीं पाते हैं। जिसके कारण हमारे अन्दर आंशिक तौर पर पहले से मौजूद निम्नपूंजीवादी व गैर-सर्वहारा रूझान बढ़ जाता है और हमारे विकास के सामने बाधक बन जाता है और हमें अध:पतन की ओर ले जाता है। इसलिए पार्टी और पीएलजीए को राजनीतिक और सैद्धांतिक रूप से मजबूत करने के लिए बोल्शेवीकरण का जो अभियान चलाया जा रहा है उसकी समीक्षा करते हुए लगातार चलाना होगा।

आज क्रांतिकारी आन्दोलन से जो पीछे हट रहे हैं, पार्टी के साथ गद्दारी करके दुश्मन के समक्ष आत्मसमर्पण कर रहे हैं या भीतरघाती कर रहे हैं, उनके अन्दर गैर-सर्वहारा रूझान मौजूद रहता है और उससे ग्रस्त होता है। इसी कारण वे पार्टी, क्रांति और सामूहिक हित को प्रधानता न देकर अपने व्यक्तिगत हित को प्रधानता देते हैं और व्यक्तिगत स्वार्थ, लोभ-लालच, ऐशो-आराम की प्रवृति उनके अन्दर में पनपने लगता है, जिससे वे त्याग, कठिनाई, कष्ट, दुख-तकलीफ झेलने और आत्मत्याग करने से हिचकिचाते हैं। वैसे ही लोग दुश्मन के गुलामी की जिन्दगी स्वीकार कर दुश्मन के समक्ष आत्मसमर्पण कर देते हैं। उनके अन्दर राजनीतिक समझदारी व इज्जत-अधिकार बोध रहेगा, सर्वहारा वर्ग दृष्टिकोण रहेगा साथ ही साथ स्वार्थी नहीं होगा तो वे कभी भी दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण नहीं कर सकते हैं।

हमें पार्टी व क्रांति के साथ गद्दारी करनेवालों, दुश्मन के पास आत्मसमर्पण करने वालों के प्रति घृणा करना चाहिए। ऐसे लोगों का नाम काला खाता में लिखकर रखना चाहिए और जब भी मौका मिले जनअदालत में पेश कर उसका राजनीतिक भण्डाफोड़ किया जाना चाहिए तथा 'जैसा कुत्ता वैसा डण्डा की सजा' दी जानी चाहिए। उसको क्रांतिकारी पांतों के साथ-साथ गांव समाज से भी बहिष्कार कर देना चाहिए।

हमें समझना होगा कि वर्ग दुश्मन का भविष्य अन्धकारमय है, उसका विकास अवरूद्ध है और हमारा भविष्य उज्जवल है, हमारा विकास उर्द्धगामी है। दुश्मन की शक्ति अभी हमसे ज्यादा है, लेकिन सीमित है। हमारी शक्ति अभी दुश्मन से कम है लेकिन असीमित है, दुश्मन की शक्ति घटेगी और हमारी शक्ति बढ़ेगी। अभी आत्मगत रूप से कमजोर होने के कारण दुश्मन हावी है। लेकिन यह स्थिति स्थायी नहीं अस्थायी है। अतएव हमें धैर्य और साहस के साथ दुश्मन के हमले का मुकाबला करते हुए व्यापक जनता को जनयुद्ध में शामिल करना होगा। जनता को हम जितना ही जनयुद्ध में शामिल कर पाएंगे उतना ही दुश्मन के हमले का मुकाबला करने में हम सक्षम होंगे और दुश्मन के बर्बर युद्ध अभियान ऑपरेशन ग्रीन हंट को परास्त कर क्रांतिकारी आन्दोलन को और एक कदम आगे बढ़ाने में अवश्य सक्षम होंगे। बशर्ते कि हम छापामार युद्ध के नियम को सृजनात्मक रूप से लागू करें।

शोषक-शासक वर्ग द्वारा मेहनतकश वर्ग के खिलाफ छेड़े गये बर्बर युद्ध अभियान ऑपरेशन ग्रीन हंट को परास्त करें तथा भाकपा (माओवादी) के नेतृत्व में गांव-गांव, इलाके-इलाके में वैकल्पिक जनसत्ता व जनसरकार के निर्माण हेतु जारी जनयुद्ध को तेज करने का आह्वान

प्रिय मेहनतकश अवाम, यह जग जाहिर है कि आज शोषक-शासक वर्ग माओवादी आन्दोलन को दमन करने के नाम पर अघोषित रूप से ऑपरेशन ग्रीन हंट नामक बर्बर युद्ध अभियान जनता पर थोप दिया है। जिसके तहत न केवल माओवादी क्रांतिकारियों के ऊपर बर्बर हमले चला रहे हैं, बल्कि शोषक-शासक वर्ग के लूट-शोषण के खिलाफ तथा अपनी किसी भी जायज मांगों को लेकर किसान-मजदूर व मेहनतकश जनता आवाज उठाते हैं तो उन्हें भी नहीं बख्शा जा रहा है। माओवादी व आतंकवादी करार देकर उसके ऊपर बर्बर हमले किये जा रहे हैं। न्यूनतम जनवादी अधिकारों को भी बूटों तले रौंदा जा रहा है। एक साजिश के तहत जल-जंगल-जमीन को आदिवासी-मूलवासियों से छीन कर पूंजीपतियों व कॉरपोरेट घरानों को सौंपा जा रहा है। जोर-जबरन कृषि भूमि का अधिग्रहण किया जा रहा है। इसका विरोध करने पर पुलिस की गोली का निशाना बनाया जा रहा है। गोरक्षा के नाम पर अल्पसंख्यकों व दलितों के ऊपर कातिलाना हमले किये जा रहे हैं व हत्याएं की जा रही हैं। राष्ट्रीयसत्ता के आन्दोलनकारियों के ऊपर बर्बर दमन चलाया जा रहा है। इस तरह यह बर्बर दमन अभियान मेहनतकश जनता के ऊपर थोपा गया युद्ध के सिवा और कुछ नहीं हो सकता।

अत: भाकपा (माओवादी) के पूर्वी रीजनल ब्यूरो मजदूर-किसान, छात्र-नौजवानों, मेहनतकश महिलाओं, प्रगतिशील बुद्धिजीवियों सहित तमाम मेहनतकश जनता से आह्वान करता है कि आवें, साम्राज्यवाद-सामंतवाद और दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग के लूट-शोषण से मुक्ति पाने तथा सही इज्जत-आजादी व आर्थिक-राजनीतिक अधिकार हासिल करने हेतु भाकपा (माओवादी) के नेतृत्व में जारी जनयुद्ध या क्रांतिकारी आन्दोलन में कूद पड़ें तथा शोषक-शासक वर्ग द्वारा थोपे गये बर्बर युद्ध अभियान ऑपरेशन ग्रीन हंट के खिलाफ जनयुद्ध को तेज कर उसे परास्त करें तथा ग्रामीण क्षेत्र से शोषक-शासक वर्ग के शोषण सत्ता को उखाड़ फेंक कर जनता की जनसत्ता व जन सरकार के बतौर गांव-गांव, इलाके-इलाके में क्रांतिकारी जन कमिटी का निर्माण करें। आवें, 28 जुलाई से 3 अगस्त 2017 तक मनाये जा रहे पार्टी शहीदी सप्ताह को सफल करने हेतु इस अवसर पर आयोजित जुलूस व आमसभा में व्यापक पैमाने पर शामिल हों।

शहादत दिवस के अवसर पर बीजे सैक द्वारा जारी पर्चा

जंग-ए-मैदान में अपना गरम लहू बहाकर हमारे देश में जारी नवजनवादी क्रांति को तेज करने वाले जन नायक-नायिकाओं को शत्-शत् लाल सलाम!

28 जुलाई से 3 अगस्त 2017 तक मनाये जाने वाले शहादत सप्ताह के मौके पर शहीदों को याद करें,

उनसे प्रेरणा लें व उनके अधूरे सपने को पूरा करने का संकल्प लें!

झारखंड में धार्मिक अल्पसंख्यकों पर हो रहे सत्ता संरक्षित भगवा हमले, गिरिडीह जिला के पारसनाथ में एक आदिवासी डोली मजदूर मोतीलाल बास्के की सीआरपीएफ द्वारा फर्जी मुठभेड़ में की गई हत्या सहित विभिन्न इलाकों में की गई फर्जी मुठभेड़ में हत्या, क्रांतिकारी आंदोलन के इलाके की जनता पर हो रहे पुलिसिया दमन-उत्पीड़न व बिहार-झारखंड के कई गरीब किसानों को दी गई फांसी की सजा के खिलाफ

3 अगस्त के एक दिवसीय बिहार-झारखंड बंद को सफल करें!

साथियों,

हमारे भारत देश में जारी नवजनवादी क्रांति, जिसका लक्ष्य है शोषण-उत्पीड़न से मुक्त समाज की स्थापना, को सफल बनाने के लिए जारी जनयुद्ध में वर्ष 1967 के महान नक्सलबाड़ी विद्रोह से लेकर आज तक हमारी प्रिय मातृभूमि के लगभग पन्द्रह-सोलह हजार वीर बेटे-बेटियों ने शहादतें दी है, जिसमें 21 सितंबर 2004 को एक नई एकीकृत पार्टी के रूप में भाकपा (माओवादी) के आविर्भाव के बाद से आज तक तीन हजार से भी अधिक कामरेडों की शहादतें भी शामिल है। पिछले 28 जुलाई 2016 से आज तक यानी विगत एक वर्ष में भी हमारी पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे के सैकड़ों कामरेडों ने शहादत दिये हैं, जिसमें हमारी पार्टी के वरिष्ठ नेता व पोलित ब्यूरो सदस्य कामरेड नारायण सन्याल (ये 17 अप्रैल 2017 को कैंसर बिमारी से शहीद हो गये) व केन्द्रीय कमेटी सदस्य कामरेड कुप्पु देवराज उर्फ योगेश (इनको 24 नवंबर 2016 को केरल के नीलाम्बुर इलाके में बीमार अवस्था में पकड़ कर हत्यारे पुलिस द्वारा फर्जी मुठभेड़ में मार दिया गया) से लेकर सैक, रीजन, जोनल, सबजोनल, एरिया कमेटी के कैडर, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे के कार्यकर्त्ता शामिल हैं। इसी कड़ी में बीजे सैक अंतर्गत 15-20 कामरेड शासक वर्ग द्वारा जारी बर्बर युद्ध अभियान 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' के खिलाफ लड़ते हुए जंग-ए-मैदान में शहीद हुए हैं, जिसमें बीजे सैक के महत्वपूर्ण सदस्य कामरेड आशीष की 11 सितम्बर 2016 को हुई शहादत भी शामिल है।

शहादतों की उपरोक्त उज्ज्वल मिसालें इस बात को साबित करती है कि हमारी पार्टी की शीर्ष कमेटी के कामरेडों ने भी संकीर्ण निजी स्वार्थ के लिए नहीं बल्कि आम जनता के स्वार्थ में और उनकी मुक्ति के लिए जारी जनयुद्ध के मैदान में अग्रिम पंक्ति में खड़े होकर अपनी जान की कुर्बानी देने में किसी भी तरह की हिचकिचाहट नहीं दिखाई व प्रिय मातृभूमि को निर्मम आर्थिक शोषण व बर्बर राजनीतिक उत्पीड़न से मुक्त करने के महान काम में अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। इन जांबाज जन योद्धाओं व साहसिक जन नेत्रियों को भाकपा (माओवादी) की बिहार-झारखंड स्पेशल एरिया कमेटी नतमस्तक होकर श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

साथियों, केन्द्र की सत्ता संभाले चरम ब्राह्मणवादी हिन्दुत्व फासीवादी भाजपा के नरेन्द्र मोदी सरकार के तीन साल से भी अधिक हो गये हैं। इन तीन सालों में इस सरकार ने देशी-विदेशी पूंजीपतियों के लिये देश की प्रकृतिक सम्पदाओं व आम जनता को लूटने की खुली छूट दे रखी है और दुनिया की जनता का दुश्मन नम्बर वन अमेरिकी साम्राज्यवाद के सामने देश की सम्प्रभुता को गिरवी रख दिया है। इस सरकार ने एक तरफ हमारे देश के मजदूर-किसानों, छात्र-युवाओं, मेहनतकश महिलाओं, उत्पीड़ित राष्ट्रों, उत्पीड़ित सामाजिक जनसमुदायों, धार्मिक अल्पसंख्यकों, दलितों, आदिवासियों आदि के मुलभूत अधिकारों पर हमला बोल दिया है, वहीं दूसरी तरफ अपने मातृ संगठन राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ

(आरएसएस) व उसके लगुवे-भगुवे विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, दुर्गा वाहिनी, गौ रक्षक संघ आदि को गौ रक्षा, जाति-धर्म, खान-पान आदि के नाम पर दलित-आदिवासियों व धार्मिक अल्पसंख्यकों (खासकर मुस्लिमों व इसाइयों) की हत्या करने का लाइसेंस दे दिया गया है। कहा जा सकता है कि आज पूरा देश फासीवाद की कैद में छटपटा रहा है।

केन्द्र सरकार की तर्ज पर ही आदिवासी बहुल राज्य झारखंड में भी आदिवासियों, दलितों व धार्मिक अल्पसंख्यकों (खासकर मुस्लिमों व इसाइयों) पर चरम ब्राह्मणवादी हिन्दुत्व फासीवादी भाजपा की रघुवर दास सरकार ने भी हमला बोल दिया है। एक तरफ, सीएनटी व एसपीटी एक्ट में संशोधन के प्रस्ताव व नई स्थानीयता की नीति के जरिये आदिवासियों की अस्मिता पर ही खुले तौर पर हमला बोल दिया गया है, तो वहीं दूसरी तरफ अपने मातृ संगठन व उसके लगुवे-भगुवे को पूरे राज्य में धार्मिक अल्पसंख्यकों पर हमले की खुली छूट दे दी गई है। जिसका उदाहरण है- लातेहार के एक मुस्लिम पशु व्यापारी की पीट-पीट कर हत्या करना, 27 जून को गिरिडीह जिला के देवरी में उस्मान अंसारी पर गौ हत्या का आरोप लगाकर उसके पूरे परिवार समेत उसकी पिटाई करना व घर जलाना एवं 29 जून को रामगढ़ में अलीमुद्दीन अंसारी को गौ मांस का व्यापार करने के आरोप में पीट-पीटकर हत्या करना आदि। बच्चा चोर का अफवाह फैलाकर भी जमशेदपुर, सरायकेला-खरसांवा व बोकारो जिला में कई लोगों की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। इन सारी घटनाओं में आरएसएस व उसके अनुषांगिक संगठनों की संलिप्तता से स्पष्ट हो गया कि इन हमले के पीछे सरकार का ही हाथ है और हत्यारों को सत्ता का संरक्षण प्राप्त है।

बिहार की महागठबंधन की नीतीश कुमार की सरकार ने भी सामंतों-जमींदारों व पूंजीपतियों के पक्ष में खड़ा होकर गरीब किसानों पर हमला बोल दिया है। जहां एक तरफ, सामंती गुंडा गिरोह रणवीर सेना के द्वारा किये गये दसियों जनसंहारों में मारे गये सैकड़ों दलितों, पिछड़ों व अल्पसंख्यकों के हत्यारों को बिहार के अन्यायी उच्च न्यायालय के जरिये रिहा कर दिया गया, वहीं दूसरी तरफ बारा, सेनारी व मुंगेर जिला में जनाक्रोश का शिकार हुये सामंती गुंडों व जुल्मी पुलिसकर्मियों की हत्या के आरोप में कई गरीब निर्दोष किसानों को फांसी की सजा सुनायी गयी है। झारखंड के हजारीबाग जिला के एक गरीब किसान को भी झूठे आरोप लगाकर फांसी की सजा सुनायी गई है।

साथियों,

वर्त्तमान में मिशन-2017 के नाम पर केन्द्र व राज्य सरकारें प्रतिक्रांतिकारी योजना बनाकर बर्बर युद्ध अभियान 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' के तीसरे चरण के तहत दण्डकारण्य और बिहार-झारखंड के क्रांतिकारी आंदोलन पर हमले तेज कर दिये हैं। काम्बिंग ऑपरेशनों पर निकले हत्यारे व जुल्मी अर्द्ध-सैनिक बलों द्वारा आम जनता के साथ मार-पीट व महिलाओं के साथ छेड़खानी की घटना लगातार बढ़ रही है। बिहार-झारखंड के क्रांतिकारी संघर्ष के प्रत्येक इलाके में नित्य-प्रतिदिन अर्द्ध-सैनिक बलों द्वारा आम जनता के घरों में लूट-पाट करना, घरों को जलाना, घरों को तोड़ना, मुर्गा, मुर्गी, बकरी आदि मारकर खा जाना, युवाओं के साथ मार-पीट करना, फर्जी मुठभेड़ के जरिये ग्रामीणों को गोली मारकर हत्या करना, महिलाओं के साथ बलात्कार करना आदि की घटनाएं लगातार बढ़ती जा रही है। इसी कड़ी में 9 जून 2017 को गिरिडीह जिला के पारसनाथ की तराई में स्थित ढोलकट्टा के पास एक डोली मजदूर मोतीलाल बास्के को पकड़कर सीआरपीएफ कोबरा ने फर्जी मुठभेड़ में गोली मार कर हत्या कर दी, जिसके खिलाफ गिरिडीह में विशाल जनांदोलन जारी है।

उपरोक्त कठिन परिस्थितियों के बीच केन्द्र व राज्य सरकारों की घोर जनविरोधी नीतियों व कार्यवाहियों के खिलाफ आम जनता के सही सवालों पर लड़ते हुए ही हमारी पार्टी 28 जुलाई से 3 अगस्त 2017 तक जनता की सच्ची आजादी के लिए शहीद हुये साथियों की याद में शहादत सप्ताह मना रही है और नवजनवादी क्रांति को और भी तेज करने का संकल्प ले रही है।

आवें, झारखंड में धार्मिक अल्पसंख्यकों पर हो रहे सत्ता संरक्षित भगवा हमले, गिरिडीह जिला के पारसनाथ में एक आदिवासी डोली मजदूर मोतीलाल बास्के की सीआरपीएफ द्वारा फर्जी मुठभेड़ में की गई हत्या सहित विभिन्न इलाकों में की गई फर्जी मुठभेड़ में हत्या, क्रांतिकारी आंदोलन के इलाके की जनता पर हो रहे पुलिसिया दमन-उत्पीड़न व बिहार-झारखंड के कई गरीब किसानों को दी गई फांसी की सजा के खिलाफ 3 अगस्त 2017 के एक दिवसीय बिहार-झारखंड बंद को सफल करें!

आवें, भारत में नवजनवादी क्रांति की राह में शहीद हुये तमाम शहीदों की याद में 28 जुलाई से 3 अगस्त 2017 तक शहादत दिवस के अवसर पर घर-घर, गांव-गांव, इलाके-इलाके में स्मृति सभाओं को आयोजन करें, शहीद वेदी का निर्माण करें व उनके अधूरे सपने को पूरा करने का संकल्प लें।

भाकपा (माओवादी) के संस्थापक नेता का.चारु मजुमदार एवं का. कन्हाई चटर्जी को लाल-लाल सलाम!

कामरेड चारू मजुमदार का लिखा हुआ 8वीं दस्तावेज से

कृषि क्रांति आज इसी वक्त का काम है। इस काम को रोक कर नहीं रखा जा सकता और इसे बिना किये किसानों की कुछ भी भलाई नहीं की जा सकती। लेकिन, कृषि क्रांति के पहले राजसत्ता का ध्वंस किया जाना चाहिए, राज्य यंत्र का ध्वंस किए बिना कृषि क्रांति करने का मतलब सीधा-सीधी संशोधनवाद है। इसलिए राज्य यंत्र का ध्वंस करने का काम आज किसान आंदोलन का पहला तथा मुख्य काम है। सारे देश तथा राज्य के पैमाने पर इस काम को अगर नहीं किया जा सके, तब क्या किसान चुप बैठे रहेंगे? नहीं, मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ सेतुंङ विचारधारा हमें सिखाता है कि अगर किसी इलाके के किसानों को राजनीतिक विचारधारा से प्रेरित किया जाए तो उसी इलाके में राज्य-यंत्र को तोड़ने के काम में आगे बढ़ना होगा। इसे ही किसान का मुक्तांचल कहा जाता है। मुक्तांचल गठन करने का यह संघर्ष ही आज किसान आंदोलन का सबसे जरूरी तथा फौरी काम है। मुक्तांचल हम किसे कहेंगे? जिन किसान इलाकों से हम वर्ग दुश्मनों को उखाड़ फेंक पाएं, उन सभी इलाकों को हम मुक्तांचल कहेंगे। इस मुक्तांचल को बनाने के लिए चाहिए किसानों की सशस्त्र शक्ति। इस सशस्त्र शक्ति में जैसे हम किसानों के हाथों तैयार घरेलू हथियार को लेते हैं, ठीक उसी तरह बंदूक की भी जरूरत है। किसान राजनीति से प्रेरित हुए हैं या नहीं, किसान बंदूक संग्रह करने के लिए आगे बढ़ रहे हैं या नहीं, इस आधार पर इसे हम समझेंगे। किसान बंदूक कहां पाएंगे? वर्ग दुश्मनों के पास बंदूकें हैं और वे गांवों में ही रहते हैं। उनसे बंदूकें छीन लेनी होगी। वे स्वेच्छा से हमें बंदूक नहीं देंगे, इसलिए जबरदस्ती हमें उन बंदूकों पर कब्जा करना होगा। इसके लिए जंगी किसानों को वर्ग दुश्मनों के घरों में आग लगाने से लेकर हर तरह के तरीके सिखाने होंगे। इसके अलावे सरकारी सशस्त्र सेना पर अचानक हमला करने से भी हमें बंदूक मिलेगी। इस बंदूक दखल अभियान को हम जिन इलाकों में संगठित कर पाएंगे, वह इलाका जल्दी ही मुक्तांचल में बदल जाएगा।

1969 से पहले कामरेड कन्हाई चटर्जी का लिखा हुआ कार्यनीति दस्तावेज से

सर्वहारा की पार्टी के नेतृत्व तले देहाती इलाकों में छापामार युद्ध चलाने के लिए बड़ी संख्या में जनता को जागृत और संगठित करना, भूस्वामियों एवं सामंतवाद के एजेण्टों, स्थानीय हथियारबंद गिरोहों, बुरे शरीफजादों आदि पर घातक प्रहार करना, हथियारबंद नियंत्रणों के खिलाफ हथियारबंद प्रतिरोधों को संगठित करना और सामंती शासन को चकना-चूर करने और किसानों को मुक्त कराने के द्वारा विशाल किसान जन-समूहों के क्रांतिकारी हथियारबंद बलों की अंतहीन धारा का निर्माण करना, विशाल किसानों को क्रांतिकारी संघर्षों में भागीदारी और दृढनिश्चयी समर्थकों के तौर पर संगठित करना, शक्तिशाली जनसेना और जन मिलिशिया का निर्माण अथवा व्यापक देहाती इलाकों में भरोसेमंद, मजबूत और आत्मनिर्भर आधार इलाकों को लगातार विस्तार कर धीरे-धीरे शहरी इलाकों को घेरना। इन हालातों में दुश्मन के नियंत्रणवाले शहर विशाल देहाती मुक्त इलाकों के समुंदर में टापुओं की तरह दिखेंगे। और प्रतिक्रियावादियों की राज्यसत्ता को चकनाचूर करने के द्वारा अंतत शहरों पर कब्जा करना और पूरे देश में जनता का राजनीतिक अधिकार अथवा राज्य तंत्र स्थापित करना- यह चीनी क्रांति की कार्यनीति, चीनी क्रांति का पथ था, जैसाकि चेयरमैन माओ ने दिखाया था।

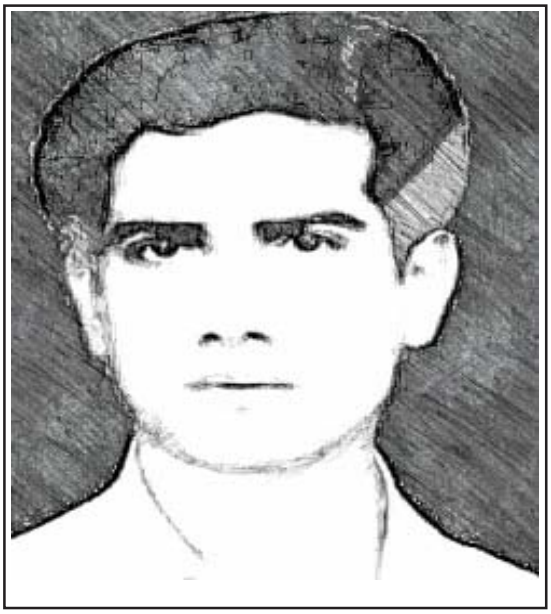

''इस देश में जहां दोषपूर्ण शिक्षा तंत्र व्याप्त है, लाखों नौजवानों का भविष्य अनिश्चित है और वे बेरोजगार रहने के लिए मजबूर हैं। वे एक बड़ी क्रांतिकारी ताकत के प्रतिनिधि हैं। पार्टी को शिक्षित व संगठित करना चाहिए और उनमें से आगे बढ़े हुए तत्वों को किसान से जुड़ने और कृषि क्रांति को आगे बढ़ाने के लिए देहाती इलाकों में भेजना चाहिए।''

बिहार-झारखंड के वीर शहीदों को लाल सलाम!

हमारी पार्टी के वरिष्ठ नेता व
पोलित ब्यूरो सदस्य तथा अमर शहीद कामरेड नारायण सन्याल (82)
17 अप्रैल, 2017

अमर शहीद कामरेड रघुनाथ महतो (93)
26 नवम्बर, 2016

अमर शहीद कामरेड आशिष (35)
11 सितम्बर, 2016

बिहार-झारखंड के वीर शहीदों को लाल सलाम!

⇨ अमर शहीद कामरेड सिलवेस्टर उर्फ शिवनंदन भगत (61)
25-07-2015

अमर शहीद कामरेड सुपाई टुडु (27)
3 जनवरी, 2017 ⇦

बी-जे सैक की शहीद सूची - जुलाई 2016 से जुलाई 2017 तक

क्रमांक	शहीद कामरेडों का नाम	लिंग	उम्र	ग्राम	थाना	जिला	राज्य	पार्टी उम्र	पद	वर्ग	शिक्षा	घटना तिथि	घटना स्थल	घटना का विवरण
1	कामरेड प्रिन्स	पु	27						सीसी-1 कम्पनी का पीएल कमांडर, जेडसीएम स्तर			18-जुलाई, 2016	सोनदाहा जंगल बिहार डुमरी नाला	एम्बुश में दुश्मन का हथियार जब्त करते समय
2	कामरेड सुदय	पु	38						बीआरसी के मध्य जोनल कमेटी के अंतर्गत जेडसीएम			18-जुलाई, 2016	सोनदाहा जंगल बिहार डुमरी नाला	''
3	कामरेड विपिन किसान	पु	20	इचवाटांड़	पेशरार	लोहरदगा	झारखण्ड	5 साल	एसीएम		7वीं क्लास	18-जुलाई, 2016	सोनदाहा जंगल बिहार डुमरी नाला	''
4	कॉमरेड विजेंद्र यादव उर्फ आशीष दा	पु	35	माली बिगहा	मखदूमपूर	जहानाबाद	बिहार	1991 से पुराना पीयू के संपर्क में	बीजे सैक सदस्य	गरीब किसान	इलेक्ट्रोनिक	11 सितंबर, 2016	बिहार के गुमला जिले के पालकोट क्षेत्र में	कोबरा कमांडो बलों द्वारा पकड़ कर की गयी हत्या
5	कामरेड रघुनाथ महतो	पु	96	नेरकोपी	तोपचांची	धनबाद	झारखण्ड	46 साल	राज्य कमेटी सदस्यता प्राप्त	निम्न मध्यम किसान परिवार	मैट्रिक पास	26-10-2016	अपना ही गांव में	उमर होने के कारण शहीद
6	का. श्याम लाल	पु	63	दो-मुण्डा	टुण्डी	धनबाद	झारखण्ड	1970 से परिचय	रीजनल कमेटी सदसय	गरीब किसान	मैट्रिक पास	3 अगस्त, 2016	संथाल परगना	बिमारी के कारण

7	कामरेड त्यागी	पु	48	नवीगढ़	कोठी	गया	बिहार	9 साल	सब जोनल कमेटी सदस्य	गरीब किसान		9 अक्टूबर, 201व	सागरपुरअमझर जंगल	पुलिस द्वारा हत्या
8	कामरेड शैलेश उर्फ दीपक	पु	32	सरदमदाग	मनिका	लातेहार	झारखण्ड	7 साल	जोनल कमेटी सदस्य	गरीब किसान	6ठीं क्लास	23 नवम्बर, 2016	करमडीह गांव कोयल नदी पार करते समय	पुलिस द्वारा घात लगाकर किया गया हमला में शहीद
9	का. नागेन्द्र यादव	पु	19	बेलंगा	चंदवा	लातेहार	झारखण्ड	5 साल	सब्ब-जेडसीएम	गरीब किसान	6ठीं क्लास	23 नवम्बर, 2016	,,	,,
10	कामरेड हर्षू उर्फ हर्षनाथ	पु	18		चंदवा	लातेहार	झारखण्ड	6 साल	एसी सदस्य	गरीब किसान	साक्षर	,,	,,	,,
11	कामरेड सुकरा खड़िया	पु	35	गोइलकेरा	भरनो	गुमला	झारखण्ड	3 साल	एसी सदस्य	गरीब किसान	साक्षर	,,	,,	,,
12	का. मनोज महतो	पू	23	पकनी	चैनपूर	गुमला	झारखण्ड	6 साल	पीएलजीए सदस्य	गरीब किसान	साक्षर	,,	,,	,,
13	कामरेड अनुप्रिया	म	16	कुमाड़ी	बिशुनपुर	गुमला	झारखण्ड	4 साल	सेल सदस्य	गरीब किसान	5वीं क्लास			
14	कामरेड मनोज उरांव	पु	22	केरार	पेशरार बगडूद्ध	लातेहार	झारखण्ड	4 साल	एरिया कमेटी सदस्य	गरीब किसान	7वीं क्लास	,,	,,	,,
15	का. अनिल	पु					बिहार		जेडसीएम			8 मार्च, 2017	मगध जोन गया/औरंगाबाद	कोवर्ट द्वारा की गई हत्या
16	का. वर्मा	पु					,,		जेडसीएम			,,	,,	,,
17	का. नेपाली	पु					,,		सब जेडसीएम			,,	,,	,,
18	का. तुफान	पु					,,		दस्ता सदस्य			,,	,,	,,
19	कामरेड अजय	पु					बिहार		सब जोनल कमेटी सदस्य			23 मार्च, 2017	पलामु, जपला	,,
20	कामरेड सुरेंद्र	पु					,,		पीएल सदस्य			,,	,,	,,

21	कामरेड धीरेंद्र	पु							पीएल सदस्य			"	"	
22	का. सबेयान बुड़	पु	37	सिमको	गोइलकेरा	प. सिंहभूम	झारखण्ड	8 साल	केकेसी सदस्य	गरीब किसान	10वीं क्लास	9 मार्च, 2017	गांव में	पीएलएफआई द्वारा हत्या
23	का. याकूब मुण्डा	पु	75	टोटा	बन्दगांव	"	झारखण्ड	"	समर्थक	"	"	14 नवम्बर, 2016	"	"
24	का. सुशील बुड़	पु	66	जिलिंगगुटु	गोइलकेरा	"	"	8 साल	केकेसी सदस्य	"	10 वीं	5 नवम्बर, 2016	"	"
पश्चिम बंग की शहीद सूची - 2017														
25	कामरेड सुपाई टुडु	पु	27	कोनालुका	डुमरिया	पूर्वी सिंहभूम	पश्चिम बंग	10 साल	जोनल कमेटी सदस्य	गरीब किसान		03 जनवरी, 2017	पूर्वी सिंहभूम के गुड़ाबंदा थानांतर्गत भालकी पंचायतके नामोलेपो गांव से सटे पुटुर जंगल में	फर्जी मुठभेड़
26	कामरेड हिमाद्री सेन राय उर्फ सोमेन दा	पु	62 वर्ष				प.बंग	लगभग 48 साल	पूर्व राज्य कमेटी सचिव	पेटी बुर्जुवा		3 अगस्त, 2016	पश्चिम बंग के अस्पताल में शहीद	दिल का दौरा पड़ने से शहीद.

SACM	....	2
RCM	....	1
ZCM	....	5
Sub ZCM	....	4
ACM	....	5
PLM	....	3

LGS	....	2
KKC	....	2
समर्थक	....	1
राज्य कमेटी सदस्यता प्राप्त	....	1
कुल संख्या	....	26

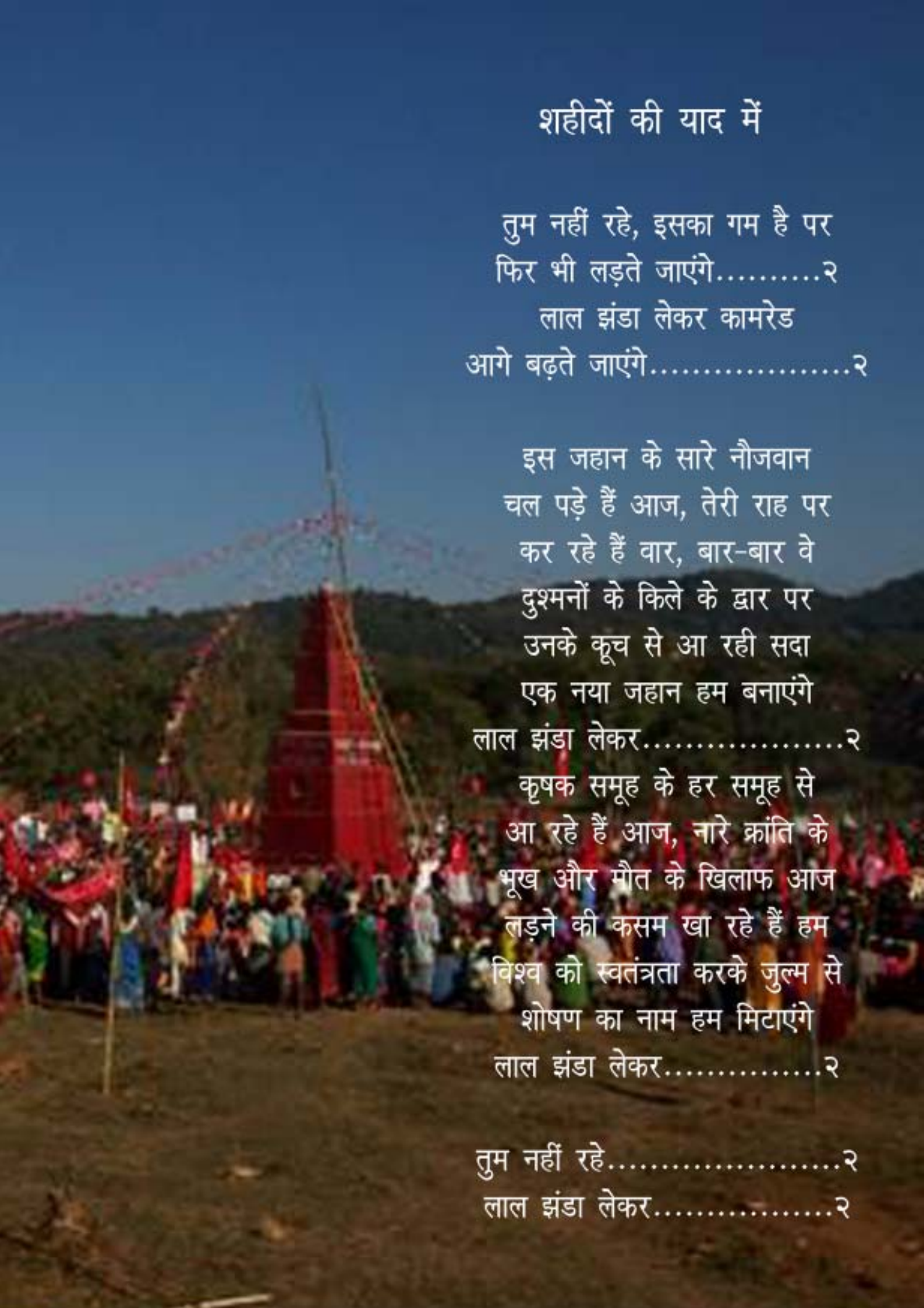

शहीदों की याद में

तुम नहीं रहे, इसका गम है पर
फिर भी लड़ते जाएंगे.....२
लाल झंडा लेकर कामरेड
आगे बढ़ते जाएंगे.....२

इस जहान के सारे नौजवान
चल पड़े हैं आज, तेरी राह पर
कर रहे हैं वार, बार-बार वे
दुश्मनों के किले के द्वार पर
उनके कूच से आ रही सदा
एक नया जहान हम बनाएंगे
लाल झंडा लेकर.....२
कृषक समूह के हर समूह से
आ रहे हैं आज, नारे क्रांति के
भूख और मौत के खिलाफ आज
लड़ने की कसम खा रहे हैं हम
विश्व को स्वतंत्रता करके जुल्म से
शोषण का नाम हम मिटाएंगे
लाल झंडा लेकर.....२

तुम नहीं रहे.....२
लाल झंडा लेकर.....२